ANANTA SATSANG - BILINGUAL RAM BHAKTI LIBRARY

The Hanumat Samhita
श्री हनुमत्संहिता

Hanuman's revelation of the secret sweetness, play, and devotional relationships of Sita and Rama

Sri Sitarama-rahasya-prakashika commentary by Swami Janakisharan Ji Maharaj "Madhukar"

Charushila Mandir, Janaki Ghat, Ayodhya - Complete facsimile and English reading edition

About this edition

> This edition preserves all 116 scans of the first edition. Every original leaf is followed by a fresh English translation, including the Sanskrit root verses, Hindi explanation, inserted title and portrait leaves, chapter colophons, supplementary hymns, and closing material. The facsimile remains authoritative; OCR was used only as a translation aid.

Source: the Internet Archive scan of the 1999 Charushila Mandir edition, Ayodhya.

Contents

1-10	Front Matter
11-21	Chapter One: The Secret Festival of Love
22-32	Chapter Two: The Kadamba and Ashoka Groves
33-44	Chapter Three: The Jeweled Bank of the Sarayu
45-59	Chapter Four: The Forest Awakens to Rasa
60-86	Chapter Five: The Water Festival in the Sarayu
87-110	Chapter Six: Sacred Relationship and the Five Truths
111-116	Supplementary Hymns and Closing Material

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✱ श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ✱ श्री हनुमते नमः

अथ श्री हनुमत्संहिता

श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका

टीकाकार:—

रसराजैकनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस
श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द
मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण
जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,
श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३
फोन नं०—३२७५४, (०५२७८)

Original source - Scan 1 of 116

Front Cover

Homage to Sri Sita-Ramachandra. Homage to Sri Ramananda. Homage to the all-sovereign Charushila. Homage to Sri Hanuman.

Śrī Hanumat Saṃhitā

With the commentary *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā* - “The Illuminator of the Mystery of Sita and Rama”

The cover depicts Hanuman seated in meditation, holding cymbals, with Sita and Rama revealed within his heart.

Commentator: Sri Swami Janakisharan Ji Maharaj “Madhukar,” Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya.

✻ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✻ श्रीमते रामानन्दाय नमः ✻
✻ श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ✻ श्री हनुमते नमः ✻

अथ श्री हनुमत्संहिता

श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका

टीकाकारः—

श्रीसीताराम रहस्य समुद्रपोतायमान श्री रसराजाम्बुज दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,

श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३

फोन नं०—३२७५४, (०५२७८)

सहयोगकर्ता—

डा० श्रीपुरुषोत्तम दूबे उर्फ श्री पुरुषोत्तम शरणजी
ग्राम-विष्णुपुरा, पो०-परमेश्वरपुर, जि० गोरखपुर, उ०प्र० (भारत)

संशोधकः—

श्रीअवधधाम वासी, दासानुदास— बासुदेव दास
श्री चारुशीला मन्दिर, श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी

(सम्वत २०५५, माघ शुक्ल ५, बसन्त पञ्चमी)

प्रथम संस्करण–१०००] सन् १९९८ ई० [मूल्यः– ३१) मात्र

Title and Publication Page

Homage to Sri Sita-Ramachandra. Homage to Sri Ramananda. Homage to the all-sovereign Charushila. Homage to Sri Hanuman.

Śrī Hanumat Saṃhitā

With the commentary ***Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā***.

Commentator

Sri Swami Janakisharan Ji Maharaj "Madhukar," delighting in the nectar of the lotus feet of Sri Swami Siyasharan Ji Maharaj "Madhukar"-foremost acharya, adorned with endless honors, sun to the lotus of *rasa*, a vessel for crossing the ocean of the mysteries of Sita and Rama, and ornament of the lineage of Swami Agradas Acharya.

Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya.

Collaborator

Dr Sri Purushottam Dubey, also known as Sri Purushottam Sharan Ji, Vishnupura, Post Parmeshwarpur, District Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.

Editor

The servant of servants Vasudev Das, resident of sacred Avadh; Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya.

Vikrama year 2055, bright fifth of Magha, Vasanta Panchami. First printing: 1,000 copies. Price: 31 rupees.

भूमिका

लोक प्राणानिलप्राणं, सर्वसाधक साधकम् ।
प्रणमामि हनुमन्तं, साधुवाधक बाधकम् ॥

समस्त लोकों के प्राणभूत श्री वायुदेव के प्रियप्राण समान पुत्र, सर्व साधकों के सिद्ध फल देने वाले, और श्रीराम भक्तों के बाधक जो खल उनके बाधक ऐसे श्री हनुमन्तलाल जू को मैं प्रणाम करता हूँ ।

प्रस्तुत "श्रीहनुमत्संहिता" प्राचीन सद्ग्रन्थ है । श्रो रसराजैकनिष्ठ श्री सीतारामोपासकों का प्राणाधिक प्रिय है । श्री सीताराम जू के सभी रसों के रसिक श्री हनुमन्तलाल जू एवं ऋषिवर अगस्तजी का सम्बाद है। अध्याय १ से ५ तक सरयू किनारे अनेक बनों में अनेक रासों का वर्णन है तथा अध्याय ६ में अर्थ पञ्चक एवं पञ्चरसों का वर्णन है। श्री हनुमत्-संहिता के प्राचीनता का इति नहीं है । परन्तु श्री अयोध्यावासि सन्तों के बाणी द्वारा प्राचीनता है ।

रसराजैकनिष्ठ श्री दीनबन्धु श्री रामप्रसाद दासजी महाराज जिनके द्वारा विन्दी तिलक देश-विदेश में फैला है । सो अपने शिक्षा धर्म पत्री में भी "श्री हनुमत्संहिता" का नाम दिये हैं जो कि वि० सम्बत् १९८७ में प्रकाशित **है**—

हनुमत्संहिता चैव तथा शिव संहिता ।
अगस्त संहिता चैव ग्रन्थ इष्ट विशेषतः ॥ ९६ ॥

श्री युगलानन्य शरणजी महाराज जो कि श्री लक्ष्मणकिला के संस्थापक हुए उन्होंने "युगल विनोद विलास" नामक ग्रन्थ श्रीहनुमत्संहिता का ही रूपान्तर किये जो कि दोहा चौपाई में राग सहित गान योग्य है । श्री युगलानन्य शरणजी महाराज द्वारा रचित इस्ककान्ती में कवित्त है—

Preface

> *Loka-prāṇānila-prāṇaṃ sarva-sādhaka-sādhakam,*
> *Praṇamāmi Hanumantaṃ sādhu-bādhaka-bādhakam.*

I bow to Hanuman, the beloved son who is as dear as life itself to Vayu, the life-breath of all worlds; who grants accomplishment to every practitioner; and who obstructs those wicked persons who obstruct the devotees of Rama.

The present *Śrī Hanumat Saṃhitā* is an ancient sacred work. It is dearer than life to worshippers of Sita and Rama who are exclusively devoted to the King of *rasa*. It is a dialogue between the sage Agastya and Sri Hanuman, connoisseur of every *rasa* of Sita and Rama. Chapters One through Five describe many *rāsas* in the numerous forests along the Sarayu. Chapter Six explains the five truths (*artha-pañcaka*) and the five devotional *rasas*.

There is no known limit from which the antiquity of the *Hanumat Saṃhitā* may be dated. Its antiquity is nevertheless attested by the oral testimony of the saints of Ayodhya.

Sri Ramprasad Das Ji Maharaj, exclusively devoted to the King of *rasa* and friend of the poor, spread the *bindī-tilaka* throughout India and abroad. In his instructional religious register, published since Vikrama year 1987, he names the *Śrī Hanumat Saṃhitā*:

> *Hanumat Saṃhitā caiva tathā Śiva Saṃhitā,*
> *Agastya Saṃhitā caiva granthā iṣṭa-viśeṣataḥ.* (66)

"The *Hanumat Saṃhitā*, the *Śiva Saṃhitā*, and the *Agastya Saṃhitā* are texts especially dear to the chosen Lord."

Sri Yugalananya Sharan Ji Maharaj, founder of Lakshman Kila, adapted the *Hanumat Saṃhitā* as a work titled *Yugala-vinoda-vilāsa*, written in *dohā* and *caupāī* metres, supplied with melodies, and meant to be sung. In that work he wrote:

भटकत भरम भवन में अटकत लटकत मन मति काची ।
फटकत तुष फोटक विद्या विनु अटपट वदत अवाची ।।
खटपट करत सरस सज्जन से विषय विजय शिर नाचो ।
युगलानन्य सार सर्वोपरि रसिक सम्प्रदा सांची ।।
श्री सीता स्वामिनी सम्प्रदा विदित बेद विद जाने ।
महाशम्भु हनुमन्त रसिक शिरताज अगस्त बखाने ।।
तिनके पद प्रसाद से मुनिवर मन्त्र महारस छाने ।
युगलानन्य शरण कलि कायर वकत आन की ताने ।।

"अर्थ पञ्चक" श्री हनुमत्संहिता के अन्तर्गत से ही व्याख्याकार श्री पं० रामवल्लभा शरणी महाराज द्वारा व्याख्या कार करके श्रीमणिराम दासजी महाराज की छावनी के महन्त जी ने श्री बैष्णव समाज में अर्थ पञ्चक की जानकारी केलिये छपवाकर बाँटे हैं। अतः यह "श्रीहनुमत्संहिता" प्राचीन ग्रन्थ है ।

वायु के विना देव, दक्ष, गन्धर्व, नर यानी प्राणि मात्र की क्या स्थिति होती है । उसी तरह से वायु के प्राण समान प्रिय पुत्र श्री हनुमन्त लाल जू को उपासना, कृपा के बिना सभी साधना प्राण हीन समझना चाहिए । चाहे वह साधना महान् ऐश्वर्य एवं अष्ट सिद्ध नव निधियों को देने वाला क्यों न हो ? इस लिये सनातन श्री वैष्णव धर्म के संरक्षक रूप में चार सम्प्रदाय (श्री, ब्रह्म, रुद्र, सनकादि) सजग प्रहरी है । चारों सम्प्रदायानुरागी, सनातन धर्मावलम्बी सरस हृदय ने श्री हनुमन्त लाल जू को सहर्ष पूर्वक किसी न किसी रूप में मान एवं पूज्यकर अपनी मनोकामना की पूर्ति की है । वैदक के अनुसार शरीर स्वास्थ के लिये पञ्च प्राण (पांच वायु) की परमावश्यकता है । पञ्च प्राणों में विकृति आते ही शरीर अस्वस्थ हो जाता है । विकृति चरमोत्कृष्ट सीमा पर पहुँचते ही शरीर नाश हो जाता है ।

Preface - The Authentic Rasika Tradition

> Wandering in the house of delusion, the mind and understanding hang entangled;
> Without the teaching that breaks the gate of austerity, one speaks awkward and incoherent words.
> Quarrelling with tender-hearted saints, one makes conquest of sense-objects dance upon one's head;
> Yugalananya says: above all stands the true tradition of the rasikas.
> The tradition of Lady Sita, the sovereign mistress, is known to those who know the Veda;
> Great Shambhu, Hanuman-the crown of rasikas-and Agastya have proclaimed it.
> By the grace of their feet, the great sage churned the mantra's supreme nectar;
> Yugalananya Sharan says: the coward in the dark age strains to speak of something else.

The ***Artha-pañcaka***, drawn from within the *Śrī Hanumat Saṃhitā*, was explained by the commentator Pandit Ramavallabha Sharan Ji Maharaj. The Mahant of the monastery of Sri Maniram Das Ji Maharaj had it printed and distributed among the Vaishnava community to make the five truths known. The *Śrī Hanumat Saṃhitā* is therefore an ancient work.

Without air, how could gods, Dakshas, Gandharvas, human beings, or indeed any living creature remain alive? In the same way, every spiritual discipline should be regarded as lifeless without worship of and grace from Sri Hanuman, the son dear to Vayu as Vayu's own life-even if that discipline could bestow immense sovereignty, the eight powers, and the nine treasures.

For this reason the four traditions-the Sri, Brahma, Rudra, and Sanakadi lineages-stand as vigilant guardians of eternal Vaishnava dharma. Tender-hearted followers of all four traditions, and all who adhere to Sanatana Dharma, gladly honor and worship Sri Hanuman in one form or another and thereby fulfil their heart's desire.

According to the Vedic teaching, the five vital airs are indispensable for bodily health. When the five *prāṇas* become disordered, the body becomes ill; when the disorder reaches its extreme, the body perishes.

श्रीरामचरित मानस विश्व में श्रद्धा एवं विश्वास का पात्र है। श्रीरामचरित मानस में जिस आदर्श की सृष्टि की गई है। उस सृष्टि रूप शरीर में पञ्चप्राण रूप मुख्य पाँच पात्र हैं—

१-श्रीसीतारामजी, २-श्रीलक्ष्मणजी, ३-श्रोभरतजी, ४-श्रीसुग्रीवजी, ५-समस्त बानरगण, इन सभी पञ्चप्राण रूप पात्रों की प्राण रक्षक, संकट निवारक श्रीहनुमन्त लालजी ही हैं। श्री हनुमन्त लालजी का गुणानुवाद जन्म जन्मान्तर में त्रैलोक के गायक सम्पूर्ण नहीं गा सकते हैं।

१—श्रीसीतारामजी—ये दोनों तत्त्वतः एक हैं। लीला भूमि में दो है। अतः जब श्रीराम विरहाग्नि से संतप्त होकर श्री जानकी जी लङ्का में अशोक वृक्ष से अग्नि की याचना कर रही हैं। उसी समय श्री हनुमन्त लाल जू श्रीराम नामांकित मुद्रिका देकर तथा प्रभु का सन्देश सुना कर विरहाग्नि को शान्त कर दिये।

प्रभु सन्देश सुनत वैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही॥
बूड़त विरह जलधि हनुमाना। भयउ तात मो कँह जल जाना॥

उसी तरह श्री जानकी जी के बियोगाग्नि से ब्याकुल श्री राम जी को जब हनुमान जी लङ्का से आकर सन्देश सुनाये तो प्रभु श्री हनुमानजी ऋणिया बन गये।

प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं॥

२—श्रीलक्ष्मण—लङ्का में शक्ति लगने पर शीघ्रता पूर्वक संजीवनी लाकर प्राण की रक्षा किये। "लाये संजिवनि लखन जियाये।" पाताल में अहिरावन के द्वारा दोनों भाई को देवी पूजन कर बलि देने की तैयारी में ही श्रीहनुमान जी ने देवी सहित अहिरावन को प्रास्त कर दोनों भाई की रक्षा किये।

Original source - Scan 5 of 116

Preface - Hanuman, Guardian of the Five Vessels

The *Rāmacaritamānasa* is a vessel of faith and trust for the world. In the ideal creation envisioned in the *Mānasa*, five principal vessels embody the five vital breaths:

1. Sri Sita and Rama
2. Sri Lakshmana
3. Sri Bharata
4. Sri Shatrughna
5. All the hosts of monkeys

Sri Hanuman alone is the guardian who preserves the life of all these vessels and delivers them from danger. The singers of all three worlds could not finish praising him even through birth after birth.

1. Sri Sita and Rama

In reality the two are one, though upon the field of divine play they appear as two. When Rama burned in the fire of separation after Janaki had been taken to Lanka and was preparing to cast himself into the fire beneath an ashoka tree, Hanuman placed Rama's signet ring before her, conveyed the Lord's message, and quieted the fire of separation.

> "Hearing the Lord's message, Vaidehi became absorbed in love; body and mind forgot the distress of separation.
> Tell me, Hanuman-how can a man stranded in an ocean save himself?"

In the same way, when Rama was distraught in the fire of separation from Janaki, Hanuman returned from Lanka and delivered her message. The Lord became indebted to him:

> "What return can I make for what you have done? My mind cannot even face you.
> Son, I have reflected deeply: I can never repay my debt to you."

2. Sri Lakshmana

When Lakshmana was struck down in Lanka, Hanuman brought the life-restoring herb and protected his life. When Ahiravana, in the underworld, was preparing to sacrifice both brothers to the goddess, Hanuman overcame Ahiravana and rescued them.

३—श्रीभरतजी—चौदह वर्षों की अवधि के समाप्ति पर श्रीराम विरह रूप समुद्र में डूबने वाले ही थे कि श्रीं हनुमन्त लाल जू जहाज रूप बनकर आ गये ।

राम विरह सागर मँह, भरत मगन मन होत ।
विप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत ॥

सुनत बचन बिसरे सब दूखा । तृषावन्त जिमि पाइ पियूषा ।।

४—श्रीसुग्रीवजी—बालि भय से भयातुर श्रीसुग्रीवजी को श्रीहनुमन्त जू ने श्रीरामजी से मिलाकर भय रहित एवं किष्किन्धा का राजा बना दिये । श्रीसुग्रीवजी का समस्त कार्य श्रीहनुमन्तलाल जू ने किया ।

५—समस्त बानर गणः—श्रीसीता खोज के समय जब-जब बानरों पर संकट आया तो श्री हनुमन्त लाल जू निवारण किये । श्री हनुमन्तलाल जू को छोड़कर सभी बानर भूख और प्यास से मरना ही चाहते थे कि श्री हनुमन्त लाल जू पहाड़ पर चढ़ कर चारो तरफ देखा तो एक बिवर दिखाई दिया, जिसमें जल खग निकलते प्रवेश करते दिखाई दिये । अँधेरे गुफा में श्री हनुमन्त लाल आगे चले और स्वयं प्रभा की आज्ञा से फल खाये एवं जल पीकर प्रसन्न हुए । समुद्र के किनारे मरणासन स्थिति में सभी बानरों की श्रीसीताजी की खोज, शुभ सन्देश लाकर सभी बानरों की रक्षा की है—

नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ।।

अत: श्रीसीतारामोपासना के प्राणों के प्राण श्रीहनुमन्तलालजी हैं ।

सनातन धर्मावलम्बी सज्जन गण जरा अन्तर्मुख होकर सोचें, क्या ऐसा कोई योग, यज्ञ, तप, ब्रत, ज्ञान, ध्यान एवं साधना है ? जिसका फल भारत ऐसे पवित्रतम भूमि में मानव शरीर प्राप्त हो जाय ऐसा कोई नहीं है, इसमें केवल एक मात्र भगवान् श्री सीताराम जू की अहैतुकी कृपा ही कारण है । ऐसे कृपा का अवहेलना करके उनके साथ अनादि, शाश्वत, सनातन सम्बन्ध (नाता) को भूलकर मायिक, नाशवान् से दृढ़ सम्बन्ध

Preface - Hanuman Saves Bharata, Sugriva, and the Monkey Host

3. Sri Bharata

As the fourteen-year period drew to its close, Bharata was on the verge of drowning in the ocean of separation from Rama when Hanuman came in the guise of a brahmin, like a ship arriving to save him:

> Bharata's mind was sinking, submerged in the ocean of separation from Rama;
> Then the Wind-god's son came in a brahmin's form, as though a ship had arrived.
>
> Hearing his words, Bharata forgot every sorrow,
> As a thirsty man revives upon obtaining nectar.

4. Sri Sugriva

Sugriva was terrified of Vali. Hanuman brought him to Rama, freed him from fear, and made him king of Kishkindha. Hanuman accomplished all Sugriva's work.

5. All the monkey hosts

Whenever danger arose during the search for Sita, Hanuman removed it. The monkeys were about to die of hunger and thirst. Hanuman climbed a mountain, looked in every direction, and saw a cave from which water-birds were flying in and out. He led the way into the dark cavern. With Svayamprabha's permission, they ate fruit, drank water, and were refreshed.

Later, at the seashore, all the monkeys had resolved to die. Hanuman alone protected them by finding Sita and returning with the auspicious news:

> "Hanuman accomplished the Lord's work and preserved the lives of all the monkeys."

Thus Hanuman is the life of the very life of Sita-Rama worship.

Followers of Sanatana Dharma should turn inward and reflect: is there any yoga, sacrifice, austerity, vow, knowledge, meditation, or spiritual discipline whose result could equal the simple blessing of receiving a human body in this most sacred land of Bharata? Only the causeless grace of Sita and Rama makes such a birth possible. Yet one forgets this bond of eternal dependence, joins oneself to illusory relations, and conducts worldly affairs. Such conduct does not free one from deeds of merit and sin. To say that liberation and realization of Bhagavan will occur only after the body falls is empty, incoherent speech.

(नाता) जोड़कर पशुवत व्यवहार कर रहे हैं। यह संसार पाप – पुण्य सत्यासत्य के कर्म व्यवहारों से छूटता नहीं है। शरीर छूटने के बाद मोक्ष हो जायेगा, भगवत् प्राप्ति हो जायेगी, यह कहना, सुनना अनर्गल प्रलाप सदृश्य है। सद्ग्रन्थ एवं भगवत् कृपा पात्रों के सत्संग से शरीर रहते हुए चारों फल (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) प्राप्त हो जाना ही कल्याणकारण है। म० १–२।

सुनि समुझहिं जन मुदित मन, मज्जहि अति अनुराग।
लहहि चारि फल अछत तन, साधु समाज प्रयाग॥

भगवान् तथा भगवत कृपा पात्रों का जन्म–कर्म सब दिव्य होता है। भगवत कृपा पात्रों के कृपा के आधार बनाकर भगवत् शरणागति के बिना जीव सचेत नहीं होता है। जब–तक सचेत नहीं होता। तब तक दैवों की माया लगती है। जीव संसार में भ्रमण करता है। जिस छण में भगवान् एवं भक्तों में सम्बन्धानुसार दृढ़ प्रति उत्पन्न हो जाय उसी क्षण से संसार दुःख (दैवों की माया) से छूट जायेगा।

भरत जनक मुनि जन सचिव, साधु सचेत विहाय।
लागि देव माया सबहिं, जथा योग जनु पाय॥ (आ०२–३०२)

* प्रतिपाद–विषय *

पञ्च रसाचार्य श्री हनुमन्त लाल जू महाराज की बाणी उनकी कृपा से रसानुगागियों को रसानुसार ही दृष्टिगोचर होता है। किसी भी सद्ग्रन्थों में चार बातों पर ध्यान एवं विचार किया जाता है—

१—विषय, २—सम्बन्ध, ३—प्रयोजन, ४—अधिकारी।

१-विषय—भगवान् श्रीसीताराम जू का नाम, रूप, लीला, धाम, ये चारो सच्चिदानन्द एवं प्रकृति से परे हैं। अर्थात् इन्द्रियों का विषय नहीं है। यह तो प्रेमियों, अनुरागियों के प्रेमाञ्जन से अंजित नेत्रों द्वारा देखा जाता है। नाम, रूप, लीला, धाम के प्रकाश से अनन्त ब्रह्माण्डों के सभी

Preface - The Work's Subject Matter

Through sacred books and the company of those who have received Bhagavan's grace, the four fruits-*artha*, *dharma*, *kāma*, and *mokṣa*-may be attained while still embodied. That alone is the cause of blessedness, as the *Mānasa* teaches:

> Hearing and understanding, people bathe with delighted minds and deep love;
> In the Prayaga of the saints' assembly, they obtain the four fruits while still embodied.

The births and deeds of Bhagavan and of those who have received his grace are all divine. Unless the soul becomes alert through surrender to Bhagavan founded upon the grace of those recipients, it remains under divine illusion and wanders through the world. The very instant a right relationship arises with Bhagavan and his devotees, the soul is released from worldly sorrow-from the gods' *māyā*:

> Except for Bharata, Janaka, the sages, ministers, and discerning saints,
> Divine illusion seizes everyone according to the condition it finds.

The Four Matters Taught

By the grace of Sri Hanuman, acharya of the five *rasas*, his words become visible to followers of the path of *rasa* according to their own devotional sentiment. Four matters are considered in every sacred work:

1. Subject
2. Relationship
3. Purpose
4. Qualified recipient

1. Subject

The name, form, play, and abode of Bhagavan Sita-Rama are consciousness and bliss, beyond material nature. They are not objects grasped by the senses; they are seen through eyes anointed with the collyrium of the love of lovers and devoted souls.

नाम, रूप, लीला, धाम प्रकाशित है। उन सबों के प्रकाश श्रीसीताराम जू हीं हैं, जो हेय गुणों से रहित एवं कल्याण गुणों के खानि, सगुन-निर्गुन के प्रेरक, जड़-चेतन सबको रमाने वाले, उभयविभूति नायक, वात्सल्य, स्वामित्व, शौशील्य, सौलभ्य, दया, कृपा, करुणा माधुर्यादि अनन्त गुणों से युक्त हैं। अनन्त रसों के रस, अनन्त सूर्यों के सूर्य हैं।

२-सम्बन्ध—अनन्त ब्रह्माण्डों के अनन्त जीवों का अनन्त अनादि, शाश्वत, सनातन, सम्वन्ध श्री सीताराम जू से है। इस ग्रन्थ में प्रधानता भोग्य-भोक्ता (पत्नी-पति) का सम्बन्ध है। भगवान् कृपा कर जिसको अपने कृपादृष्टि रूप सद्गुरु, सन्त द्वारा जिस सम्बम्धानुसार अपनाते हैं उसके लिये वही आनन्द समुद्र में बुड़ाने वाला होता है।

३-प्रयोजन—प्रतिकूल कृपा रूपी समुद्र से निकाल कर अनुकूल कृपा रूपी समुद्र में बुड़ा देना है। परमात्मा सच्चिदानन्द हैं। प्रतिकूल कृपा असत्, जड़-दुःख ये ही संसार है।

४-अधिकारी—जिस प्राणी को अपनी अनुकूल कृपा डोरि में बाँध चुके हैं, और जीव उसे समझने की इच्छा करता है, इसके लिये सद्सम्प्रदायनिष्ठ सन्तों को गुरु रूप स्वीकार कर भगवत् शरणागति करने वाला ही इसका अधिकारी है। रसराजैकनिष्ठ ही (नारी भाव वाले) परम अधिकारी हैं। जैसा कि—

"नारीभाव समायुक्तास्तेषां दृश्यं भवेद् ध्रुवम्।"

(हं० सं० अ० २ श्लोक ४३)

Original source - Scan 8 of 116

Preface - Subject, Relationship, Purpose, and Qualification

Name, form, play, and abode all shine forth from Sita and Rama. They are devoid of every blame and are mines of auspicious qualities: inspirers of virtue, movers of all that is inert and conscious, sovereigns of both divine realms, endowed with parental affection and mastery, tenderness of character, accessibility, compassion, grace, mercy, sweetness, and infinitely many other qualities. They are the *rasa* of infinite *rasas* and the sun of infinite suns.

2. Relationship

The infinitely beginningless, eternal, and innate relationship of the countless beings in infinite universes is with Sita and Rama. The relationship predominant in this work is that of enjoyed and enjoyer-wife and husband. Through the true guru and saints who embody his gracious gaze, Bhagavan accepts a soul according to its proper relationship and plunges it into the ocean of bliss. The Supreme Self is being, consciousness, and bliss; his opposing grace is the world of nonbeing, insentience, and sorrow.

3. Purpose

The purpose is to draw the soul out of the ocean of adverse grace and immerse it in the ocean of favorable grace. The Supreme Self is being, consciousness, and bliss; adverse grace-nonbeing, inertia, and sorrow-is this very world.

4. Qualified recipient

The qualified person is one whom the Lord has already bound within the cord of his favorable grace, who now wishes to understand that bond, and who therefore accepts saints firmly established in the true tradition as gurus and takes refuge in Bhagavan. Those exclusively devoted to the King of *rasa*, inwardly joined to the feminine devotional disposition, are supremely qualified:

> *Nārī-bhāva-samāyuktās teṣāṃ dṛśyaṃ bhaved dhruvam.*
> “It will certainly become visible to those who are joined to the feminine devotional disposition.”
> -*Hanumat Saṃhitā* 2.43

* क्षमा याचना *

पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ कि योग्य नहीं होने पर भी लिखने एवं प्रेस का कार्य करने का दुःसाहस किया। यह विद्वानों का कार्य है, परन्तु यह दासानुदास विद्यालय गया नहीं है, केवल गुरु कृपाश्रय से कुछ अक्षरों को समझने लायक हुआ। यह तो माता-पिता विहीन संसार में भटक रहा था कि कृपा, दया के उदार से धनी श्री रामानन्द सम्प्रदाय के श्री सीताराम रहस्य समुद्रपोतायमान दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्री विभूषित रसराजैकनिष्ठ श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस दासभाव रसैकनिष्ठ श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामनारायणदासजी महाराज, श्रीराम जानकी मन्दिर, अमरगोहिवन पो०-सेंवरी, जि०-रोहितास (विहार) ने अहैतुकी कृपा का पञ्च-संस्कार करके युगल मन्त्र, श्री हनुमान जी के मन्त्र, मन्त्रद्वय, चरम-मन्त्र, बारम्बार समझा सिखाकर कुछ अक्षरों का भी ज्ञान प्रदान किये हैं। अपनी निर्हेतुकी कृपा द्वारा प्रेरितकर सन् १९७०ई० में श्री-अयोध्या धाम में श्री सद्गुरुदेव जू, श्री चारुशीला मन्दिर के कृपा वेलि की सघन छाया में रख कर सत्संग का शुभ-अवसर प्रदान किये हैं। अतः यह दासानुदास दोनों आचार्य वर्य के चरणों का ऋणी जन्म जन्मान्तर बना रहना चाहता हूँ।

अतः पाठक गणों से प्रार्थना है कि भूल को सुधार कर पढ़ेंगे, गलती के लिये क्षमा प्रदान करेंगे।

श्रीसीताराम रसिक सन्तों एवं भक्तों के
चरणाम्बुज रसलम्पटेक्षुक—

दासानुदास बासुदेव दास

श्री चारुशीला मन्दिर, जानकीघाट
श्रीअयोध्याजी।

A Request for Forgiveness

I ask the readers' forgiveness. Though unqualified, I ventured to write and undertake the work of printing. This is the work of learned people; this servant of servants never attended school and became able to understand only a few letters through refuge in the Guru's grace.

I had been wandering through this world without mother or father when Sri Sri 108 Swami Ramnarayan Das Ji Maharaj-of the Sri Ramananda tradition, rich in compassion and mercy, exclusively established in the servant disposition and in devotion to the King of *rasa*, an ornament of the lineage of Sri Agradas Acharya, an infinitely honored foremost acharya and sun to the lotus of *rasa*, a vessel for crossing the ocean of the mysteries of Sita and Rama-bestowed causeless grace upon me. He resides at the Sri Rama-Janaki Temple, Amargohivan, Post Saivari, District Rohtas, Bihar.

He performed the five sacraments, repeatedly explained and taught me the Couple's mantra, Hanuman's mantra, the *mantra-rahasya*, and the final mantra, and gave me even this small knowledge of letters. Moved by his causeless grace, in 1970 he placed me in sacred Ayodhya beneath the dense shade of the vine of grace of Sri Sadgurudev Ji at the Charushila Temple, and granted me the blessed opportunity of holy company.

This servant of servants therefore wishes to remain indebted, birth after birth, to the feet of both lines of acharyas.

I pray that readers will correct the errors as they read and forgive every mistake.

Longing for the nectar of the lotus feet of the rasika saints and devotees of Sita and Rama,

The servant of servants, Vasudev Das
Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः श्री हनुमते नमः

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति, पूजामूलं गुरुपदम् ।
मन्त्र मूलं गुरुर्वाक्यं, भक्तिमूलं गुरुकृपा ॥

"अथश्रीहनुमत्संहिता" के टीकाकारः—
रसराजैकनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस
श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द
मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण
जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,
श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३

Original source - Scan 10 of 116

Blank Leaf

This source page is blank apart from the scan number.

श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ॥ श्रीमती सर्वेश्वरी श्री चारुशीलायै नमः ॥ श्री सियराम रसिक हनुमते नमः ॥ श्री सद्गुरवे नमः

॥ श्री वैष्णव चरण कमलेभ्यो नमः ॥

अथ श्रीहनुमत्संहिता

श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका

प्रथमोऽध्यायः

मू०–जयत्यंताद्भुत संगरप्रियो महावली वीरवली मुखाग्रीः ।
प्रचण्डमार्त्तंड सहस्रकांतिः श्री रामपादद्वय एकतानः ॥१॥

अन्वयः—प्रचण्डमार्त्तंड सहस्रकान्तिः वीरवली – मुखाग्रणीः महावली श्री रामपादद्वय एकतानः अनन्त अद्भुत प्रियः जयति ॥१॥

अर्थः—अतिशय प्रवल हजारों सूर्यों के समान कान्ति वाले बीर बलवानों में अग्रगण्य (प्रमुख) महाबलवान श्री युगल सरकार (श्री सीताराम जू) के युगल पद कमलों में अनन्य वृत्ति वाले अनन्त अद्भुत् संग्राम प्रिय महावली श्री हनुमान जी की जय हो ॥

शव्दकोषानुसार संगर शव्द का अर्थ १-प्रतिज्ञा, २-स्वीकृति, ३-सौदा, ४-युद्ध, ५-ज्ञान, ६-निगल जाना, ७-दुर्भाग्य (संकट), ८-विष, आठ होता है । अंजनि नन्दन श्री हनुमान जी को ये सभी अर्थों में अद्भुत प्रिय है । आगे देखें एवं विचार करें ।

१-अद्भुत प्रतिज्ञा—बा० सु० ४२-२६-दासोऽहं कोशलेन्द्रस्य......... । कठिन कर्मों को सहज में करने वाले श्री राम जी का मैं दास हूँ । विनय-पत्रिका-३०, जाके गति है हनुमान की । ताकी पैज पूजि आई, यह रेखा कुलिस पषान की ॥१॥ अघटित-घटन, सुघट-विघटन, ऐसी विरुदावलि नहिं आन की । सुमिरत संकट-सोच-विमोचन, मूरति मोद निधान की ॥२॥ तापर सानुकूल गिरजा हर लखन राम अरु जानकी । तुलसी कपि की कृपा विलोकनि, खानि सकल कल्यान की ॥३॥

Chapter One - Invocation to Hanuman

Homage to Charushila. Homage to Hanuman, rasika of Sita and Rama. Homage to the true Guru. Homage to the lotus feet of the Vaishnavas.

The *Śrī Hanumat Saṃhitā*, with the *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā* commentary

> *Jayaty anantādbhuta-saṅgara-priyo mahābalī vīrabalī-mukhāgraṇīḥ,*
> *Pracaṇḍa-mārtaṇḍa-sahasra-kāntiḥ śrī-Rāma-pāda-dvayaikatānaḥ*. (1)

Victory to Hanuman: immensely powerful, foremost among heroic champions, radiant as a thousand fierce suns, wholly absorbed in the two lotus feet of Sita and Rama, and lover of infinitely wondrous *saṅgara*.

The lexicons give eight meanings for *saṅgara*: (1) a vow, (2) acceptance, (3) a bargain, (4) battle, (5) knowledge, (6) swallowing, (7) adversity or danger, and (8) poison. Hanuman is wondrously dear in every one of these senses.

1. A wondrous vow

In the *Vālmīki Rāmāyaṇa*, Sundara-kāṇḍa 42.26, he declares: *dāso 'haṃ Kosalendrasya*-"I am the servant of the Lord of Kosala, who makes difficult deeds easy." The *Vinaya-patrikā* likewise says:

> "The one who has attained Hanuman's refuge has seen his pledge fulfilled; this line is written upon the leaf."

To serve the one whom he accepts is service of precisely this kind: whoever Hanuman accepts is accepted by Sita and Rama.

२-अद्‌भुत् स्वीकृतिः—श्री अंजनिनन्दन की स्वीकृति अद्‌भुत् है क्योंकि इनकी अनन्यता एवं निःस्वार्थ सेवा से श्रीरामजी ऋणिया हो गये । वि० १६४) प्रेम कनौड़ो राम सो प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई । तेरोरिनी को कह्यो कपि सों ऐमी मानहिं को सेवकाई ॥ ३ ॥ अर्थात् श्री हनुमान जी जिसको स्वीकार करते हैं । उसे श्री सीताराम जो स्वीकार करते हैं ।

३-अद्‌भुत् सौदाः—ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत जितने देवी देवता हैं, सो सब सौदा करके यानि अपना कर पुनः छोड़ देने वाले हैं । खरीदे हुए सौदा को सम्यक् रक्षा नहीं कर सकने से छोड़ देते हैं । एकमात्र श्री हनुमानजी ही ऐसे हैं जो कि सौदा करके सम्यक् प्रकार रक्षा करते हैं । चाहे भगवत सौदा हो या भागवत सौदा हो दोनों की रक्षा करते हैं । वा० सु० ४२-३६ के अनुसार हजारों रावण युद्ध करने आवें तो भी मेरा सामना नहीं कर सकते हैं ।

४-अद्‌भुत् संग्रामः—श्री अंजनिनन्दन जी के अद्‌भुत् युद्ध को देख कर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, लखन, देवी देवता तथा स्वयं शत्रु प्रवल रावण भी सिहाता है । यानि सभी चकित होते हैं । (क० लं० काण्ड ४०-४१) हाथिन सो हाथी मारे, घोड़े-घोड़े सों संहारे, रथनि सो रथ विदरनि बल-वान की । चंचल चपेट चोट चरन चकोट चाहे, हहरानी फौजें भहरानी जातुधान की ॥ बार-बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहे रीति साहेब सुजान की । लाँबी लुम लसत लपेटि पटकत भट, देखो-देखो लखन! लरनि हनुमान की ॥४०॥ दवकि दबोरे एक, बारिधि में बोरे एक, मगन मही में एक गगन उड़ात है । पकरि पछारे कर चरन उखारे एक, चोरि फारि डारे एक मींजि मारे लात है । तुलसी लखत राम, राबन, विबुध, विधि, चक्रपानि, चंडीपति, चंडिका सिहात है । बड़े - बड़े वानईत वीर बलवान बड़े, जातुधान जूथप निपाते वातजात है ॥४॥

५-अद्‌भुत् ज्ञानः—अपने इष्ट के मनोरथों को जान कर अपने स्वरूप को स्त्री-पुरुष, सूक्ष्म-स्थूल, विराट - महाशिव अष्ट सिद्धियों के प्रभाव से अनन्त रूप धारणकर लेना तथा इष्ट के लीला में संयोग-वियोग के कारण सम्पूर्ण सेवा को जान लेना यही तो अद्‌भुत् ज्ञान है ।

Chapter One - The Eight Meanings of *Saṅgara*

2. Wondrous acceptance

Whoever Hanuman accepts, Sita and Rama accept.

3. A wondrous bargain

All the gods and goddesses within the universe make bargains-that is, they accept someone and later abandon that person when they cannot properly protect what they have acquired. Hanuman alone makes the bargain and then protects it completely. Whether the bargain is with Bhagavan or with Bhagavan's devotee, he safeguards both. Even if thousands of Ravanas came to fight, they could not withstand him.

4. Wondrous battle

Seeing Anjani's son in his extraordinary warfare, Brahma, Vishnu, Mahesha, Rama, Lakshmana, all gods and goddesses, and even his mighty enemy Ravana are amazed. Tulsidas describes the battle:

> He strikes elephants against elephants, horses against horses, and shatters chariot with chariot-such is the strength of the mighty one. With quick slaps, blows, kicks, and crushing feet, the demon hosts reel and break. Rama repeatedly praises his servant; Tulsi praises the discerning Lord's way. His long, shining tail coils round warriors and hurls them down-Lakshmana, behold Hanuman's warfare!
>
> He springs upon some and crushes them; some he drowns in the sea; some he drives into the earth and others he flings into the sky. He seizes some and dashes them down, tears out hands and feet, splits others apart, wrings them, and kicks them. Tulsi sees Rama, Ravana, the gods, Brahma, Vishnu, Shiva, and Chandi marvel. Great monkey warriors and commanders among the demons fall before the Wind-god's son.

5. Wondrous knowledge

Knowing the intentions of his chosen Lord, Hanuman can manifest himself as female or male, subtle or gross, and cosmic in extent through the power of the eight perfections.

६-अद्भुत् भक्षण:—(निगल जाना) अहिरावण को समाप्त करना, भीम के अभिमान को निगल जाना, महाभारत के युद्ध अभिमान को निगल जाना, भीष्म, द्रोणाचार्य को भी आश्चर्यमय कर देना यानि महारथियों के अभिमान को निगल जाना यही अद्भुत् भक्षण है ।

हनुमान बाहुक-५-भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज, गाज्यों सुनि कुरुराज दल हलवल भो । कह्यो द्रोण भीषम समीरसुत महाबीर, वीर-रस वारि-निधि जाको बल जल भो । बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लगि, फलंग फलांगहु ते घाटि नभ तल भो । नाइ-माइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जो हैं, हनुमान देखे जगजीवन को फल भो ।।५।।

७-अद्भुत् संकट (दुर्भाग्य):—कालनेमि के सन्त वेष का आदर करते हुए भी अद्भुत् गुरु दक्षिणा देना यानि परम कल्याण करना तथा लंकिनी को मुक्के से मारकर बुद्धि परिवर्तन करना । (मानस लं० ५८ सु० ४)

८-अद्भुत् विष:—महाशम्भु रूप में समुद्रोत्पन्न महाविष को पीकर नीलकण्ठ नाम धरा लेना यही अद्भुत् विष है, जो कि संसारिक बासना रूप विष को जलाकर महामाधुर्य सच्चिदानन्द परात्पर ब्रह्म स्वरूप के विषय विष को देकर अमर कर देते हैं ।

महाबली:—जो अपने को इष्ट कृपा दृष्टि के मूर्तिमान सद्गुरु (आचार्य) यानि गुरु परम्परा द्वारा अपने आपको (आत्मस्वरूप को) अकारत्रयरूपी श्री वैष्णवाग्नि में हवन कर दिया है, वही महाबली है । मन्त्रार्थानुसार (इष्ट का भोग्य पदार्थ) अर्थ स्वरूप सकलविधि कैंकर्य निपुण श्री हनुमान जी ही हैं । गुरू रूप महाबलियों में वीरबली श्री हनुमान जी हैं । श्रीराम रहस्योपनिषद् के अनुसार सनकादिकों के भी गुरू हैं । "सनकादियोगिवर्य अन्ये च ऋषयस्तथा······ । सभी गुरुओं के आदि गुरू श्री हनुमान जी हैं । इसलिये ऋषिवर अगस्त जी ने महावली, वीरबली, मुखाग्रणी श्रेष्ठ सेनापति कहा है ।

मार्त्तण्ड सहस्रकान्ति:—हजारों वृष राशि के सूर्य से भी अधिक प्रवर प्रताप (कान्ति) वाले, तीनों लोक में इनके समान तेजशाली वीर कोई नहीं है । (क०-लं० ४५) कौन की हांक पर चौक चंडीस विधि, चंडकर थकित

Chapter One - Knowledge, Devouring, Danger, and Poison

6. Wondrous devouring

He brought Ahiravana to an end, swallowed Bhima's pride, consumed Arjuna's pride in the Mahabharata war, and even dissolved the pride of Bhishma and Drona. The *Hanumān Bāhuka* says:

> In the Bharata war the monkey king roared from Arjuna's banner; hearing it, the Kuru king's army trembled. Drona and Bhishma said, "The son of the Wind is a great hero, an ocean of heroic *rasa* whose strength is its water." By a monkey's nature, in childhood sport he leapt toward the sun; beside that leap, the vault of heaven became a mere ditch. Every warrior bowed his head, joined his hands, and saw in Hanuman the fruit of the Lord of life. (5)

7. Wondrous danger

Even while honoring Kalanemi's guise as a saint, Hanuman gave him an extraordinary *guru-dakṣiṇā*-that is, he brought about his highest good. With one blow he transformed Lankini's understanding.

8. Wondrous poison

In the form of Great Shambhu he drank the terrible poison born from the ocean and took the name Nilakantha. More inwardly, he burns away the poison of worldly craving and gives instead the "poison" that is the object of supreme sweetness-the transcendent Brahman of being, consciousness, and bliss-thereby making the soul immortal.

The immensely powerful one

One who, through the guru lineage-the embodied grace-filled gaze of the chosen Lord-has offered the self into the threefold Vaishnava fire is truly *mahābalī*. According to the mantra's meaning, Hanuman is the very embodiment of what belongs to the chosen Lord and is expert in every form of service. Among the mighty gurus he is the heroic champion. The *Śrī Rāma-rahasya Upaniṣad* even names him guru of Sanaka and the other yogic sages. Agastya therefore calls him immensely powerful, foremost among heroic champions and leaders of armies.

His radiance surpasses even the sun in the sign of Taurus; in the three worlds no hero equals him in splendour.

फिर तुरंग हाँके । कौन के तेज वलसीम भट भोम से, भीमता निरखि कर नयन ढाँके ॥ दास तुलसीस के विरुद वरनत विवुध, वीर विरुदैत वर वैरि धाँके ॥ नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन, कहाँ हनुमान-से वीर बाँके ॥ ४५ ॥

श्रीराम पादद्वय एक तानः—श्री सीताराम युगल सरकार के युगल पद कमलों के अनन्य उपासक श्रीहनुमानजी की जय हो ॥१॥

मू०—कुंभोद्भवायांबुधि शोषणाय विशुद्ध विज्ञान शुभप्रदाय ।
श्रीराम पादद्वय निश्चिताय महामुनींद्राय नमो नमस्ते ॥ २ ॥

अन्वयः—कुम्भोद्भवाय विशुद्ध विज्ञान शुभप्रदाय श्रीरामपादद्वय निश्चिताय अम्वुधि शोषणाय महामुनींद्राय ते नमो नमः ॥२॥

अर्थ—घड़ा से है जन्म जिनका विशुद्ध विज्ञानरूपी परम कल्याण को देने वाले श्री युगल सरकार श्री सीताराम जू के युगल चरण कमलों में निश्चित बुद्धि वाले अथाह समुद्र को सुखाने वाले, महामुनियों में सर्वश्रष्ठ उन श्री अगस्त जी महाराज के लिए नमस्कार हो, नमस्कार हो ।

कुंभोद्भवायः—श्री अंगिरा ऋषि के समाधि से उत्पन्न होने से परम पवित्र है एवं मैत्रा वरुण के (रज-बीज) तेज के सहित कुम्भ से उत्पन्न होने से अपवित्रता की सीमा है । अर्थात् विद्या और अविद्या, दैवी सम्पत्ति और आसुरी सम्पत्तियों की सीमा है । महाऋषियों के नायक हैं अपने इष्ट श्री सीताराम जू के भजन प्रभाव से अथाह समुद्र को पी जाने वाले विन्ध पर्वत को जमीन पर सुला कर ब्रह्माण्ड के भीतर कल्याण करने वाले हैं । आदि गुरू श्री हनुमान जी से विशुद्ध विज्ञान प्राप्त किये हुए हैं ।

मू०—श्रुतं रामस्य माहात्म्यं तव क्रान्महाकपे ।
ऐश्वर्यं मतुलं तेजः प्रभावं परमात्मनः ॥ ३ ॥

अन्वयः—महाकपे ! परमात्मनः रामस्य माहात्म्यं ऐश्वर्यं अतुलं तेजः प्रभावं तव वक्रान् श्रुतम् ॥३॥

अर्थः—हे महाकपि श्री हनुमान जी; परमात्मा श्रीराम जी का माहात्म्य और ऐश्वर्य अतुलित तेज प्रभाव को आपके श्री मुखारविन्द से (मैंने) सुन लिया ॥३॥

Chapter One - Agastya's Salutation and Question

Tulsidas says that Hanuman towers over every warrior's brilliance and strength, scatters the demon host, and shatters their ranks; none can say where a hero equal to him exists.

"Wholly absorbed in the two feet of Rama" means wholly devoted to the paired lotus feet of the Divine Couple, Sita and Rama. Victory to Hanuman, their exclusive worshipper.

> *Kumbhodbhavāya viśuddha-vijñāna-śubha-pradāya,*
> *Śrī-Rāma-pāda-dvaya-niścitāya śoṣaṇāya mahā-munīndrāya te namo namaḥ.* (2)

Again and again I bow to Agastya, foremost among great sages: born from the jar; bestower of the supreme blessing of pure knowledge; firmly established at the two feet of Sita and Rama; and the one who drank the unfathomable ocean dry.

Agastya is supremely pure because he arose from the contemplative absorption of the sage Angiras, yet-being born in a jar from the combined seed-essence of Mitra and Varuna-he also stands at the boundary of impurity. He marks the boundary between knowledge and ignorance, divine and demonic endowments. He is leader of the great sages. Through the force of worshipping Sita and Rama he drank the boundless ocean, laid the Vindhya mountain upon the earth, and worked for the welfare of the universe. From the primal guru Hanuman he received pure knowledge.

Agastya said:

> *Śrotuṃ Rāmasya māhātmyaṃ tava vaktrān mahākape,*
> *Aiśvaryam atulaṃ tejaḥ prabhāvaṃ paramātmanaḥ.* (3)

O great monkey, from your lotus mouth I have heard the glory of Rama-the Supreme Self-his incomparable sovereignty, radiance, and power.

मू०–माधुर्यं गोपनीयञ्च यदलभ्यं सुरासुरैः ।
ब्रह्मा वेदविदां श्रेष्ठः कपिलोनारदस्तथा ।। ४ ।।
वैष्णवानां च प्रवरः श्री पंचानन सर्वदृक् ।
प्रह्लाद सनको व्यासस्तथा वैयासकिर्हरिः ।। ५ ।।
पराशरस्सुरः सर्वे देवर्षयस्तथात्वि मे ।
श्रीशशर्वाणी च सावित्री शेष सिद्धामहर्षयः ।। ६ ।।
विभीषणाद्यश्च ये साध्या वैष्णवा वैष्णवी तथा ।
सर्वेषामप्यलभ्यं यत्माधुर्यं जानकी पतेः ।। ७ ।।
तत्सर्वं श्रोतमिच्छामि विस्तारेण तवाननात् ।
त्वं साक्षाच्चारुशीला च नित्यामध्ये प्रपूजिता ।। ८ ।।
इति श्रुतं मयासर्वं तेनत्वां प्रणमाम्यहं ।
यद्यस्ति ते कृपामह्यं गुह्यं तद्वदसांप्रतम् ।। ९ ।।

अन्वयः—अब यत सुरा सुरैः अलभ्यं च गोपनीयं माधुर्यं वेद विदां श्रेष्ठः ब्रह्मा कपिलो नारदः तथा वैष्णवानां प्रवरः सर्वदृक् श्रीपञ्चाननः प्रह्लादो शनको व्यासस्तथा हरिः वैयासकिः परासरः सर्वं देवर्षय सुराः तथा तु इमे श्रीः च वाणी, सावित्री शेष सिद्धाः महर्षयः च ये विभीषणादयः साध्या वैष्णवा, वैष्णवी तथा सर्वेषां जानकीपते माधुर्यं यत् अलभ्यं सर्वं विस्तारेण तवाननात् श्रोतुमिच्छामि च त्वं नित्यामध्ये प्रपूजिता साक्षात् चारुशीला (असि) मया सर्वं इति श्रूतं तेनाऽहं त्वां प्रणमामि यत् मह्यं साप्रतं ते कृपा अस्ति गुह्यं वद् ।।९।।

अर्थः—अब जो अलभ्य (अप्राप्त) और गोपनीय (छिपाने योग्य) माधुर्य है जो वेद वेत्ताओं में श्रेष्ठ श्री ब्रह्मा जी से लेकर कपिलदेव, नारद था और भी श्री वैष्णव श्रेष्ठ सर्वं दृष्टि वाले दर्शी श्री पञ्चानन (शंकर जी) तथा प्रह्लाद शनक, व्यास तथा भगवान श्री शुकदेव जी परासर आदि सभी देवता देवर्षि इसी प्रकार लक्ष्मी, वाणी (सरस्वती) सावित्री, शेष जी सिद्ध महर्षि लोग और विभीषण जी आदि साध्य गण वैष्णव जन, दास, वैष्णवी या, दासी गण जानकी पति श्रीराम जी का जो माधुर्य सभी को अलभ्य है । आपके श्री मुखारविन्द से सुनना चाहता

Chapter One - The Secret Sweetness of Sita's Lord

> *Mādhuryaṃ gopanīyaṃ ca yad alabhyaṃ surāsuraiḥ,*
> *Brahmā vedavidāṃ śreṣṭhaḥ Kapilo Nāradas tathā.* (4)
>
> *Vaiṣṇavānāṃ ca pravaraḥ Śrī-Pañcānana-sarvadṛk,*
> *Prahlādaḥ Sanako Vyāsas tathā Vaiyāsakir Hariḥ.* (5)
>
> *Parāśaraḥ surāḥ sarve devarṣayas tathāpare,*
> *Śrīś ca Śarvāṇī ca Sāvitrī Śeṣa-siddha-maharṣayaḥ.* (6)
>
> *Vibhīṣaṇādyāś ca ye sādhyā Vaiṣṇavā Vaiṣṇavīs tathā,*
> *Sarveṣām apy alabhyaṃ yan mādhuryaṃ Jānakī-pateḥ.* (7)
>
> *Tat sarvaṃ śrotum icchāmi vistareṇa tavānanāt,*
> *Tvaṃ sākṣāc Cāruśīlā ca nityā madhye prapūjitā.* (8)
>
> *Iti śrutaṃ mayā sarvaṃ tena tvāṃ praṇamāmy aham,*
> *Yady asti te kṛpā mahyaṃ guhyaṃ tad vada sāmpratam.* (9)

There is a secret sweetness, unattainable even to gods and demons: the sweetness of Janaki's Lord. It remains beyond Brahma, foremost knower of the Veda; Kapila and Narada; all-seeing Panchanana, foremost among Vaishnavas; Prahlada, Sanaka, Vyasa, Shukadeva, Hari, and Parashara; all gods and divine sages; Lakshmi, Parvati, Savitri, Shesha, perfected beings and great sages; Vibhishana and the other perfected Vaishnavas and Vaishnavis.

I wish to hear that entire mystery in detail from your mouth. I have heard that you are Charushila herself, worshipped among the eternal companions. Therefore I bow to you. If you have grace for me, speak that hidden truth now.

हूँ (क्योंकि) आप श्री सीताराम जी के नित्य पार्षदों के बीच में सभी सीता के सखियों से पूज्य साक्षात् श्री चारुशीला जी हैं । आत्मा को परमात्मा से मिलाने के लिये सीताराम जी के तीन शक्तियाँ हैं । १- संधिनी-गुरु परम्परा द्वारा ब्रह्म सम्बन्ध जोड़ने वाली २- संदीपनी-शरणागतों को भजन में आनन्द देने वाली चारुशीला जी हैं । ३- अह्लादिनी - स्वरूप सिद्ध होने पर भेंट कराने में सीता जी स्वयं हैं । यह सब मैंने पहले से सुन रखा है । इसलिए मैं आपको नमस्कार करता हूँ । यदि इस समय आपकी कृपा मुझ पर हो तो सम्यक् प्रकार से कहिए ॥९॥

मू०-रसिकानां हृदाह्लाद कारिणीं पावनीं कथाम् ।
कथयन्ति महात्मानः प्राप्नुवन्ति हरेः पदम् ॥ १० ॥

अन्वयः—रसिकानां हृदाह्लाद कारिणीं पावनीं कथाम् महात्मानः कथयन्ति हरेः पदं प्राप्नुवन्ति ॥१०॥

अर्थः—रासिकों के हृदय को आनन्द देने वाली, इस पवित्र कथा को महात्मा लोग व्याख्यान करते हैं, जिस व्याख्यान से भगवद् धाम को प्राप्त कर लेते हैं । (रा० उ०) गाई राम गुन गण बिमल । भवतर बिनहिं प्रयास ॥

श्री हनुमान उवाच-साधुपृष्टोसि ब्रह्मर्षेमनसैवेति निश्चितम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं दिव्य तव प्रीत्या वदाम्यहम् ॥११॥

अन्वयः—ब्रह्मर्षे साधुपृष्टोसि (मे) मनसा इति निश्चितं गुह्याद् गुह्यतरं दिव्यं तव प्रीत्या वदाम्यहम् ॥११॥

अर्थः—हे ब्रह्मर्षे श्री अगस्त जी आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया । मेरे मन में यह बात निश्चित है, गुह्य (गूढ़) से भी गुह्यतर यह दिव्य कथा आपके प्रेमाधीन होकर मैं कहूँगा ॥११॥

मू०-गोलोकं निर्णयं सर्वमैश्वर्यं च निवेदितम् ।
अद्यते कथयिष्यामि प्रेमामृत महोत्सवम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—प्रेमामृत महोत्सवं च गोलोकं निर्णयं सर्वं ऐश्वर्यं (तव) निवेदितं अद्यते कथयिष्यामि ॥१२॥

अर्थः—यह प्रेमामृत का जो महानोत्सव है यह सब गोलोक का निर्णय ऐश्वर्य आपने कहा है । इसका उत्तर इस समय आप से कहूँगा ॥१२॥

Chapter One - Hanuman Agrees to Reveal the Mystery

The commentator explains that Charushila is among the companions of Sita in the eternal retinue. Three powers of Sita bring the soul to the Supreme Self: *saṃdhinī*, which joins the soul to Brahman through the guru lineage; *sandīpinī*, which fills the surrendered with delight in worship; and *āhlādinī*, Sita herself, who brings about the meeting once the perfected form has arisen. Agastya therefore bows and asks Hanuman to speak completely if grace has awakened toward him.

> *Rasikānāṃ hṛd-āhlāda-kāriṇīṃ pāvanīṃ kathām,*
> *Kathayanti mahātmānaḥ prāpnuvanti Harer padam.* (10)

Great souls who tell this pure story-which delights the hearts of rasikas-attain the abode of Hari.

> "Sing the stainless virtues of Rama; the ocean of becoming is crossed without effort."

Hanuman said:

> *Sādhu pṛṣṭo 'smi brahmarṣe manasā veti niścitam,*
> *Guhyād guhyataraṃ divyaṃ tava prītyā vadāmy aham.* (11)

O brahmarshi, you have asked well. I know with certainty what is in your mind. Subject to your love, I shall tell this divine mystery, more secret than the secret.

> *Goloka-nirṇayaṃ sarvam aiśvaryaṃ ca niveditam,*
> *Adya te kathayiṣyāmi premāmṛta-mahotsavam.* (12)

The nature and sovereignty of Goloka have already been declared. Today I shall tell you of the great festival of love's nectar.

मू०–पावनं सर्व साधूनां रसिकानां च जीवनम् ।
न देयं कस्यचिदे तत्प्राणात्प्रियतरं महत् ॥ १३ ॥

अन्वयः - रसिकानां जीवनं च सर्वसाधूनां पावनं एतत् प्राणात्महत् प्रियतरं कस्यचित न देयं ॥१३॥

अर्थः - जो रसिकों का तो जीवन प्राण है । सभी साधुओं को पवित्र करने वाला प्राणों से भी अतिसय प्रियतर इस चरित्र को किसी अनधिकारी को मत देना ॥१३॥

मू०–यच्छ्रुत्वा नियतं वासोगोलोके नात्र संशयः ।
अयोध्याधिपतिः श्रीमान् रामो राजीवलोचनः ॥ १४ ॥

अन्वयः–राजीवलोचनः श्रीमान् रामः अयोध्यापति यत् श्रुत्वा गोलोके वासः नियतं अत्र संशयः न ॥१४॥

अर्थः—कमल के समान नेत्र वाले श्रीमान् राम जी अयोध्या के राजा हैं । जिनका यह रहस्य (एकान्तिक स्थान) सुनकर बिशुद्ध बुद्धि (शरणागति के बाद प्राप्त बुद्धि) के निश्चय में निश्चित रूप से हृदय में वास हो जाता है । इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है ॥१४॥

मू०–जानक्या सह संप्रीतः क्रीड़ारस विलंपटः ।
माधुर्य सुख संपन्नामुवाच जनकात्मजाम् ॥१५॥

अन्वयः - जानक्या सह संप्रीतः क्रीड़ारस विलंपटः माधुर्यं सुख सम्पन्नां जनकात्मजां उवाच ॥१५॥

अर्थः—श्री जानकी जी के साथ प्रेम में विभोर हुए रम् धातु के क्रीड़ा अर्थ में आशक्त चित्त (श्रीराम जी) माधुर्य सुख से सम्यक् प्रकार पूर्ण श्री जनकात्मजा जी से बोले ॥१५॥

मू०–गम्यतां सरयू तीरं मनोमेत्वरयत्यलं ।
इत्युक्त्वा तां करे धृत्या जगाम रघुनंदनः ॥ १६ ॥

अन्वयः–मे मनः अलमत्वरयति सरयूतीरं गम्यतां इत्युक्त्वा रघुनन्दनः तां करे धृत्वा जगाम् ॥१६॥

अर्थः—मेरा मन (रमने के लिए) अतिसय अकुला रहा है । (हे प्रिय) सरयू

Chapter One - The Secret Enters the Heart

> *Pāvanaṃ sarva-sādhūnāṃ rasikānāṃ ca jīvanam,*
> *Na deyaṃ kasyacid etat prāṇāt priyataram mahat.* (13)

This great account is the very life of rasikas, purifier of all saints, and dearer than life itself. It must not be given to an unqualified person.

> *Yac chrutvā niyataṃ vāso Goloke nātra saṃśayaḥ,*
> *Ayodhyādhipatiḥ śrīmān Rāmo rājīva-locanaḥ.* (14)

Whoever hears it gains a certain dwelling in Goloka-there is no doubt. The lotus-eyed, glorious Rama, Lord of Ayodhya, comes to dwell surely within the purified and surrendered heart.

> *Jānakīyā saha saṃprītaḥ krīḍā-rasa-vilampaṭaḥ,*
> *Mādhurya-sukha-saṃpanna uvāca Janakātmajām.* (15)

Absorbed in love with Janaki, passionately devoted to the *rasa* of play and filled with the joy of sweetness, Rama spoke to Janaka's daughter.

> *Gacchatāṃ Sarayū-tīraṃ mano me tvaryate 'calam,*
> *Ity uktvā tāṃ kare dhṛtvā jagāma Raghunandanaḥ.* (16)

"Let us go to the bank of the Sarayu; my mind longs intensely for it." Saying this, Raghunandana took her by the hand and set out.

किनारे चलो। इतना कहकर श्री रघुनाथ जी श्री जानकी जी का हाथ पकड़ कर चल पड़े ॥१६॥

मू०—महारास रसोल्लासी विलासी सर्वदेहिनां।
ज्ञात्वा तयोर्मनोभावं सख्यश्च परमोत्सुकाः ॥ १७ ॥

अन्वयः—सख्यः सर्वदेहिनां विलासी महारास रसोल्लासी तयोर्मनोभावं ज्ञात्वा परमोत्सुकाः ॥१७॥

अर्थः—(वे सभी सखियाँ) प्राणी मात्र के हृदय में विलास करने वाले महारास के रस में अत्यन्त उत्सुकता पूर्वक दोनों सरकारों के भाव को जानकर महाउत्सुक हो गयी अतः उन सखिनों का आगे वर्णन है ॥१७॥

मू०—सुकेशाः सुस्मिताश्चैव सुश्रोण्यः परमाद्भुताः।
रूप यौवन शालिन्यः सर्वाभरणभूषिताः ॥ १८ ॥

अर्थः—वे सब सखियाँ सुन्दर केश वाली मन्द मुस्कयान वाली और सुन्दर नितम्ब वाली परम अद्भुता है। वे रूप यौवन सम्पन्ना है तथा सभी प्रकार के भूषणों से भूषिता है ॥१८॥

मू०-सुजघना दृढोरस्काः काश्चिद्विल्वफलस्तनाः।
गान विद्या कलालाप कुशलाः प्रेमपूरिताः ॥ १९ ॥

अर्थः—सुन्दर जंघा वाली, मजबूत वक्ष स्थल वाली, कोइ विल्वफता के समान स्तन वाली, गान विद्या में पण्डिता सुन्दर कलोल मचाने में पण्डिता एवं प्रेम से भरी हुई महापण्डिता है ॥१९॥

मू०—विदग्धा विविधाकाराः कामविद्या विशारदाः।
नाना वादित्र कुशला रामचित्तापहारिकाः ॥ २० ॥

अर्थः—विविध आकार के काम कला में कुशल, विविध प्रकार के बाजा बजाने में निपुण श्रीराम जी के चित्त को हरण करने में चतुर हैं ॥२०॥

मू०-यासां कला कलांशेन जातानार्यः श्रियादयः।
सर्वा रामार्पितधियो जानकी परिचारिकाः ॥ २१ ॥

अर्थः—श्री सीता जी के सखियों के कला के अंश से अनन्त उमा, रमा, ब्राह्मणी स्त्रियां उत्पन्न होती हैं। ऐसी वे सब सखियां अपने चित्त को श्रीराम जी के लिए अर्पण की हुई श्री जानकी जी की सेवा करती हैं ॥२१॥

Chapter One - The Companions of the Great Rāsa

> *Mahārāsa-rasollāsī vilāsī sarva-dehinām,*
> *Jñātvā tayor mano-bhāvaṃ sakhyaś ca paramotsukāḥ.* (17)

The companions, who sport within the hearts of all embodied beings and delight in the *rasa* of the great *rāsa*, understood the inward feeling of the Divine Couple and became supremely eager.

> *Sukeśāḥ susmitāś caiva suśroṇyaḥ paramādbhutāḥ,*
> *Rūpa-yauvana-śālinyaḥ sarvābharaṇa-bhūṣitāḥ.* (18)

They had beautiful hair, gentle smiles, and lovely hips; they were marvellous, endowed with beauty and youth, and adorned with every ornament.

> *Sujaghanā dṛḍhoraskāḥ kāścid bilva-phala-stanāḥ,*
> *Gāna-vidyā-kalālāpa-kuśalāḥ prema-pūritāḥ.* (19)

Beautiful of thigh and firm of breast-some with breasts like bilva fruit-they were learned in song, skilled in the arts and graceful conversation, and filled with love.

> *Vidagdhā vividhākārāḥ kāma-vidyā-viśāradāḥ,*
> *Nānā-vāditra-kuśalā Rāma-cittāpahārikāḥ.* (20)

Refined and diverse in form, adept in the art of love and in many instruments, they were expert at stealing Rama’s heart.

> *Yāsāṃ kalā-kalāṃśena jātā nāryaḥ śriyādayaḥ,*
> *Sarvā Rāmārpita-dhiyo Jānakī-paricārikāḥ.* (21)

From the slightest portion of their arts arose Lakshmi and all other glorious women. Every one had offered her mind to Rama and served Janaki.

मू०—अनन्त कोट्यो वह्वयश्च वेष्टिता जनकात्मजम् ।
विलक्षणा लक्षणाढ्या: स्वादु चंपकगर्भका: ।। २२ ।।

मू०—परमानंद शालिन्यो नानेंगित सुपंडिता: ।
ता सां मध्ये बिराजंतौ परम प्रीति वर्द्धनौ ।। २३ ।।

अर्थ:—ऐसी वे सब सखियां अनन्त करोड़ों से भी अधिक श्री जानकी जी को घेरी हुई हैं । बड़ी विलक्षण सर्वलक्षण सम्पन्ना चम्पकादि सभी फूलों के स्वाद वाली महाआनन्द समुद्रभूता, विविध प्रकार के चेष्टाओं में पण्डिता उन सब सखियों के बीच में बिराजमान दोनों सरकार श्री सीताराम जी परम अनुराग को बढ़ा रहे हैं (२२ व २३)

मू०—सुकुमारौ कोमलांगो मार माधुर्यमोहनौ ।
कुंकुमांकित सर्वांगौ चन्दनेन सुर्चाचितौ ।। २४ ।।

मू०—नाना कुसुममालाभि: सुरभी कृतदिग्मुखौ ।
परस्पर रसाभिज्ञौ मनोवाचामगोचरौ ।। २५ ।।

अर्थ:—दोनों सरकार (श्री सीताराम जू) सुन्दर सुकुमार कोमल अंगों वाले, काम को भी अपने माधुर्य से मोहित करने वाले सर्वांग में चन्दन कुंकुमादि लेपन किए हुये विविध प्रकार के सुगन्धित फूलों के माला को पहने हुए दिशाओं को सुगन्धित कर रहे हैं, आपस में दोनों सरकार रस मर्मज्ञ (प्रेमामृत में) पगे हुए मन वाणी से परे हैं । (२४ व २५)

मू०—कटाक्ष क्षेप सम्पन्नौ लीलयाद्भुत दर्शनौ ।
प्रेमामृत रसावेशौ कर ग्रहणबिह्वलौ ।। २६ ।।

अर्थ:—दोनों सरकार अपने विशाल नेत्रों के कटाक्षों से अद्भुत लीला का दर्शन दे रहे हैं । प्रेम रूपी अमृत में आविष्ट चित्त हुए एक दूसरे का हाथ पकड़ करके आनन्द विभोर हो रहे हैं ।।२६।।

मू०—एवं नानाविधानेन गच्छन्तौ वन चारिणौ ।
पादाम्बुज सुगन्धेन भ्रमन्ति भ्रमराखिला: ।। २७ ।।

अर्थ:—इस तरह नाना प्रकार के विधानों से विलास वनों में विचर रहे हैं ।

Chapter One - Sita and Rama Amid Countless Companions

> *Ananta-koṭyo bahavaś ca veṣṭitā Jānakātmajām,*
> *Vilakṣaṇa-lakṣaṇāḍhyāḥ svādu-campaka-gandhikāḥ.* (22)

Countless crores of companions surrounded Janaki. They were extraordinary, endowed with every auspicious mark, and fragrant like sweet champaka blossoms.

> *Paramānanda-śālinyo nānengita-supaṇḍitāḥ,*
> *Tāsāṃ madhye virājantau parama-prīti-vardhanau.* (23)

They embodied an ocean of supreme bliss and were expert in every gesture. In their midst Sita and Rama shone, ever increasing the highest love.

> *Sukumārau komalāṅgau Māra-mādhurya-mohanau,*
> *Kuṅkumāṅkita-sarvāṅgau candanena sucitritau.* (24)

Youthful and delicate, with tender limbs, they enchanted even Kama by their sweetness. Their bodies were marked with saffron and beautifully painted with sandal paste.

> *Nānā-kusuma-mālābhiḥ surabhī-kṛta-diṅmukhau,*
> *Paraspara-rasābhijñau mano-vācām agocarau.* (25)

Garlanded with many fragrant flowers, they perfumed every direction. Each knew the other's *rasa*; they were beyond mind and speech.

> *Kaṭākṣa-kṣepa-saṃpannau līlayādbhuta-darśanau,*
> *Premāmṛta-rasāveśau kara-grahaṇa-vihvalau.* (26)

With the casting of their sidelong glances they revealed a wondrous play. Immersed in the nectarean *rasa* of love, they became overwhelmed as each held the other's hand.

> *Evaṃ nānā-vidhānena gacchantau vana-cāriṇau,*
> *Pādāmbuja-sugandhena bhramanti bhramarāvalīḥ.* (27)

Thus, sporting in many ways, the forest-wandering Couple proceeded. Drawn by the fragrance of their lotus feet, swarms of bees followed and circled them.

उन दोनों सरकार के चरणों से जमीन में चिन्ह बन जाते हैं । उनकी सुगन्धियों के लिए भौंरों का झुण्ड जुट पड़ता है ॥२७॥

मू०—नख चन्द्राद्भुतं दृष्ट्वा चकोरापरिबभ्रमुः ।
सौदामिनीघनं दृष्ट्वा चातकाः परिचक्रमुः ॥ २८ ॥

अर्थः—चरणों में नख रूपी चन्द्र को देख करके चकोर चारों तरफ से घूमने लगते हैं । दोनों सरकार के श्याम गौर श्री विग्रह को देख करके चातक चारों तरफ चक्कर लगाने लगते हैं ॥२८॥

मू०—गमनं सुंदरं दृष्ट्वा बंचिता हंस कुंजराः ।
नव्यलावण्यकं दृष्ट्वा मूर्च्छितौरति मन्मथौ ॥ २९ ॥

अर्थः – दोनों सरकार के वन विचरण की सुन्दरता को देख करके हंस और हाथी ठगे रह जाते हैं, और दोनों सरकार की सुन्दर सुकुमार कोमलता को देख करके रति और कामदेव मुर्छित हो जाते हैं ॥२९॥

मू०—हास्यलास्य कटाक्षैश्च चाटुकारैर्मनोहरैः ।
नाना गानैः सुमधुरैर्वाद्यैर्विविध निर्मलैः ॥ ३० ॥

अर्थः—दोनों सरकार के हास्य, अंग चेष्टा कटाक्ष देख करके चुटकुले शब्दों से सबके मन को हरते हुए, सखियों के नाना प्रकार के गान मधुरता बाजाओं की विविध निर्मलता से धीरे हुए ॥३०॥

मू०—वेष्टितावालिभिस्तौ तु गच्छंतौ वर दंपती ।
परस्पर रसावेशौ प्राप्तौ तौवनमुत्तमम् ॥ ३१ ॥

अर्थः—दोनों सरकार दम्पत्ति (पति–पत्नी) भाव पूर्वक रसाविष्ट होकर उस उत्तम वन के अन्दर विचर रहे हैं । विचरते हुये ॥३१॥

मू०—तत्रदिव्यासने दिव्यं कानने मणिवेष्ठिते ।
विराजंतौ कलाभिज्ञौ दृष्ट्वासख्यः प्रमोदिताः ॥ ३२ ॥

मू०—पूज्यंत्यः प्रयत्नेन गंधमाल्यैः सुसंस्कृतैः ।
वरान्न पान भोगैश्चर्तपिताः प्रीतिसंयुताः ॥ ३३ ॥

मू०—पक्वतांबूलकर्पूरं दत्वाताभ्यां प्रयत्नतः ।
ननृतुर्मुखमालोक्य सर्वा रासरसोत्सुकाः ॥ ३४ ॥

Chapter One - The Couple Enters the Forest

> *Nakha-candrādbhutaṃ dṛṣṭvā cakorāḥ parito bhramuḥ,*
> *Saudāminī-varṇaṃ dṛṣṭvā cātakāḥ paricakramuḥ.* (28)

Seeing the wondrous moons of their toenails, the chakora birds circled all around. Seeing the lightning hue of Sriya, the chataka birds wheeled about them.

> *Gamanaṃ sundaraṃ dṛṣṭvā vañcitā haṃsa-kuñjarāḥ,*
> *Tanvyo lāvaṇyakaṃ dṛṣṭvā mūrcchitau Rati-Manmathau.* (29)

Beholding their lovely gait, swans and elephants felt surpassed. Seeing their delicate beauty, Rati and Manmatha fainted.

> *Hāsya-lāsya-kaṭākṣaiś ca cāṭukārair manoharaiḥ,*
> *Nānā-gānaiḥ sumadhurair vādyair vividha-nirmalaiḥ.* (30)

Their laughter, dance, glances, and enchanting playful speech stole every mind, while the companions' varied songs and pure instruments poured forth sweetness.

> *Veṣṭitāv ālibhis tau tu gacchantau vara-dampatī,*
> *Paraspara-rasāveśau prāptau tau vanam uttamam.* (31)

Surrounded by companions, the excellent Husband and Wife walked on, absorbed in one another's *rasa*, and reached the supreme forest.

> *Tatra divyāsane divyaṃ kāntena maṇi-veṣṭitam,*
> *Virājantau kalābhijñau dṛṣṭvā sakhyaḥ pramoditāḥ.* (32)

There they shone upon a divine seat encircled with radiant jewels. Seeing the Couple, knowers of every art, the companions rejoiced.

> *Pūjayantyaḥ prayatnena gandha-mālyaiḥ susaṃskṛtaiḥ,*
> *Varānna-pāna-bhogaiś ca tarpitāḥ prīti-saṃyutāḥ.* (33)

With loving care the companions worshipped them with fragrance and garlands, excellent foods, drinks, and enjoyments.

> *Pakva-tāmbūla-karpūraṃ dattvā tābhyāṃ prayatnataḥ,*
> *Nanṛtuḥ sumukhāl okya sarvā rāsa-rasotsukāḥ.* (34)

They carefully offered prepared betel and camphor. Gazing upon the beautiful faces of the Couple, all danced, eager for the *rasa* of the *rāsa*.

शब्दार्थ:—दोनों सरकार वन में किसी विशेष स्थान के दिव्य मणिमय सिंहासन पर विराजमान हुए । सभी कलाओं के मर्मज्ञ अपने सब सखी समाज को आनन्दित किये । सब सखियाँ फूल, माला, सुगन्धित आदि पदार्थों से तथा श्रेष्ठ अन्न पानादि भोगों से अति अनुराग पूर्वक तृप्त करते हुए पूजा कर रही हैं, बड़े प्रयत्न पूर्वक पके हुए पान के पत्ते विविध प्रकार के पदार्थों को दिये हुए युगल सरकार को देती हैं और बहुत से सखियाँ मुखचन्द्र को देखते हुए नृत्य कर रही हैं । सभी सखियाँ रास के रस के उत्सुकता से नृत्य कर रही हैं ॥३२, ३३, ३४॥

मू०—भ्रमद्भ्रमरिकायुतं बनमनंतमत्यद्भुतम् ।
निवेश्य जनकात्मजा रुचिर कंधरांसेभुजम् ॥ ३५ ॥

अन्वय:—जनकात्मजा रुचिर कंधरांसे भुजमनिवेश्य अद्भुतम् भ्रमरिका-युतां वनं भ्रमत् ॥३५,।

अर्थ:—श्री जानकी जी के अत्यन्त सुन्दर कन्धे पर अपने भुजा को डाल करके अति अद्भुत भ्रमरियों से युक्त वन में (श्रीराम जी) घूम रहे हैं ॥३५॥

मू०—नमामि रसभाजनं विजयभामिनि संयुतम् ।
विविक्त सरयूतटे रसिक मौलि मालं हरिम् ॥ ३६ ॥

अन्वय:—विविक्त सरयूतटे विजयभामिनि संयुतं रसभाजनं रसिक मौलि मालं हरिम् नमामि ॥३६॥

अर्थ:—एकान्त सरयू जी के किनारे पर अपनी विजय भामिनियों के सहित रस के एकमात्र पात्र रसिक शिरोमणि भगवान् श्रीराम जी को (मैं) नमस्कार करता हूँ ॥३६॥

इति श्रीमद्हनुमत्संहितायां परम रहस्ये महारासोत्सवे
श्रीहनुमदगस्त संवादे प्रथमोऽध्याय: ॥१॥

श्री सीताराम रहस्य समुद्रपोतायमान् श्री रसराजाम्वुज दिन मणि आचार्य
प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्री स्वामी
सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द मकरन्द रस-
लम्पट श्रीजानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा श्री-
'हनुमत्संहिता' श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका
प्रथमा अध्याय ॥ १ ॥

Chapter One - In the Wondrous Forest

The companions worshipped the Divine Couple with flowers, garlands, fragrances, excellent foods, prepared betel, and many other offerings. Many danced while gazing upon their moonlike faces, all eager for the *rasa* of the *rāsa*.

> *Bhramad-bhramarikā-yutaṃ vanam anantam atyadbhutam,*
> *Niveśya Janakātmajā-rucira-kandharāṃse bhujam.* (35)

Placing his arm upon the lovely shoulder of Janaka's daughter, Rama wandered through the boundless, wondrous forest filled with roaming bees.

> *Namāmi rasa-bhājanaṃ vijaya-bhāminī-saṃyutam,*
> *Vivikta-Sarayū-taṭe rasika-mauli-mālaṃ Harim.* (36)

On the secluded bank of the Sarayu I bow to Hari, crown-jewel of rasikas and vessel of *rasa*, united with his victorious beloved Lady.

Thus ends the First Chapter of the supremely secret *Śrī Hanumat Saṃhitā*, the great festival of the *mahārāsa*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

✻ अथ द्वितीयोऽध्यायः ✻

श्री अगस्त उवाच—

मू०—ततः किं कृतवान रामो जानकी प्रेमलंपटः ।
कथ्यतां रसिकश्रेष्ठ यन्मनः सुस्थिरं भवेत् ।। १ ।।

अन्वयः—रसिक श्रेष्ठ रामो जानकी प्रेम लम्पटः ततः किं कृतवान् कथ्यतां यन्मनः सुस्थिरं भवेत् ।।१।।

अर्थः—श्री अगस्त जी बोले कि हे रसिकों में श्रेष्ठ श्री हनुमान जी श्री जानकी जी के प्रेम में लम्पट हुए श्रीराम जी उसके बाद क्या किये, कहिये जिससे मेरा मन सुनकर सम्यक् स्थिर हो जाय ।।१।।

श्री हनुमानुवाच—

मू०—तौ तत्र दृष्ट्वा विपिनंमनोहरं वरं कदंबैः परिवेष्ठितं महत् ।
यन्मूल वेदी मणिमाल संयुता हेमैर्महार्हैपरितः प्रसन्ना ।।२।।

अन्वयः—महत् वरं कदम्बैः परिवेष्ठितं मनोहरं विपिनं यन्मूलवेदी महार्हैं हेमैः मणिमाल संयुता परितः प्रसन्ना तत्र तौ दृष्ट्वा ।।२।।

अर्थः—महान् श्रेष्ठ कदम्बों से चारों तरफ घिरा हुआ मनोहर वन को जिसके मध्य में बहुमूल्य स्वर्ण, मणियों के माला से चारों तरफ प्रकाशमान देख कर दोनों सरकार ।।२।।

मू०—प्रसन्नदीप्तौ परमासनस्थौ विराजमानौ च विभूषणांचितौ ।
परस्परावेश विलास संभ्रमौ शुचिस्मितौ नित्य वयः किशोरौ ।।३।।

अन्वयः—नित्यवयः किशोरौ विभूषणां चित्तौ परस्परावेश विलास संभ्रमौ परमासनस्थौ विराजमानौ प्रसन्नदीप्तौ शुचिस्मितौ ।।३।।

अर्थः—नित्य नवलकिशोर अवस्था वाले सुन्दर भूषणों से भूषित परस्पर आवेषित हुए विलास के उत्सुकता में प्रसन्न प्रकाशमान होकर पवित्र दिव्य सिंहासन में विराजे हुए मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं ।।३।।

मू०—नानासुगंधानि वनानि कानि प्रफुल्लितानीह समं समंतात् ।
द्विरेफमालाः शुभसंयुतानि पिबन्ति माध्वी करसानि सर्वतः ।।४।।

Original source - Scan 22 of 116

Chapter Two - The Kadamba Forest

Agastya said:

> *Tataḥ kiṃ kṛtavān Rāmo Jānakī-prema-lampaṭaḥ,*
> *Kathyatāṃ rasika-śreṣṭha yan manaḥ susthiraṃ bhavet.* (1)

O foremost rasika, what did Rama-passionately devoted to Janaki's love-do next? Tell me, so that by hearing it my mind may become completely steady.

Hanuman said:

> *Tau tatra dṛṣṭvā vipinaṃ manoharaṃ varaṃ kadambaiḥ pariveṣṭitaṃ mahat,*
> *Yan-mūla-vedī maṇi-māla-saṃyutā hemair mahārhaiḥ paritaḥ prasannā.* (2)

There the two beheld a vast and enchanting forest, excellent and encircled by kadamba trees. The platforms at their roots shone on every side with garlands of precious jewels and finest gold.

> *Prasanna-dīptau paramāsana-sthau virājamānau ca vibhūṣaṇāñcitau,*
> *Parasparāveśa-vilāsa-saṃbhramau śuci-smitau nitya-vayaḥ-kiśorau.* (3)

Radiant with joy, seated upon the supreme seat and adorned with beautiful ornaments, the eternally youthful Couple shone in sacred splendour. Absorbed in one another, thrilled by their play, they smiled gentle, pure smiles.

> *Nānā-sugandhīni vanāni kāni prakullitānīha samaṃ samantāt,*
> *Hireka-mālāḥ śubha-saṃyutāni pibanti mādhvīṃ karasāni sarvataḥ.* (4, continues)

On every side the many fragrant groves flowered all at once; auspicious garlands shimmered, while bees everywhere drank the honeyed essence.

अन्वय:—इह नाना सुगन्धानि वनानि कानि समं समंतात् प्रफुल्लितानि सर्वत: माध्वीकरसानि पिबन्ति द्विरेफमाला: शुभ संयुतानि ॥४॥

अर्थ:—इस कदम्ब वन में नाना प्रकार के अत्यन्त सुगन्धित वनों में अर्थात् अनेक ऋतुओं के अलग-अलग वनों में चारों तरफ एक समान रूप से फूल फूले हुए हैं। जिनमें चारों तरफ मधु के रसों को पीते हुए अति सुन्दर भौरों के माला या झुण्ड शोभित हो रहे हैं ॥४॥

मू०–पतंति मत्तारजसारुणांगा नयंति केचित्कुसुमाकरेषु ।
क्वचिन्मयूरा: परिनृत्ययंति गायन्ति कीरा: क्वचिद् प्रमेया: ॥५॥

अन्वय:—रजसा रूणांगामत्ता पतंति केचित्कुसुमाकरेषु नयन्ति क्वचिन्मयूरा: परिनृत्यन्ति क्वचित् अप्रमेया: कीरा: गायन्ति ॥५॥

अर्थ:—फूलों के पराग से रंगे हुए शरीर वाले मतवाले मतवाले भौंरे झुण्ड के झुण्ड गिर पड़ते हैं। कहीं पर भौंरे फूलों के गुच्छों पर बैठ कर डालों को झुका देते हैं। कहीं पर मोर बड़ा ही सुन्दर नृत्य करते हैं। कहीं पर तोते अद्भुत वाणी से गीत गाते हैं ॥५॥

मू०–अन्ये द्विजा जांवुनदांगनस्था निरीक्षयंते रघुवंशनाथम् ।
ध्यानेक्षणा: सद्यनिमेषणाश्च चित्तार्पिताश्चिन्मनसो वभूवु: ॥६॥

अन्वय:—अन्ये द्विजा जांबुनदांगनस्थ रघुवंशनाथम् निरिक्षयन्ते ध्यानेक्षणा: च सद्यनिमेषणाश्च चित्तार्पितश्चिन्मनसो वभूवु: ॥६॥

अर्थ:—अन्य कोई बहुत से पक्षी सुवर्णमयी आंगन में ही, बैठे सूर्य वंश के नाथ (दोनों सरकार) को एक दूसरे को दिखा रहे हैं। (बहुत से पक्षी) ध्यान मग्न हो जाते हैं फिर शीघ्र आँखें खोल करके दोनों सरकारों को देखते हुए अपने चित्त को अर्पित कर देते हैं। इस प्रकार चिन्मय चित्त वाले हो जाते हैं ॥६॥

मू०–तत: प्रतीक्ष्य श्रीराम: सीतया सह शोभनम् ।
काननं वकुलैर्जुष्टं परमानन्द दायकम् ॥ ७ ॥

अन्वय:— तत: सीतया सह श्रीराम: परमानन्द दायकम् वकुलैर्जुष्टं काननं शोभनं प्रतीक्ष्य ॥७॥

Chapter Two - Birds, Bees, and the Bakula Grove

The kadamba forest contained many exquisitely fragrant groves, one for each season, all flowering evenly on every side. Beautiful swarms of bees drank their honey and shone everywhere.

> *Patanti mattā rajasāruṇāṅgā nayanti kecit kusumākareṣu,*
> *Kvacit mayūrāḥ parinṛtyayanti gāyanti kīrāḥ kvacid aprameyāḥ.* (5)

Intoxicated bees, their bodies reddened by pollen, fell in swarms. Elsewhere they weighed down flowering branches; peacocks danced beautifully; innumerable parrots sang in wondrous voices.

> *Anye dvijā jāmbūnadāṅganasthā nirīkṣayante Raghuvaṃśa-nātham,*
> *Dhyānekṣaṇāḥ sadya-nimeṣaṇāś ca cittārpitāś cinmanaso babhūvuḥ.* (6)

Other birds sat in golden courtyards and pointed out the Lord of Raghu's line to one another. Some closed their eyes in meditation, then quickly opened them to behold the Couple; offering up their minds, they became conscious through and through.

> *Tataḥ pratīcya Śrī-Rāmaḥ Sītayā saha śobhanam,*
> *Kānanaṃ vakula-jūṣṭaṃ paramānanda-dāyakam.* (7)

Rama then went westward with Sita and beheld a lovely forest thick with bakula and malshri trees, a bestower of supreme bliss.

अर्थः—उसके बाद श्री किशोरी जी के सहित श्रीराम जी परम आनन्द देने वाले मौलसिरी आदि वृक्षों से युक्त अतिशय सुन्दर वन को देख करके ।।७।।

मू०—यत्रवृक्षालताढ्याश्च पारिजातहरश्रियः ।
सर्वेकिशोराः कैशोर्यैः बरपल्लव लंबिताः ।। ८ ।।

अन्वयः— यत्र लताढ्याः च वृक्षाः कैशोर्यैः वर पल्लव लम्बिताः सर्वे किशोराः पारिजात हरश्रियः ।।८।।

अर्थः—जहाँ पर लताओं से संयुक्त वृक्ष श्रेष्ठ लटकी हुई लताओं वाले सब किशोर किशोरी अवस्था वाले हैं । जो अपनी शोभा से कल्पवृक्ष की शोभा को हरण कर रहे हैं ।।८।।

मू०—प्रसूनवरभारेण नम्रशाखामही गताः ।
तद्गंधवायुनाशश्वत् पूरिता दशदिग्भुवः ।। ९ ।।

अर्थः—फूलों के बोझ से नम्र हुई शाखा जमीन की तरफ झुक गयी, उन शाखाओं के फूलों के सुगन्ध से एक रस दशदिशा सम्पूर्ण पृथ्वी सम्यक् प्रकार से भर गयी है ।।९।।

मू०—भ्रमन्ति भ्रमरः सर्वे मधुपानाखिलाशयाः ।
धावंतश्च पिबंतश्च पतंतश्च मुहुर्मुहुः ।। १० ।।

अन्वयः—मधुपानाखिलाशयाः सर्वे भ्रमराः धावंतश्च पिबंतश्च पतंतश्च मुहुर्मुहुः भ्रमन्ति ।।१०।।

अर्थः—फूलों के पराग पाने की चाहना से भ्रमरों के झुण्ड इधर उधर दौड़ते हैं, फूलों के मधु को पीते हैं, और मधुपान से उन्मत्त होना बार-बार झुण्ड के झुण्ड गिरते हैं ।।१०।।

मू०—तत्राद्भुतफलंरम्यं खादयंतः सुधासमम् ।
खगाः संतुष्ट मनसो नृत्यवंतः सुखोचिंताः ।। ११ ।।

अन्वयः—तत्र सुधासमं रम्यं अद्भुतफलं खादयन्तः सुखोचित्ता खगाः सन्तुष्ट मनसो नृत्यबन्तः ।।११।।

अर्थः—उस वन में (सुधासम) अमृत के समान दिब्य रमणीय फलों को खाते हुए, युगल सरकार के रुचि के अनुकूल सुखोचित पंक्षी सन्तुंष्ट मन हो करके नृत्य कर रहे हैं ।।११।।

Chapter Two - The Youthful Forest

Rama and Sita entered the exceedingly beautiful forest of flowering malshri and other trees that bestowed supreme delight.

> *Yatra vṛkṣā latāḍhyāś ca pārijātā haripriyāḥ,*
> *Sarve kiśorāḥ keśāḍhyā vara-pallava-lambitāḥ.* (8)

There the trees were entwined with vines and lovely as celestial pārijātas. All appeared eternally youthful, richly crowned with foliage and hung with finest new leaves, eclipsing even wish-fulfilling trees by their beauty.

> *Prasūna-vara-bhāreṇa namra-śākhā mahī-gatāḥ,*
> *Tad-gandha-vāyunā śaśvat pūritā daśa-dig-bhuvaḥ.* (9)

Their branches bowed toward the earth beneath the weight of excellent blossoms, whose perfume ceaselessly filled the earth in all ten directions.

> *Bhramanti bhramarāḥ sarve madhu-pānābhilāṣayā,*
> *Dhāvantaś ca pibantaś ca patantaś ca muhur muhuḥ.* (10)

Desiring the nectar of flowers, swarms of bees hurried everywhere, drinking their honey and, intoxicated by it, tumbling down again and again.

> *Tatrādbhuta-phalāny ādyan khagāḥ saṃtuṣṭa-mānasāḥ,*
> *Nṛtyavantaḥ sukhocittā mudā ramyāḥ sucintitāḥ.* (11)

There delighted birds ate marvellous, nectar-like fruits and danced with contented minds, rejoicing in harmony with the beautiful Couple.

मू०—यत्र भू: कांचनोदिव्या खचिता मणिमालकैः ।
नानावेदी दीप्यमाना मणिकुट्टिमशालिनी ॥ १२ ॥

अन्वयः—यत्र नानामणि कुट्टिमशालिनी नानावेदी दीप्यमाना मणिमालकैः खचिता दिव्य काँचनी भूः ॥१२॥

अर्थ:—जहाँ पर अनेक मणि के चूर्ण से सजी हुई अनेक वेदियों से प्रकाशमान मणिमालाओं से खचिता दिव्य सुवर्णमयी पृथ्वी है ॥१२॥

मू०—मयूरकीर कलनैर्मंडिता मधुरस्वरैः ।
सखीनां गनगांभीर्य सौंदर्य परिपूरिका ॥ १३ ॥

अन्वयः— मधुरस्वरैः मयूरवीर कलनैर्मंडिता भूः सखीनां गनगम्भीर्य सौन्दर्य परिपूरिका भूः ॥१३॥

अर्थ:—मधुर स्वर से मोर शुक आदि के कल्लोल से भूषित पृथ्वी सखियों के झुण्डों की गम्भीर सौन्दर्य से परिपूर्ण पृथ्वी ॥१३॥

मू०—सुखास्तरणविस्तीर्णा पर्यंकैरूपशोभिता ।
तत्र रामो महाबाहू रमते रमतांवरः ॥ १४ ॥

अन्वयः—सुखास्तरण विस्तीर्ण पर्यंकैरूप शोभिता तत्र भूः रमतां वर महावाहु रामः रमते ॥१४॥

अर्थ:—सुखमय बिछावनों से युक्त विस्तृत पलंगों से शोभित पृथ्वी है, वहाँ पर रमण करने वालों में श्रेष्ठ अजानवाहु श्रीराम जी रमण करते हैं ॥१४॥

मू०-ततः प्राप्तोवनं दिव्य माधवीमंजु मण्डितम् ।
नानामणि गणाकीर्णं विस्तृतं परमासनैः ॥ १५ ॥

अन्वयः—ततः नानामणि गणाकीर्णं परमासनैः विस्तृतं मंजुमण्डितं दिव्यं माधवी वनं प्राप्तः ॥१५॥

अर्थ:—उसके बाद श्रीराम जी अनेक मणियों से खचित महान् आसनों से बिस्तार वाला बड़ा सुन्दर भूषित दिव्य माधवी बन को पहुँचे ॥१५॥

मू०-मत्तालिमाल संघुष्टं कुंज पुञ्जैः सुवेष्टितं ।
महाह्लाद करं कान्तं कान्ताचित्तापहारकम् ॥ १६ ॥

Original source - Scan 25 of 116

Chapter Two - The Divine Madhavi Forest

> *Yatra bhūḥ kāñcanī divyā khacitā maṇi-mālakaiḥ,*
> *Nānā-vedī-dīpyamānā maṇi-kuṭṭima-śālinī.* (12)

There the divine golden earth was inlaid with many jewelled garlands, bright with numerous altars and paved in many-colored powdered gems.

> *Mayūra-kīra-kalanaiḥ maṇḍitā madhura-svaraiḥ,*
> *Sakhīnāṃ gana-gāmbhīrya-saundarya-paripūrikā.* (13)

Sweet cries of peacocks and parrots adorned the ground, whose beauty was completed by the profound splendour of the hosts of companions.

> *Sukhāstaraṇa-vistīrṇā paryaṅka-rūpa-śobhitā,*
> *Tatra Rāmo mahā-bāhū ramate ramatāṃ varaḥ.* (14)

Spread with pleasant coverings and graced by couch-like seats, that land became the playground of long-armed Rama, foremost of all lovers.

> *Tataḥ prāpto vanaṃ divyaṃ Mādhavī-mañju-maṇḍitam,*
> *Nānā-maṇi-gaṇākīrṇaṃ vistṛtaṃ paramāsanaiḥ.* (15)

He next reached the divine Madhavi forest, beautifully adorned and spacious, filled with hosts of jewels and supreme seats.

> *Mattāli-mālā-saṃjuṣṭaṃ kuñja-puñjaiḥ suveṣṭitam,*
> *Mahāhlāda-karaṃ kāntaṃ kāntā-cittāpahārakam.* (16)

Garlands of intoxicated bees and clusters of bowers surrounded it. Lovely and increasing supreme delight, it stole the hearts of lovers.

अन्वयः—मत्तालिमालसंघुष्टं कुञ्जपुञ्जैः सुवेष्टितं कान्ता चित्तापहारकम् महाह्लाद करं कान्तम् ॥१६॥

अर्थः—मत्तवाले भौरों के गुञ्जारों से गुञ्जित कुञ्ज समूह से सुन्दर घिरा हुआ कान्ताओं के चित्त का अपहरण करने वाला, महाआनन्द वर्धक प्रकाश वाला ॥१६॥

मू०-पक्षि संघैश्च निनदैर्नादितं परमाद्भुतम् ।
मदनोन्मादन करं श्रीमदूर्जित सुप्रभम् ॥ १७ ॥

अन्वयः—परमाद्भुतं पक्षि संघैश्च निनदैनादितं मदनोन्मादन करं श्रीमद् उर्जित सुप्रभम् ॥१७॥

अर्थः—परम अद्भुत पंक्षी समूहों के अनेक प्रकार के नादों से निनादित (गुञ्जित) मदन (कामदेव) के उन्माद को बढ़ाने वाले शोभा में अत्यन्त चढ़ा-बढ़ा सुन्दर प्रकाश वाला (माधवी वन) हैं ॥१७॥

मू०-परस्परं भाषयंतौ केलि कौतूहलान्वितौ ।
तत्र प्रेमरसावेशौ विहरंतौ सुदम्पती ॥ १८ ॥

अन्वयः—तत्र परस्परं भाषयन्तौ प्रेमरसावेषौ सुदम्पती केलिकौतुहलान्बितौ विहरन्तौ ॥१८॥

अर्थः—उस माधवी वन में आपस में वार्तालाप करते हुए केलि के कौतुहलों में रंगे हुए दोनों सुन्दर दम्पती श्री सीताराम जी प्रेम रसाविष्ट होकर बिहार कर रहे हैं ॥१८॥

मू०-महद्वनं समायेतौ सर्वाभरणभूषितौ ।
कर्पूर पक्वतांबूल चर्वणादिभिरावृतौ ॥ १६ ॥

अन्वयः—सर्वाभरणभूषितौ कर्पूरपक्वताम्बूल चर्वणादि भिरावृत्तौ महवनं समायेतौ ॥१६॥

अर्थः—सब प्रकार के भूषणों से भूषित अंग वाले कर्पूर आदि मसालों से पूर्ण पके पान के बीरे को चबाने वाले समाज से घिरे हुए विशाल वन में प्रवेश किये ॥१६॥

Original source - Scan 26 of 116

Chapter Two - Play in the Madhavi Forest

> *Pakṣi-saṃghaiś ca ninadair nāditaṃ paramādbhutam,*
> *Madana-unmādana-karaṃ śrīmad-ūrjita-suprabham.* (17)

The supremely wondrous grove resounded with many calls from flocks of birds. It awakened love's ecstasy and shone with abundant, magnificent splendour.

> *Parasparaṃ bhāṣayantau keli-kautūhala-anvitau,*
> *Tatra prema-rasāveśau viharantau su-dampatī.* (18)

Conversing together, eager for the delights of play, the beautiful Husband and Wife wandered there immersed in the *rasa* of love.

> *Mahad vanaṃ samāyātau sarvābharaṇa-bhūṣitau,*
> *Karpūra-pakva-tāmbūla-carvaṇād abhirājitau.* (19)

Adorned with every ornament, the Couple entered the vast forest. Chewing prepared betel scented with camphor, they shone in beauty. With limbs adorned in every way and surrounded by flowering kadamba and other trees, they moved within the great grove.

मू०-कटाक्ष क्षेपनाशक्तौ हास्यलावण्यलालितौ ।
कंदर्प्प दीप्ति दर्प्पघ्नौ महामाधुर्यं मण्डितौ ॥ २० ॥

अन्वयः—हास्यलावण्य लालितौ कटाक्ष क्षेपनशक्तौ कंदर्प्प दीप्ति दर्प्पघ्नौ महामाधुर्यै मण्डितौ ॥२०॥

अर्थः—हास्य विलास से लालित हुए अनेक प्रकार के कटाक्षों से आसक्त कामदेव के भी प्रकाश के अभिमान को नाश करते हुए दोनों सरकार महामाधुर्यं से भूषित हो रहे हैं ॥२०॥

मू०-बाणीवाचा गम्यरूपौ रतिशास्त्र विशारदौ ।
तडिद्‌वन समाकारौ लोक लोचन लोभिनौ ॥ २१ ॥

अन्वयः—तडितघन समाकारौ लोक लोचन लोभिनौ रति शास्त्रविशारदौ बाणी वाचाऽगम्य रूपौ ॥२१॥

अर्थः—बिजली और मेघ के समान दोनों सरकार सभी अपने लोक आश्रित लोचनों को लोभित करने वाले रतिशास्त्र में ऐसे महापण्डित हैं जो मन, बाणी से अगम्य रूप हैं ॥२१॥

मू०-तत्र नानाबिधाक्रीड़ा क्रीड़मानौ सुनर्मभिः ।
ततः प्रविश्य श्रीरामः परमानन्द दायकम् ॥ २२ ॥

अन्वयः—तत्र सुनर्मभिः नानाविधा क्रीडा क्रीडमानौ तत्र श्रीरामः परमानन्द दायकम् (वृन्दावनं) प्रविश्य ॥२२॥

अर्थः—उस उपरोक्त स्थान में बड़ी मधुरता युक्त नानाविधि के विलासों से देखते हुए, उसके बाद श्रीराम जी परमानन्द दायक वृन्दावन नामक बन में प्रवेश किये ॥२२॥

मू०-बनं वृन्दावनं नाम सर्वध्यानमयं परम् ।
तत्र वृन्दासखी साक्षात्सेवतेऽनिशमुत्तमम् ॥ २३ ॥

अन्वयः—सर्वध्यानमयं परं (वनं) तत्र साक्षात्वृन्दा सखी अनिशं उत्तमं सेवते ॥२३॥

अर्थः—सभी ध्यानियों के ध्यान से परे उस वृन्दावन नामक वन में साक्षात्वृन्दा सखी जी दिन-रात उत्तम प्रकार से सेवा करती हैं ॥२३॥

Chapter Two - From Madhavi Grove to Vrindavan

> *Kaṭākṣa-kṣepa-nānāśair hāsya-lāvaṇya-lālitau,*
> *Kandarpa-dīpti-darpaghnau mahā-mādhurya-maṇḍitau.* (20)

Delighting in laughter, grace, and countless sidelong glances, the Couple destroyed the pride of Kama's radiance and were adorned with supreme sweetness.

> *Vāṇī-vācāgamy a-rūpau rati-śāstra-viśāradau,*
> *Taḍid-ghana-samākārau loka-locana-lobhinau.* (21)

Like lightning beside a raincloud, their forms enticed every eye. Masters of the science of love, they were beyond the reach of speech and language.

> *Tatra nānā-vidhā krīḍāḥ krīḍamānau su-narmabhiḥ,*
> *Tataḥ praviśya Śrī-Rāmaḥ paramānanda-dāyakam.* (22)

After enjoying many refined and tender sports there, Rama entered the grove called Vrindavan, giver of supreme bliss.

> *Vanaṃ Vṛndāvanaṃ nāma sarva-dhyānamayaṃ param,*
> *Tatra Vṛndā-sakhī sākṣāt sevate 'niśam uttamam.* (23)

That supreme forest, Vrindavan, is composed entirely of meditation. There the companion Vrinda herself renders the highest service day and night.

मू०–बज्रवैदूर्यमाणिक्य मण्डिता भूः सुविस्तृता ।
नाना कुञ्ज कलापैश्च वेष्टिता हेमवल्लिभिः ॥ २४ ॥

अन्वयः—(तत्र) भूः वज्र वैदूर्यमाणिक्य मण्डिता सुविस्तृता नाना कुञ्ज कलापैश्च हेमवल्लिभिः वेष्टिता ॥२४॥

अर्थः—वह वृन्दावन की भूमि हीरा, वैदूर्य आदि माणिक्यों से भूषित विस्तार वाली है, जहाँ पर बिविध प्रकार के सुन्दर कुञ्जों में पक्षी भ्रमरादिकों के कल्लोल से तथा सुवर्णमयी लताओं से घिरी हुई हैं ॥२४॥

मू०–बहन्तित्रिविधावाता रंजिता पुष्परेणुभिः ।
प्रभयाभासमाना सा मनोवाचामगोचरा ॥ २५ ॥

अन्वयः—त्रिविधावाता वहन्ति पुष्परेणुभिः रंजिता सा प्रभयाभास माना मनोवाचामगोचरा ॥२५॥

अर्थः—जहाँ पर मन्द, सुगन्ध, शीतल वायु बह रही है, फूलों की पराग के रंगों से भूमि रंग रही है । अपने प्रकाश से स्वयं प्रकाशमान हो, रही है अतः मन वाणि के बिषय से परे हैं ॥२५॥

मू०–गुञ्जनमधुव्रतश्रेणी नानाद्विजसमाकुला ।
रमते तत्र बैदेह्या सहरामो रसात्मकः ॥ २६ ॥

अन्वयः—मधुव्रत श्रेणी गुञ्जमाना नानाबिधि समाकुला रसात्मकः रामः तत्र बैदेह्या सह रमते ॥२६॥

अर्थः—जहाँ भौरों के झुण्डों का गुञ्जार मचा है । अनेक प्रकार के पंक्षियों से वन भरा है । रसमय भाव वाले रसः स्वरूप श्रीराम जी उस भूमि पर बैदेही जी के संग रमण कर रहे हैं ॥२६॥

मू०–विलासनिपुणा सख्यस्ताभिः सहविलासकृत् ।
विचित्रां वरभूषाभिर्भासमानाभिरावृता ॥ २७ ॥

अन्वयः—विचित्रां वरभूषाभिर्भासमानाभिः विलास निपुणा सख्यः आवृता ताभिः सह विलास कृता ॥२७॥

अर्थः—विचित्र श्रेष्ठ भूषणों से भूषित एवं बिलास में प्रवीण सखियाँ घेरे हुई हैं, उस सखियों के साथ–साथ भी विलास कर रहे हैं ॥२७॥

Chapter Two - Vrindavan

> *Vraja-vaidūrya-maṇibhir maṇḍitā bhūḥ suvistṛtā,*
> *Nānā-kuñja-kalāpaiś ca veṣṭitā hema-vallibhiḥ.* (24)

Vrindavan's spacious ground was adorned with vaidurya gems, surrounded by many lovely bowers and golden vines. Birdsong and the hum of bees filled the exquisite groves.

> *Vahanti vividha-vātā rañjitā puṣpa-reṇubhiḥ,*
> *Prabhayā bhāsamānā sā mano-vācām agocarā.* (25)

Gentle, fragrant breezes blew, colored by flower pollen. The land shone by its own light and lay beyond mind and speech.

> *Guñjan-madhuvrata-śreṇī nānā-vidhi-samākulā,*
> *Ramate tatra Vaidehyā saha Rāmo rasātmakaḥ.* (26)

Rows of humming bees filled the grove, alive with every variety of beauty. There Rama, embodiment of *rasa*, sported with Vaidehi.

> *Vilāsa-nipuṇāḥ sakhyaḥ saha-vilāsa-hetavaḥ,*
> *Vicitro vara-bhūṣābhir bhāsamānābhir āvṛtau.* (27)

The companions, expert in divine play and its facilitators, surrounded the Couple in wondrous and excellent ornaments, joining in their sport.

मू०-ततो मंदारकं नाम वनं सर्ववनाद्वरं ।
सुखदं शुभदं साक्षाद्ब्रह्म ज्योतिर्मयं परम् ॥ २८ ॥

अन्वयः—ततः सुखदं शुभदं साक्षात्ब्रह्म ज्योतिर्मयपरं सर्वं वनादिवरं मन्दारकं नामवनम् ॥२८॥

अर्थः—इसके बाद महासुखदाई शुभदाई साक्षात्ब्रह्म ज्योतिर्मय मण्डल से परे सभी वनों में सर्वश्रेष्ठ मन्दार नामक महावन है ॥२८॥

मू०-द्विजालिकुलकलितं कामिनां कामदं परम् ।
सर्वपुष्प फलोपेतं मधुभारैर्विलंवितम् ॥ २९ ॥

अन्वयः—द्विजालि कुलकलितं सर्वपुष्पफलोपेतं मधुभारैर्विलंवितं कामिनां परं कामदम् ॥२९॥

अर्थः—पक्षी भौंरादिकों से गुञ्जित सभी प्रकार के फूलों और फलों से परिपूर्ण भौरों के मधुभार से लटके हुए, कामियों के परम काम देने वाले हैं ॥२९॥

मू०-बेदी मण्डप संवाधं मणिस्तम्भैर्विभूषितम् ।
पद्मरागस्य पद्माभस्सोपानैरुपशोभितम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—मणिस्तम्भैर्विभूषितं पद्मरागास्यपद्माभसोपानैरूप शोभितं वेदी-मण्डप सम्बाधम् भाति ॥३०॥

अर्थः—मणियों के खम्भों से विभूषित पद्मराग मणि के कमल के समान शोभा वाली सीढ़ियों से सुशोभित बेदी और मण्डपों से वन भरा हूआ है ॥३०॥

मू०-अतीव निर्मलं कान्तं कामिनी काम वर्द्धनम् ।
बिनोदयन्नात्मजायां तत्ररामो रराम ह ॥ ३१ ॥

अन्वयः—अतीव निर्मलं कान्तं कामिनी कामवर्द्धनम् तत्र आत्मजायां विनोदयन रामो रराम ह ॥३१॥

अर्थः—अत्यन्त निर्मल प्रकाश वाली, कामिनियों के काम को बढ़ाने वाली, उस भूमि पर अपनी प्रिया पत्नी को विनोदित करते हुए श्रीराम जी आश्चर्यमय रमण कर रहे हैं ॥३१॥

मू०-बिहरंतौ वनेतस्मिन्हरिचन्दन सञ्ज्ञिते ।
यत्र बृक्षालताः कुञ्जाः हेमवल्कल शालिनः ॥ ३२ ॥

Original source - Scan 29 of 116

Chapter Two - The Mandara Forest

> *Tato Mandārakaṃ nāma vanaṃ sarva-vanād varam,*
> *Sukhadaṃ śubhadaṃ sākṣād brahma-jyotirmayaṃ param.* (28)

Beyond the radiant sphere of Brahman lay Mandara, foremost of all forests, directly composed of supreme spiritual light and bestowing happiness and blessing.

> *Dvijāli-kula-kalitaṃ kāmināṃ kāmadaṃ param,*
> *Sarva-puṣpa-phalopetaṃ madhu-bhārair vilambitam.* (29)

It rang with birds and bees, overflowed with every flower and fruit, and its branches bent beneath the bees' burden of honey. It fulfilled lovers' highest desires.

> *Vedī-maṇḍapa-saṃbādhaṃ maṇi-stambhair vibhūṣitam,*
> *Padmarāgasya padmābha-sopānair upaśobhitam.* (30)

Altars and pavilions filled the forest, adorned with jewelled columns and lotus-like stairways of ruby.

> *Atīva nirmalaṃ kāntaṃ kāminī-kāma-vardhanam,*
> *Vinodayann ātmajāyāṃ tatra Rāmo rarāma ha.* (31)

Pure and radiant, increasing a lover's desire, that ground became Rama's place of play as he delighted his beloved Janaki.

> *Viharantau vanaitasmin Hari-candana-saṃjñite,*
> *Yatra vṛkṣa-latā-kuñjā hema-valkala-śālinaḥ.* (32)

The Couple then wandered in the forest called Harichandana, where trees, vines, and bowers wore bark of gold.

मू०—नानाप्रसून प्रवरा युक्ता मत्तमधुव्रतैः।
खगैः कनकचित्रांगैः कूजद्भिरभिनंदिताः ॥ ३३ ॥

मू०—सुरत्नमणि माणिक्य वेदी मन्दिर मण्डिताः।
सखीनां गान कलया सुगंधानिल सेविताः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—यत्र हेमवल्कलशालिनः वृक्षलताः कुञ्जाः नाना प्रसून प्रवरा मत्तमधुव्रतैः युक्ताः कनकचित्रांगैः कूजद्भिः खगैः अभिनन्दिता सुरत्नमणि माणिक्य वेदी मन्दिर मण्डिताः सुगंधानिल सेविताः सखीनां गान कलया हरिचन्दन संज्ञिते तस्मिन् वने विहरन्तौ ॥ ३२, ३३, ३४ ॥

अर्थः—जहाँ पर सुवर्णमय वलकल वाले वृक्ष लता कुञ्ज हैं और नाना प्रकार के पुष्पों (फूलों) की महानता से मत्तवाले भ्रमर पराग पान कर रहे हैं, विचित्र अंग वाले बहुत से पक्षी अपने बोली से वन को आनन्दित किये हुए हैं, (तथा जहाँ पर) सुन्दर मणि माणिक्यों से रचित वेदी मन्दिर वन भर में भूषित है सुगन्धित वायु से सुसेवित सखियों के गान के कला उस हरि चन्दन वन में दोनों सरकार विहार कर रहे हैं। (३२, ३३, ३४)

मू०—क्रीडयंश्च ततः श्रीमान् ययौ वनमनुत्तमम्।
पारिजात द्रुमैर्यत्र बेष्टितं परमाद्भुतम् ॥ ३५ ॥

अन्वयः—ततः श्रीमान् रामः क्रीडयन् यत्र परमाद्भुतम् पारिजात द्रूमैः बेष्टितं उत्तमं वनं ययौ ॥३५॥

अर्थः—इसके बाद श्रीमान् रघुनाथ जी क्रीड़ा करते कराते हुए जहाँ पर परम अद्भुत परिजात वृक्षों से घिरा हुआ उत्तम वन है वहाँ गये। ।३५॥ उसी वन में—

मू०—नाना रत्नमणिस्तम्भ कदंबैरन्वितं गृहम्।
सर्वभोगैसमायुक्तं मनोभिलषितं च यत् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—सर्वभोगैः समायुक्तं मनोभिलषितं च यत् नानामणिस्तम्भ कदम्बैरन्वितं गृहम् ॥३६॥

अर्थः—सभी प्रकार के भोग सम्पत्तियों से परिपूर्ण मन के अभिलास को पूर्ण करने वाला, जहाँ नानामणियों के खम्भा समूहों से संयुक्त महल हैं ॥३६॥

मू०—मन्मथाविष्टहृष्टः सन् रमते सीतया सह।
ततः संतान सम्पन्ने विपिने कुसुमाकरे ॥ ३७ ॥

Chapter Two - Harichandana and Parijata Forests

> *Nānā-prasūna-pravarā yuktā matta-madhuvrataiḥ,*
> *Khagāḥ kanaka-citrāṅgāḥ kūjadbhir abhinanditāḥ.* (33)

Excellent blossoms of every kind intoxicated pollen-drinking bees, while many-colored golden birds delighted the grove with their cries.

> *Suratna-maṇi-māṇikya-vedī-mandira-maṇḍitāḥ,*
> *Sakhīnāṃ gāna-kalayā sugandhānila-sevitāḥ.* (34)

Altars and temples of fine gems and rubies adorned the forest. Fragrant breezes served it, and the companions filled it with the art of song.

> *Krīḍayaṃś ca tataḥ śrīmān yayau vanam anuttamam,*
> *Pārijāta-drumair yatra veṣṭitaṃ paramādbhutam.* (35)

Continuing his play, glorious Rama entered another unsurpassed forest, wondrously encircled by parijata trees.

> *Nānā-ratna-maṇi-stambha-kadambair anvitaṃ gṛham,*
> *Sarva-bhogaiḥ samāyuktaṃ mano-'bhilaṣitaṃ ca yat.* (36)

There stood a palace joined to clusters of columns made from many jewels, complete with every delight and fulfilling all the heart's desires.

> *Manmathāviṣṭa-hṛtaḥ san ramate Sītayā saha,*
> *Tataḥ santāna-saṃpanne vipine kusumākare.* (37)

His heart seized by love, Rama sported there with Sita amid a flowering grove rich in santana trees.

अन्वयः—ततः संतान सम्पन्ने कुसुमाकरे विपिने मनमथाविष्ट हृष्टः सन् सीतया सह रमते ॥३७॥

अर्थः—संतान नामक वृक्षों से सम्पन्न विविध फूल समूहों से युक्त वन में कामायुक्त शक्ति हर्ष से श्री सीता जी के सहित रमण करने लगे ॥३७॥

मू०—भ्रमद्भ्रमरसंघुष्टे भ्राजते परमान्विते ।
सखीनां गीत वादित्रे महापीठे मनोरमे ॥ ३८ ॥

अन्वयः—परमान्विते, भ्रमद्भ्रमरसंघुष्टे सखीनां गीत वादित्रे मनोरमे महापीठे भ्राजते ॥३८॥

अर्थः—पराग से रंगे हुए घूमने वाले भौरों (भ्रमरों) कुञ्ज में सखियों के गीत बादित्र आवाज में, मन रमणीय महापीठ के ऊपर परमा शोभा श्री किशोरी जी से युक्त सरकार शोभित हैं ॥३८॥

मू०—परमाद्भुत संकाशैः हास्यलास्य विनोकृत् ।
ययावन्यद्वनं यत्र नागकेशर मण्डितम् ॥ ३९ ॥

अन्वयः—परमाद्भुत संकाशैः हास्य लास्य विनोदकृत् । यत्र नागकेशर अन्यद्वनं तत्र ययौ ॥३९॥

अर्थः—परम अद्भुत आश्चर्य सदृश्य हास्य मन्दमुसक्यान (चेष्टायें) से विनोद करते हुए जहाँ नागकेशर नामक वृक्षों से विभूषित अन्य वन हैं, वहाँ गये ॥३९॥

मू०—यस्याविदूरे सरयू तीरं परम पावनम् ।
दृष्टवा सर्वाः प्रहृष्टास्ताः सख्यः प्रेमप्रपूरिताः ॥४०॥

अन्वयः—यस्याविदूरे परम् पावनं सरयू तीरम् दृष्ट्वा ताः सर्वाः सख्यः प्रेमप्रपूरिताः प्रहृष्टाः (अभूवन्) ॥४०॥

अर्थः—वे सभी प्रेम से भरी सखियाँ जिस नागकेशर वन के पास ही में परम पवित्र सरयू जी के किनारे को देख अतिप्रसन्न हो गयीं ॥४०॥

मू०—गायंत्योनृत्ययंत्यश्च हासयंत्यः परस्परं ।
परमानन्द जलधौ मग्नाकौतूहलन्विताः ॥ ४१ ॥

अन्वयः—गायंत्योनृत्ययंत्यश्च परस्परम् हासयंत्यः कौतूहलान्विताः परमानन्द जलधौ मग्ना ॥४१॥

Original source - Scan 31 of 116

Chapter Two - The Nagakeshara Forest and Sarayu

The santana grove overflowed with diverse masses of flowers. Filled with love's power and delight, Rama sported there with Sita.

> *Bhramad-bhramara-saṃghuṣṭe bhrājate paramānvite,*
> *Sakhīnāṃ gīta-vāditre mahāpīṭhe manorame.* (38)

On a delightful great throne the Lord shone beside his supreme beloved, while pollen-stained bees hummed and companions sang and played instruments.

> *Paramādbhuta-saṃkāśair hāsya-lāsya-vinoda-kṛt,*
> *Yayāv anyad vanaṃ yatra nāgakeśara-maṇḍitam.* (39)

Enjoying wondrous laughter, dance, and playful gestures, he went to another forest adorned with nagakeshara trees.

> *Yasyāvidūre Sarayū-tīraṃ parama-pāvanam,*
> *Dṛṣṭvā sarvāḥ prahṛṣṭās tāḥ sakhyaḥ prema-prapūritāḥ.* (40)

Close beside it lay the supremely sacred bank of the Sarayu. Seeing it, all the companions, filled with love, rejoiced exceedingly.

> *Gāyantyo nṛtyayantyaś ca hāsayantyaḥ parasparam,*
> *Paramānanda-jaladhau magnā kautūhalānvitāḥ.* (41)

They sang and danced, made one another laugh, and-filled with innumerable delights-plunged into the ocean of supreme bliss.

अर्थः—गायन करती हुई, नृत्य करती हुई, आपस में एक दूसरे को हँसाती हुई, अनेक प्रकार के परम कौतुकों से पूर्ण परम आनन्दमय जल समुद्र में डूब गयी ॥ ४१ ॥

मू०—एवं पुण्यारण्यानि चावृतानि नवानि च ।
तन्मध्येऽशोक वनिका सर्वेषामप्यगोचरा ॥ ४२ ॥

अन्वयः—एवं नवानि चावृतानि पुण्यारण्यानि तन मध्ये सर्वेषां अप्य-गोचरा अशोक वनिका ॥४२॥

अर्थः—इस प्रकार के नया-नया रूप धारण करने वाले चारों तरफ से घिरे हुए बहुत से पबित्र वन हैं, उनके बीच में सभी लोगों के इन्द्रियों के विषयों से परे श्री अशोक वनिका जी हैं ॥४२॥ यह अशोक वन—

मू०—पुंसामगोचरं स्थानं केवलं प्रेमदायकम् ।
नारीभाव समायुक्तास्तेषां दृश्यं भवेद्ध्रुवम् ॥ ४३ ॥

अन्वयः—केवलं प्रेमदायकम् पुंसामगोचरं स्थानं (ये) नारी भाव समायुक्ताः तेषां दृश्यं ध्रुवं भवेत् ॥४३॥

अर्थः—केवल अनुराग देने वाला यह अशोक बन का स्थान अहंकारमय (पुरुषार्थाभिमानी) पुरुषों के इन्द्रियों से अतीत है, जो नारीभाव से परिपूर्ण है उन्हीं के दृष्टि का विषय निश्चय करके होता है ॥४३॥

मू०—सुरुचिरवनं विलोक्य सर्वं विहरण शीलोलीलयारामः ।
जयति जनकजाजानिरीशोधीरोदात्त गुणाकरो रसिकः ॥ ४४ ॥

अन्वयः—सर्वं सुरुचिर वनं विलोक्य धीरोदात्त गुणाकरो रसिकः जनकजा जानोरीशः लीलया विहरणशीलः जयति ।

अर्थः—सुन्दर सभी रुचिकर वनों को देखते हुए धीर उदात् गुणों के खानि रसिक शिरोमणि जनकजा हैं, प्राण जिनकी ऐसे स्वामी लीला पूर्वक विहार करते हुए जय-जय कार को प्राप्त हों ॥४४॥

इति श्रीमद्हनुमत्संहितायां परम रहस्ये महारासोत्सवे
श्रीहनुमदगस्त संवादे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

श्रीसीताराम रहस्य रसराजैकनिष्ठ दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणार-विन्द मकरन्द रसलम्पट श्री जानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा "श्रीहनुमत्संहिता" श्रीसीतारामरहस्य प्रकाशिका टीका द्वितीयोऽध्यायः।

Original source - Scan 32 of 116

Chapter Two - The Hidden Ashoka Grove

> *Evaṃ puṇyāraṇyāni cāvṛtāni navāni ca,*
> *Tan-madhye 'śoka-vanikā sarveṣām apy agocarā.* (42)

Thus many sacred forests, ever assuming new forms, surrounded the Couple. In their midst lay the Ashoka grove, beyond the senses of all ordinary beings.

> *Puṃsām agocaraṃ sthānaṃ kevalaṃ prema-dāyakam,*
> *Nārī-bhāva-samāyuktās teṣāṃ dṛśyaṃ bhaved dhruvam.* (43)

That place, giver of love alone, is inaccessible to men ruled by ego and pride of attainment. It surely becomes visible only to those inwardly joined to the feminine devotional disposition.

> *Surucira-vanaṃ vilokya sarvaṃ viharaṇa-śīlo līlayā Rāmaḥ,*
> *Jayati Janakajā-jānir īśo dhīrodātta-guṇākaro rasikaḥ.* (44)

Victory to Rama, Lord and beloved husband of Janaka's daughter, crown of rasikas and mine of noble, majestic qualities, who playfully wanders through all these lovely forests.

Thus ends the Second Chapter of the supremely secret *Śrī Hanumat Saṃhitā*, the great festival of the *mahārāsa*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

* अथ तृतीयोऽध्याय *

श्री अगस्त उवाच—

मू०—श्रुत्वा श्रुत्वा रास रसं तववक्रान्महाकपे ।
न तृप्यति मनोमेद्य हविर्भुग्घविषा यथा ।। १ ।।

अन्वयः—हे महाकपे तव वक्रान् रासरसं श्रुत्वा श्रुत्वा अद्य मे मनः यथा हविर्भूक् हबिषा तथा न तृप्यति ।।१।।

अर्थः—श्री अगस्त जी बोले कि हे महाकपी श्री हनुमान जी आपके मुखारविन्द से श्रीराम जी के रास रस को सुनते-सुनते आज वैसे ही मेरा मन जैसे अग्नि देवता द्रब्य पदार्थ से तृप्ति नहीं होते हैं, वैसे ही नहीं होता है ।।१।।

श्री हनुमान उवाच—

मू०—मुनिवर्य महाभाग धन्य धन्योसिधन्यकृत ।
यथा स्पर्शमणेः स्पर्शाल्लोहोपि स्वर्णतां व्रजेत् ।। २ ।।

अन्वयः—महाभाग मुनिवर्य यथास्पर्शमणेः स्पर्शात् लोहोऽपि स्वर्णतां व्रजेत तथा धन्यकृत धन्य धन्योसि ।।२।।

अर्थः—हे महाभागशाली, मुनि श्रेष्ठ श्री अगस्त जी महाराज जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोनापन को प्राप्त कर लेता है, ऐसे ही आप धन्यमय पुण्य कर्त्तब्य करने वालों में अतिसय धन्य हैं ।।२।।

मू०—ततः सरय्वाः पुलिनं पवित्रं सुविस्तृतं कानक पादपैर्युतम् ।
प्रफुल्लिता पादशिखैर्विचित्रैर्भास्वन्मयूखैः परितः प्रसन्नम् ।।३।।

अन्वयः—ततः कानक पादपैर्युतं विचित्रैः प्रफुल्लिता पादशिखैः परितः भास्वन्मयूखैः प्रसन्नं सुविस्तृतं पवित्रं सरय्वा पुलिनम् ।।३।।

अर्थः - इसके बाद सोना के वलकल वालों वृक्षों से युक्त फूले हुए मूल से शिखर पर्यन्त विचित्र प्रकाशमान किरणों वाले फूलों से चारों तरफ आनन्दमय अति विस्तार पवित्र सरयू के किनारे ।।३।।

मू०—यत्सौरभैः स्वादुमयैः सदागतेर्गतागतैः पूरितविश्वखण्डम् ।
परिभ्रमंत्यो मधुपानमत्ता यत्रालि मालाः किलमंडिताश्च ।। ४ ।।

Chapter Three - The Jeweled Bank of the Sarayu

Agastya said:

> *Śrutvā śrutvā Rāma-rasaṃ tava vaktrān mahākape,*
> *Na tṛpyati mano me 'dya havir-bhuk haviṣā yathā.* (1)

O great monkey, though I hear the *rasa* of Rama again and again from your lotus mouth, my mind is still not satisfied today-just as fire, the eater of offerings, is never sated by clarified butter.

Hanuman said:

> *Munivarya mahābhāga dhanya-dhanyo 'si dhanyakṛt,*
> *Yathā sparśa-maṇeḥ sparśāl loho 'pi svarṇatāṃ vrajet.* (2)

O foremost sage, greatly blessed Agastya, you are blessed beyond the blessed and sanctify every worthy deed. Just as iron becomes gold through contact with the philosopher's stone, so the hearer is transformed through contact with this sacred account.

> *Tataḥ Sarayvāḥ pulinaṃ pavitraṃ suvistṛtaṃ kānaka-pādapair yutam,*
> *Praphullitā-pāda-śikhair vicitrair bhāsvan-mayūkhaiḥ paritaḥ prasannam.* (3)

Thereafter they came to the sacred, spacious bank of the Sarayu. Golden-barked trees stood there, flowering from root to crown; their wondrous blossoms cast radiant beams and filled every side with delight.

> *Yat saurabhaiḥ svādumayaiḥ sadā gate-gatāgataiḥ pūrita-viśva-khaṇḍam,*
> *Paribhramantyo madhu-pāna-mattā yatrāli-mālāḥ kila maṇḍitāś ca.* (4, continues)

Sweet fragrances moved continually upon the coming and going breeze and filled the whole expanse. Garlands of bees, intoxicated by drinking honey, circled everywhere and adorned the riverbank.

अन्वयः—यत् स्वादुमयैः सौरभैः सदागतेगतागतैः पूरित विश्वखण्डम् यत्रअलिमालाः किलमण्डिताश्च मधुपानमत्ताः परिभ्रमन्त्यो ॥४॥

अर्थः—जहाँ पर अति स्वादमय सुगन्धित वायु के आने-जाने से परिपूर्ण विश्व खण्ड है तथा जहाँ पर भ्रमरों का झुण्ड क्या ही अद्‌भुत विभूषित हो रहे हैं, पराग पान करने से मत्तवाले चारों तरफ घूम रहे हैं ॥४॥

मू०—महीमयूखैः खचिता महद्भिर्मणि प्रवालै रुचिरा समंतात् ।
हिरण्यमयी मूर्त्तिमती परा श्रीर्यत्राद्‌भुताः संतिजनाश्चनित्याः॥५॥

अन्वयः—महद्भिर्मणि प्रवालैः खचिता मयूखैः समंतात रुचिराहिरण्यमयी मूर्तिमती मही यत्र अद्‌भुताः नित्याः पराश्रीः जना सन्ति ॥५॥

अर्थः—महान् मणि मूँगादि रत्नों से चारों तरफ सुन्दर रचे हुए मूर्तिमती हिरण्यमयी (सुवर्णमयी) पृथ्वी जहाँ पर अद्‌भुत नित्य श्री जी के आश्रित जन हैं ॥५॥

मू०—जलानि शीतांशुकराकराणि गोक्षीर शंख द्युतिर्निजितानि ।
सुधाशरन्मेघनिभानि कानि श्री मद्धरेश्चारु यशांसितानि ॥ ६ ॥

अन्वयः—गोक्षीर शंख द्यूति निर्जितानि शीतांशुकराकराणि जलानि मेघनिभानिकानि सुधाशर श्रीमद्हरेः चारु यशांसितानि ॥६॥

अर्थः—गाय के दूध और शङ्ख के प्रकाश को जीतने वाले चन्द्रमा के किरण समूह के समान जल है, जो मेघ मण्डल के समान, क्या तो अमृतमय अनन्त सरोवर है, श्रीमन् भगवान् के सुन्दर यश सदृश ॥६॥

मू०—हिमागमाच्छीत विडंवितानि स्वादूनिमाध्वीकरसाद्वनानि ।
स्वच्छानि सच्चित्तसमानिकानि कर्पूरकुंदाद्‌भुत दर्शनानि ॥७॥

अन्वयः—कर्पुरकुन्दाद्‌भुत दर्शनानि हिमागमत् सीतविडंवितानि सच्चित्त समानि कानि स्वच्छानि माध्वीकरसाद् स्वादूनि वनानि ॥७॥

अर्थः—जहाँ पर कपूर औंर कुन्द फूलों के सदृश अद्‌भुत दर्शन वाले हिम ऋतु के शीत को भी ठगने वाले सच्चिदानन्द सदृश्य वासन्तिक रसों से अतिसय स्वादिष्ट बहुत से वन हैं ॥७॥

मू०—महार्ह माणिक्य मणि प्रकारैर्वैदूर्य्य वज्रांकुर सुप्रसन्नैः ।
एभिःसदासत् सिकताभिरन्दिता विराजिता सा सरयू सरिद्वरा ।८।

Original source - Scan 34 of 116

Chapter Three - The Radiant River

The breeze carried delicious fragrance through the entire region, while honey-intoxicated garlands of bees wheeled about in wonder. (4, completed)

> *Mahī mayūkhaiḥ khacitā mahārhair maṇi-pravālai rucirā samantāt,*
> *Hiraṇmayī mūrtimatī parā śrīr yatrādbhūtāḥ santi janāś ca nityāḥ.* (5)

The earth was inlaid on every side with the rays of priceless jewels, gems, and coral. Golden and embodied as supreme beauty herself, it was the dwelling place of marvellous, eternally liberated souls.

> *Jalāni śītāṃśu-karākarāṇi go-kṣīra-śaṅkha-dyuti-nirjitāni,*
> *Sudhāśayāne megha-nibhāni kāni Śrīmad-Dhareś cāru yaśāṃsi tāni.* (6)

Its waters resembled masses of cooling moonbeams and surpassed the lustre of cow's milk and conch shell. Deep as a cloud-bank and filled with nectar, they were like the beautiful, stainless fame of the glorious Lord.

> *Himāgamāc chīta-viḍambitāni svādūni mādhvīka-rasād dhanāni,*
> *Svacchāni sac-cit-samāni kāni karpūra-kundādbhuta-darśanāni.* (7)

Cooler than the coming of winter, sweeter and richer than honey, its waters were clear and seemed formed of being and consciousness. Their wondrous whiteness recalled camphor and kunda blossoms.

> *Mahārhair māṇikya-maṇi-prakārair vaidūrya-vajrāṅkura-suprasannaiḥ,*
> *Ebhiḥ sadā sat-sikatābhir anvitā virājitā sā Sarayū sarid-varā.* (8, continues)

The excellent Sarayu shone with beautiful sands composed of priceless rubies and other jewels, bright beryl, diamond, and radiant crystal.

अन्वयः—महार्हे माणिक्य वैदूर्यं वज्रांकुर सु प्रसन्नैः मणिप्रकारैः एभिः सदासत् सिकताभि अन्विता सरिद्वरा सा सरयू विराजिता ॥८॥

अर्थः—जहाँ पर विसकिमतीय माणिक्यों, वैदूर्य, हिरादि रत्नों के सुन्दर प्रकाश से मणिमय प्रकाश द्वारा कई प्रकार के सफेद, श्याम, आदि विविध रंगों से युक्त बालू वाली नदियों में श्रेष्टा वह सरयू जी विराजमान हैं ॥८॥ वहीं सरयू–

मू०–बीची दूकूला सतपत्रबक्रानीलेक्षणाचारु कुमुद्वतीस्मिता ।
।। अरालशैवाल बिशाल केशी भब्यांवरानब्य बधूरिवा भर्वत् ॥९॥

अर्थः—लहर (तरंग) रूपी साड़ी पहनी हुई सफेद कमल मुख वाली नील कमल कटाक्ष वाली सुन्दर कुमुद्वती मुस्कयान वाली किनारों पर सिवार रूपी सिर के केश वाली इस प्रकार कल्याणमयी वस्त्राभूषण युक्त अंग वाली सरयू जी नवीन उम्र वाली स्त्री की तरह हो गयीं ॥९॥

मू०–प्रफुल्लितं चारु चतुर्विधं महत्सरोरुहं षट्पदराजि वेष्टितं ।
कुमुद्वन्तीन्दीवर मंजुमण्डितं काह्लार काह्लाद जलंव्यभासत् ।१०।

अन्वयः—षट्पदराजवेष्टितं चतुर्बिधं चारु प्रफुल्लितं महत्सरोरुहं कुमुद्वती इन्दिवर मंजुमण्डितं काह्लारक अह्लाद जलन्व्यभासत् ॥१०॥

अर्थः—भ्रमरों के झुण्डों से घिरे हुए सुन्दर खिले हुए चार प्रकार के महान् कमल (सफेद, लाल, नीले, पीले) सुन्दर कुमुदों और कमलों से रमणीय भूषण युक्त कल्लोल मचाती हुई आनन्दमय जल से अतिसेय काह्लाक, अह्लाद से विशेष प्रकाशित हो रहीं हैं ॥१०॥

मू०–यत्राकराः कौस्तुभ पद्मरागस्यमंत वंशच्छद सुप्रभानां ।
नानामणीनामति दीप्तिकानां वितर्किताकं प्रतिमाचशर्कराः ।११।

अन्वयः—अत्र कौस्तुभ पद्मराग स्यमन्त वंशच्छद सुप्रभानां अति दीप्तिकानां नानामणिनां अकाराः च वितर्किताकं प्रतिमा शर्कराः ॥११॥

अर्थः—जहाँ पर कौस्तुभ पद्मराग स्यमन्तक वंशच्छद (वंश के) आदि सुन्दर प्रकाश वाले अति प्रकाशमान नाना प्रकार के मणियों का और सूर्य के प्रकाश के समान तर्क ना वाला बालू है ॥११॥ और—

मू०–चक्रांगदात्यूहससारिता रसाः सदारकावै जल कुक्कुटादयः ।
क्रीडंति क्रीड़ां परिहृत्य सर्वे वसन्ति यत्राकलपन्ति पक्षिणः॥१२॥

Chapter Three - Sarayu as a Newly Wedded Bride

Sands of ruby, beryl, diamond, and countless other luminous jewels made the supreme river glitter in white, dark, red, and many other colours. (8, completed)

> *Vīcī-dukūlā śata-patra-vaktrā nīlekṣaṇā cāru-kumudvatī-smitā,*
> *Arāla-śaivāla-viśāla-keśī bhavyāmbarā navyavadhūr ivābhavat.* (9)

The river became like a beautifully adorned new bride: her waves were a silken sari, white lotuses her face, blue lotuses her lovely eyes, and blooming water lilies her smile; curling water-plants formed her long hair, while her banks were splendid garments.

> *Praphullitaṃ cāru caturvidhaṃ mahat saroruhaṃ ṣaṭpada-rāji-veṣṭitam,*
> *Kumudvatīndīvara-mañju-maṇḍitaṃ kallola-kāhlāda-jalaṃ vyabhāsat.* (10)

Her blissful, surging waters shone with four great kinds of fully opened lotus-white, red, blue, and yellow-encircled by rows of bees and beautifully adorned with water lilies and blue lotuses.

> *Yatrākarāḥ Kaustubha-padmarāga-syamantavaṃśacchada-suprabhāṇām,*
> *Nānā-maṇīnām atidīptikānāṃ vitarkitārka-pratimāś ca śarkarāḥ.* (11)

There lay mines of Kaustubha-like gems, rubies, Syamantakas, vaṃśacchada stones, and many other intensely radiant jewels. The gravel itself shone with a brilliance comparable to the sun.

> *Cakrāṅga-dātyūha-sarāri-haṃsāḥ sadāra-kādamba-jala-kukkuṭādayaḥ,*
> *Krīḍanti vrīḍāṃ parihṛtya sarve vasanti yatrākala-pakṣiṇaḥ.* (12, continues)

Chakravakas, waterfowl, sarari birds, swans, kadambas with their mates, water-cocks, and many other birds abandoned all shyness and played upon the river.

अन्वयः—यत्र चक्रांगदात्यूह स सरिसारसाः वै सदारका जल कुक्कुटादय सर्वे व्रीड़परिहृत्य क्रीडयन्ति बसन्ति पक्षिणः कलयन्ति ॥१२॥

अर्थः—जहाँ पर चकोर, चक्वा-चकवी, हंस, मैंनाओं आदि सहित सारस निश्चय करके पत्नियों के सहित जल कुकुटादि पक्षी लज्या, संकोच को छोड़ करके विहार कर रहे हैं । सभी बसन्त ऋतु वाले पक्षी गण कल्लोल मचाये हुए हैं ॥१२॥

मू०—कंवुक संवुक ह्रस्वाश्च शुक्तिका वमन्ति मुक्तां भुजगाश्च कृच्छपाः।
अन्योन्याद्विष्टादिरहिता विदूराः पिवन्ति पीयूष निभानि कानि ॥

अन्वयः—कंवुक संबुक ह्रस्वाश्च शुक्तिका मुक्तां वमन्ति अन्योन्य द्विष्टादि रहिता भुजगाश्च कृच्छपाः विदूराः पीयूषनिभानि कानि जलं पिबन्ति ॥१३॥

अर्थः—शङ्ख, घोंघे, छोटे-छोटे सीपियां भी मोतियों को उगलते हैं, और सर्प, कछुवा, आपस में द्वेष रहित होकर अति समीप में रह करके अमृत की समानता करने वाले सरयू जी के जल को पीते हैं ॥१३॥

मू०—वनं वनं कमल मुखैर्विकसितं कुंदवृन्दमल्लिकाभिः ।
स्मितरुचिराकृतावनिन्दौ परस्परेणाजिहितां श्रिया च ॥१४॥

अन्वयः—कुन्दवृन्द मल्लिकाभिः कमलमुखैर्विकसितं वनं वनं परस्परेणा जिहितां श्रिया च अनिन्दौ स्मितरुचिराः कृतौ ॥१४॥

अर्थः—कुन्द, वृन्द मलिकादि जाती के कमल है, प्रमुख जिनमें ऐसे फूले हुए प्रत्येक वन वन में आपस में एक दूसरे की शोभा को जीतने वाले और सब प्रकार के निन्दा से रहित मन्द मुस्कयान युक्त सुन्दर आकृति वाले दोनों सरकार हैं । इसके बाद श्री हनुमान जी श्री सरयू जी की स्तुति कर रहे हैं ॥१४॥

मू०—हरिनयन सरोज विलास कारिणि प्रणतेश्च प्रणतेषु प्रसन्ने ।
जगत प्रकदंव विडंवन श्री सरयूत्वं वर वर्णिनि प्रसीद ॥१५॥

अन्वयः—जगत् प्रकदम्व विडम्वन वरवर्णिनि च हरिनयन सरोज विलास कारिणि प्रणतेषु प्रसन्ने श्री सरयू प्रणतेः त्वं प्रसीद ॥१५॥

अर्थः—संसार के बिपरीत मार्ग को ठगने वाली सुन्दर श्री विग्रह वाली भगवान् के नेत्र कमलों को विलास करने और कराने वाली प्रणाम करने वालों पर प्रसन्न

Chapter Three - Creatures at Peace

All the birds of the eternal spring sported freely upon the Sarayu with their mates, making its waters resound with joyous calls. (12, completed)

> *Kambūka-śambūka-hrasvāś ca śuktikā vamanti muktāṃ bhujagāś ca kacchapāḥ,*
> *Anyonya-dveṣādi-rahitā vicarāḥ pibanti pīyūṣa-nibhāni kāni.* (13)

Conches, snails, and even the smallest shells cast forth pearls. Serpents and tortoises, free from mutual hatred and every other hostility, moved together in harmony and drank waters resembling nectar.

> *Vanaṃ vanaṃ kamala-mukhair vikasitaṃ kunda-vṛnda-mallikābhiḥ,*
> *Smitā-rucirākṛtāv anindau paraspareṇājita-śriyā ca.* (14)

Forest after forest bloomed with lotus-like faces, clusters of kunda, and jasmine. Amid them the faultless Divine Couple appeared in lovely, smiling forms, each surpassing yet enhancing the other's beauty.

Hanuman then praises the Sarayu:

> *Hari-nayana-saroja-vilāsa-kāriṇi praṇateṣu praṇateṣu prasanne,*
> *Jagat-prakaṭaiva viḍambane Śrī-Sarayū tvaṃ vara-varṇini prasīda.* (15)

O beautiful Sri Sarayu, who makes the lotus eyes of Hari blossom and is gracious to all who bow before you: you reveal the mystery hidden by the apparent world. I bow to you; be pleased with me.

होने वाली हे श्री सरयू आपको नमस्कार है। आप (हम पर) प्रसन्न हो जायँ ॥१५॥

मू०—तज्जलेन जलजं तवश्रये येन येन पतिताः खगाद्यः ।
प्राणमोचन कृतेतत्क्षणाद्ब्रह्मरुद्रवसुदेन्द्र वन्दिताः ॥ १६ ॥

अन्वयः—ये खगाद्यः त्वं जलजं पतिता तज्जलेन प्राणमोचन कृतेपि दत्क्षणाद ब्रह्मरुद्र वसुदेन्द्र वंदिता भवन्ति ॥१६॥

अर्थः—जो पक्षी आदि जानवर जिस किसी भी प्रकार से गिरे हुये आपके जल जन्तुओं में उस जल के प्रभाव से प्राणान्त करने पर उसी क्षण ब्रह्मा, शंकर, बसु, इन्द्र आदिकों से वन्दित हो जाते हैं ॥१६॥

मू०—तन्मध्ये शोकवनिकादिब्य पादपसंकुला ।
प्रफुल्लिता चारुवती श्रीमद्भ्रमर मालिनी ॥ १७ ॥

अन्वयः—तन्मध्ये श्रीमद्भ्रमर मालिनी प्रफुल्लिता चारुवती दिब्य-पाद संकुला अशोक बनिका ॥१७॥

अर्थः— दिव्य भ्रमरों की माला से शोभित सुन्दर खिले हुए फूलों से अति शोभिता दिव्य वृक्षों से भरी हुई अशोक वनिका है, उन सरयू जी के मण्डल के मध्य में यह अशोक वन है ॥१७॥

मू०—ज्योतिष्मती मणिद्वीपवती प्रेमप्रदासती ।
रामप्रिया चक्ररूपा हरिनेत्र भवावृता ॥ १८ ॥

अन्वयः—नेत्रभवावृत्ता मणिद्वीपवती ज्योतिष्मती चक्ररूपा प्रेम-प्रदासती रामप्रिया ॥१८॥

अर्थः—यह अशोक वनिका भगवान् के नेत्र कटाक्षों से घिरी हुई मणिमय दीपकों वाली ज्योतिमय चक्ररूपा (भक्तों को) प्रेमानन्द देने वाले होते हुए भी श्री राम जी के अति प्रिया हैं ॥१८॥

मू०—तत्रचिन्तामणिभूर्मिर्वांछाधिक फलप्रदा ।
यद्गत्वा न निवर्न्तेते प्राणिनो भाग्य गौरवात् ॥ १९ ॥

अन्वयः—तत्र वांच्छाधिक फलप्रदा चिन्तामणि भूमिः प्राणिनों भाग्य गौरवात् यद्गत्वा न निवर्तन्ते ॥१९॥

Original source - Scan 37 of 116

Chapter Three - The Hidden Ashoka Grove

> *Tava jalajaṃ patitā yena khagādyāḥ prāṇa-mocana-kṛte 'pi,*
> *Tat-kṣaṇād Brahma-Rudra-Vasudendra-vanditā bhavanti.* (16)

Birds and other creatures that fall into your waters and give up their lives there are, in that very instant, honoured by Brahma, Rudra, the Vasus, Indra, and the other gods.

> *Tan-madhye 'śoka-vanikā divya-pādapa-saṅkulā,*
> *Praphullitā cāruvatī śrīmad-bhramara-mālinī.* (17)

Within the sacred circle of the Sarayu stood the Ashoka grove, crowded with divine trees, radiant with beautiful blossoms, and adorned with splendid garlands of bees.

> *Jyotiṣmatī maṇidvīpavatī prema-pradā satī,*
> *Rāma-priyā cakra-rūpā hari-netra-bhavāvṛtā.* (18)

Luminous and filled with jeweled islands, the holy grove bestowed divine love. Dear to Rama and formed as a sacred circle, it was enclosed by the loving glances of Hari.

> *Tatra cintāmaṇi-bhūmir vāñchādhika-phalapradā,*
> *Yad gatvā na nivartante prāṇino bhāgya-gauravāt.* (19)

Its ground was composed of wish-fulfilling gems and granted fruits greater than one could desire. Fortunate beings who reached that place never returned to worldly existence.

अर्थः—वह अशोक वाटिका में चाहना से अधिक फल देने वाले चिंता मणिमयी भूमि है, प्राणी मात्र के सौभाग्य को गौरवत (भगवत् कृपा) से जहाँ जाने के बाद फिर संसार में लौट कर नहीं आते हैं ॥१९॥

मू०-तत्रगुल्मलतावृक्षा वज्रसारास्फुरत्व चः ।
प्रसार पत्र तिलका पद्मराग प्रसूनकाः ॥ २० ॥

अन्वयः—तत्र वज्रसारस्फुरत्व चः गुल्मलता वृक्षाः प्रसार पत्र तिलका पद्मराग प्रसूनकाः ॥२०॥

अर्थः—उस अशोक वाटिका में हिरादि मणियों के प्रकाश को भी फीका करने वाले प्रकाशमान वलकल वाले छोटे-छोटे वृक्ष तथा लतायें बड़े वृक्ष भी फैले हुए, पत्ता, डार, सब पद्मराग मणि सदृश्य फूल खिले हुए हैं ॥२०॥

मू०-प्रेमामृत रसैः पूर्णान्यनन्तानि फलानिहि ।
केवलं रसिकानां वै जीवनाज्जीवनानि च ॥२१॥

अन्वयः—ही वै केवलं रसिकानां जीवनात् च जीवनानि प्रेमामृत रसैः पूर्णानि अनन्तानि फलानि ॥२१॥

अर्थः—निश्चय करके एक मात्र रसिकों के जीवन के जीविका और प्रेमामृत रस से पूर्ण अनन्त फल हैं ॥२१॥

मू०-निर्मला बाटिकारम्या बेदादिभिरगोचरा ।
योगीयोग सुनिष्पन्नो यज्ज्योतिषिनिमज्जति ॥२२॥

अन्वयः—योग सुनिष्पन्नो योगी यज्ज्योतिषि निमज्जति बेदादिभिर-गोचरा निर्मला रम्या बाटिका ॥२२॥

अर्थः—प्रणयामादि अष्टाङ्गयोगों में पाराङ्गत योगी जिस ज्योति में विलीन हो जाता है, उस ज्योति से परे वेदादिकों से भी अगोचर निर्मल रमणीय बाटिकायें (उस अशोक वन में हैं) ॥२२॥

मू०-परमानन्द दासास्तु ब्रह्मज्योतिर्भिरावृता ।
तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता रसिका रस वेदिनः ॥ २३ ॥

अन्वयः—ब्रह्मज्योतिर्भिरावृता परमानन्द दासास्तु रसवेदिनः रसिकाः तज्ज्योतिर्भेदने शक्ता ॥२३॥

Original source - Scan 38 of 116

Chapter Three - Beyond the Brahma-Jyoti

The wish-fulfilling ground of the Ashoka grove bestowed more than the heart could ask, and those who reached it through the majesty of divine good fortune did not return to the world. (19, completed)

> *Tatra gulma-latā-vṛkṣā vajra-sārāḥ sphurat-tvacaḥ,*
> *Prasāra-patra-tilakāḥ padmarāga-prasūnakāḥ.* (20)

Its shrubs, vines, and trees possessed diamond-like substance and gleaming bark. Their spreading leaves formed ornaments, and their blossoms shone like rubies.

> *Premāmṛta-rasaiḥ pūrṇāny anantāni phalāni hi,*
> *Kevalaṃ rasikānāṃ vai jīvanāj jīvanāni ca.* (21)

Their countless fruits were filled with the nectar of divine love. They were the food, vitality, and very life of the rasikas alone.

> *Nirmalā vāṭikā ramyā vedādibhir agocarā,*
> *Yogī yoga-suniṣpanno yaj-jyotiṣi nimajjati.* (22)

This pure and delightful grove lies beyond the reach of the Vedas and other scriptures. Its radiance is that into which the yogi perfected in yoga finally becomes immersed.

> *Paramānanda-dhāmāstu brahma-jyotirbhir āvṛtā,*
> *Taj-jyotir-bhedane śaktā rasikā rasa-vedinaḥ.* (23)

Although this abode of supreme bliss is veiled by the radiance of Brahman, rasikas who truly know *rasa* possess the power to pass through that encircling light.

अर्थः—"रस ब्रह्म ज्योति से आवृत, श्री सीताराम युगल रस के मर्मज्ञ जो परमानन्द को समर्पित है वही उस आवरण रूप ब्रह्म ज्योति को पार करने में समर्थ होते हैं ।।२३।।"

मू०–रामप्रसादादन्येषां गमनं न भवेत्कदा ।
तज्ज्योतिषः प्राणरूपी राजते सीतया सह ।। २४ ।।

अन्वयः—रामप्रसादात् अन्येषां कदा गमनं न भवेत् तत् ज्योतिषः प्राणरूपी सीतया सह राजते ।।२४।।

अर्थः—श्री रामप्रसाद (कृपा) के अतिरिक्त अन्योपाय से कभी भी किसी प्रकार उस ज्योति का उलंघन नहीं हो सकता, क्योंकि उस ब्रह्म ज्योति के मूलस्वरूप प्राणरूपी परात्पर ब्रह्म श्री सीता जी के सहित श्रीराम जी प्रकाशमान हैं ।।२४।।

मू०–संतानकत्तरोरछाये दिव्य मण्डप मण्डिते ।
महार्हस्तोरणैः सम्यग्वेष्टिते मणिमालकैः ।। २५ ।।

अन्वयः—संतानकत्तरोरछाये मणिमालकैः सम्यक् वेष्टिते महार्हस्तोरणैः मण्डिते दिव्य मण्डपे ।।२५।।

अर्थः—कल्प वृक्ष के छाया में मणिमय मालाओं से चारों तरफ सम्यक् प्रकार सजे हुए, बहुमूल्य तोरणादिकों से भूषित दिव्य मण्डप में ।।२५।।

मू०–नाना प्रसून गंधाढ्यैर्धूपवासैः सुवासिते ।
चिंतामणि महापीठे लसत्मणि गणांचिते ।। २६ ।।

अन्वयः—नाना प्रसून गंधाढयैर्धूपबासैः सुवासिते लसत् मणिगणानां चित्ते चिंतामणि महापीठे ।।२६।।

अर्थः—नाना प्रकार के सुगन्धित फूलों से परिपूर्ण विविध धूप बास से सुगन्धित मणि समूहों से सुसज्जित चिंतामणिमय महासिंहासन में ।।२६।।

मू०–पद्म दिव्यार्क संकासे दृष्टि विभ्रमकारके ।
कोमलास्तरणे शुभ्रे विराजते सुदम्पतिः ।। २७ ।।

अन्वयः—दृष्टिविभ्रमकारके पद्मदिब्यार्क संकासे शुभ्रे कोमलास्तरणे सुदम्पतिः विराजते ।।२७।।

Original source - Scan 39 of 116

Chapter Three - The Cintamani Throne

Only devotees absorbed in the *rasa* of Sita and Rama and wholly offered to supreme bliss can cross the enveloping *brahma-jyoti*. (23, completed)

> *Rāma-prasādād anyeṣāṃ gamanaṃ na bhavet kadā,*
> *Taj-jyotiṣaḥ prāṇa-rūpī rājate Sītayā saha.* (24)

No one can ever pass beyond that radiance by any means other than Rama's grace. At its heart shines Rama with Sita-the Supreme Brahman who is the very life of the *brahma-jyoti*.

> *Santānaka-taror chāye divya-maṇḍapa-maṇḍite,*
> *Mahārhais toraṇaiḥ samyag veṣṭite maṇi-mālakaiḥ.* (25)

Beneath the shade of a wish-fulfilling santanaka tree stood a divine pavilion, perfectly adorned with priceless archways and encircled by garlands of jewels.

> *Nānā-prasūna-gandhāḍhye dhūpa-vāsaiḥ suvāsite,*
> *Cintāmaṇi-mahāpīṭhe lasan-maṇi-gaṇāñcite.* (26)

Rich with the fragrance of many flowers and perfumed by exquisite incense, a great throne of cintamani gems shone there, inlaid with brilliant hosts of jewels.

> *Padma-divyārka-saṅkāśe dṛṣṭi-vibhrama-kārake,*
> *Komalāstaraṇe śubhre virājete sura-dampatī.* (27, continues)

Upon a pure and tender covering, luminous like a divine sun upon a lotus and so beautiful that it dazzled the sight, the heavenly Husband and Wife sat enthroned.

अर्थः—दृष्टि को चकाचौंध लगाने वाला कमल सदृश दिव्य सूर्य के प्रकाश में स्वच्छ कोमल बिछावन के ऊपर सुन्दर दम्पत्ति श्री सीताराम जी विराजमान हैं ॥ २७ ॥

मू०—तयोः कटाक्ष मात्रेण ब्रह्माण्डानां सहस्रशः ।
आविर्भावास्तिरोभावा भवंत्यपि न संशयः ॥ २८ ॥

अन्वयः—तयोः कटाक्षमात्रेण सहस्रशः ब्रह्माण्डानां आविर्भावास्तिरोभावा भवंत्यपि संशयः न ॥२८॥

अर्थः—उन दोनों युगल सरकार के कटाक्ष मात्र से हजारों (करोड़ों) ब्रह्माण्डों का उत्पत्ति प्रलय भी हो जाता है, इसमें संशय नहीं है ॥२८॥

मू०—महाशम्भु सहस्रस्य महाब्रह्मशतस्य च ।
सृष्टिस्थितलयानां च कर्त्ता श्री रघुनन्दनः ॥ २९ ॥

अन्वयः—श्री रघुनन्दनः महाशम्भु सहस्रशः च महाब्रह्मशतस्य सृष्टि-स्थिति लयानां च कर्त्ता ॥२९॥

अर्थः—श्री रघुनन्दन जी तो हजारों महाशम्भु और सैकड़ों महाब्रह्म इन सबके उत्पत्ति पालन प्रलय भी कर्त्ता हैं ॥२९॥

मू०—रमते सीतया सार्द्धं प्रेम्णाप्रेम रसास्पदः ।
हास्यलास्यकटाक्षैश्च मोदयन जनकात्मजाम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—प्रेमरसास्पदः जनकात्मजां हास्यलास्य कटाक्षैः च मोदनं प्रेमणा सीतयासार्द्धं रमते ॥३०॥

अर्थः—प्रेम रस के मूल स्थान श्री रघुनन्दन जी श्री जानकी जी को अपने मुसक्यान, प्रेममयी चेष्टा कटाक्षों से आनन्दित करते हुए श्री सीता जी के साथ रमण करते हैं ॥३०॥

मू०—असृजद्विश्वसृक् सश्वन्मनसा मनसोद्भवं ।
दुर्निवारं सुचार्वंगं रत्या सहरघुत्तमः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—विश्वसृक् रघुत्तमः रत्या सह मनसोद्भवं सुचार्वंगं दुर्निवारं असृजत् ॥३१॥

अर्थः—विश्व सृष्टि करने वाले श्री रघुनाथ जी रति के सहित सुन्दर अंग वाले दुःखकर के निवार्य कामदेव को मन से उत्पन्न किये ॥३१॥

Original source - Scan 40 of 116

Chapter Three - The Source of the Worlds

Sita and Rama shone upon the beautiful cintamani throne, whose radiance bewildered the eyes like a divine sun rising from a lotus. (27, completed)

> *Tayoḥ kaṭākṣa-mātreṇa brahmāṇḍānāṃ sahasraśaḥ,*
> *Āvirbhāvas tirobhāvo bhavaty api na saṃśayaḥ.* (28)

By a single sidelong glance from the Divine Couple, thousands upon thousands of universes arise and disappear. Of this there is no doubt.

> *Mahāśambhu-sahasrasya mahābrahma-śatasya ca,*
> *Sṛṣṭi-sthiti-layānāṃ ca kartā Śrī-Raghunandanaḥ.* (29)

Sri Raghunandana is the source of thousands of Mahashambhus and hundreds of Mahabrahmas, and the cause of their creation, preservation, and dissolution.

> *Ramate Sītayā sārdhaṃ premṇā prema-rasāspadaḥ,*
> *Hāsya-lāsya-kaṭākṣaiś ca modayan Janakātmajām.* (30)

Rama, the very abode of love's *rasa*, sported lovingly with Sita, delighting Janaka's daughter through laughter, graceful play, and sidelong glances.

> *Asṛjad viśva-sṛk suvrata-sabhā-manasodbhavam,*
> *Durnivāraṃ sucārv-aṅgaṃ Ratyā saha Raghūttamaḥ.* (31)

Then Raghuttama, creator of the universe, brought forth from his mind the irresistible, exquisitely formed god of love together with Rati.

मू०--दृढ़व्रत व्रतहरमाकीट ब्रह्ममोहनं ।
प्रसूनचांपत्रिगुणं बिभ्रत्पंचेषुभिः सह ॥ ३२ ।,

अन्वयः—आकीट ब्रह्ममोहनं दृढ़व्रत व्रतहरम् त्रिगुणं प्रसूनचांप पंचेषुभिः सह विभ्रत् ॥३२॥

अर्थः—कीड़े-मकोड़े से लेकर के ब्रह्मा पर्यन्त सभी दृढ़ व्रत वालों के व्रत को हरण करने वाले (कामदेव) तीन प्रत्यंचा वाला फूल के धनुष को पाँचों वाणों से सजे हुए शोभित हैं ॥३२॥

मू०-दम्पत्योः साम्प्रतंचित्तं मोहयन्तत्र कानने ।
प्रियः प्रियां कटाक्षेण क्षितेना कलनेन च ॥ ३३ ॥

अन्वयः—प्रियः तत्रकानने प्रियां आकलनेन च क्षितेन कटाक्षेण साम्प्रतं दम्पत्योः चित्तं मोहयन् ॥३३॥

अर्थः—श्री प्रीतम जू उस वन में प्रिया जू को बुलाने से मन्द मुस्क्यान द्वारा प्रिया जू के चित्त को आकर्षण करने से दोनों सरकार के चित्त को इस समय मोहित करते हुये ॥३३॥

मू०-बोधयामास तां प्रेम्णास्वेच्छया रमणेच्छया ।
रघुवश यशश्चन्द्रः कान्ताभिः सहतस्य वै ॥ ३४ ॥

अन्वयः—वै तस्य रघुवंश यशश्चन्द्रः प्रेम्णास्वेच्छया रमणेच्छया कांताभिः सह तां बोधयामास ॥३४॥

अर्थः—उस कामदेव के प्रभाव से निश्चय करके रघुवंश के कीतिरूपी चन्द्रमा श्रीराम जी अनुराग पूर्वक स्वतन्त्र रमण करने की चाहना से सभी कान्ताओं के सहित उन श्री सीता जी को समझाने लगे ॥३४॥

मू०-रामस्य हृद्गतिं ज्ञात्वा जानकी स्वां गतोऽसृजत् ।
नार्य्यष्टादश सहस्रमष्टोत्तरशतैर्युतम् ॥ ३५ ॥

अन्वयः—जानकीः रामस्य हृद्गतिं ज्ञात्वा स्वांगतो अष्टादश सहस्रं अष्टोत्तर शतै युतं नार्य्यः असृजत् ॥३५॥

अर्थः—श्री जानकी जी ने श्रीराम जी के हृदय गति को समझ करके अपने अङ्गों से अठारह हजार एक सौ आठ के सहित स्त्रियों को प्रगट किये ॥३५॥

Chapter Three - The Awakening of Divine Desire

> *Dṛḍha-vrata-vrata-haram ā-kīṭa-brahma-mohanam,*
> *Prasūna-cāpa-triguṇaṃ vibhrat pañceṣubhiḥ saha.* (32)

The god of love, who can break the vows of even the most resolute and enchant every being from the smallest insect to Brahma, appeared carrying his triple-strung flower bow and five flower-arrows.

> *Dampatyoḥ sāmpratam cittaṃ mohayan tatra kānane,*
> *Priyaḥ priyāṃ kaṭākṣeṇa kṣiptenākalanena ca.* (33)

There in the grove he enchanted the hearts of the Divine Husband and Wife. The Beloved drew his beloved toward him with a sidelong glance, and she answered his attraction.

> *Bodhayāmāsa tāṃ premṇā svecchayā ramaṇecchayā,*
> *Raghuvaṃśa-yaśaś-candraḥ kāntābhiḥ sahitāṃ hi tām.* (34)

Moved by love and the free desire for amorous play, Rama-the moon of the fame of Raghu's line-communicated his wish to Sita in the presence of her companions.

> *Rāmasya hṛd-gatiṃ jñātvā Jānakī svāṅgato 'sṛjat,*
> *Nāryo 'ṣṭādaśa-sahasram aṣṭottara-śatair yutam.* (35)

Understanding the movement of Rama's heart, Janaki manifested from her own body eighteen thousand one hundred and eight women.

मू०-बह्निशुद्धां सुकांचानाः सर्वाभरण भूषिताः ।
किशोर्यः परमाह्लाद जनन्यः परमाद्भुताः ।। ३६ ।।

अन्वयः—बह्निशुद्धां सुकांचानाः सर्वाभरणभूषिताः किशोर्यः परमाद्भुताः परमाह्लाद जनन्यः ।।३६।।

अर्थः—उपरोक्त सभी स्त्रियाँ अग्नि के समान शुद्ध स्वरूपा सुन्दर कंचनमयी शरीर वाली सभी प्रकार के वस्त्राभूषणों से भूषिता किशोर अवस्था सम्पन्ना अद्भुता परम आनन्द को पैदा करने वाली हुई ।।३६।।

मू०-रूपयौबन शालिन्यो मालिन्यः पद्मलोचनाः ।
नानागुणाढ्याश्चार्वंग्यः कामशास्त्र विशारदाः ।। ३७ ।।

अन्वयः—पद्मलोचनाः रूपयौवन शालिन्यो मालिन्यः चार्वंग्यः नाना-गुणाढ्याः काम शास्त्र विशारदाः ।।३७।।

अर्थः—कमल के समान नेत्र वाली (वे सब नारियाँ) रूप यौवन से परिपूर्ण सुन्दर मालादि भूषणों को पहनी हुई सुन्दर शरीर वाली नाना प्रकार के विलास गुणों से भरी हुई कामशास्त्र की बड़ी पण्डिता हैं ।।३७।।

मू०-नानेंगित समायुक्ता रामप्रेम प्रपूरिताः ।
तत्र काश्चित्पद्मगन्धाः काश्चित् मालति सौरभाः ।। ३८ ।।

अन्वयः—रामप्रेम प्रपूरिताः नानेंगित समायुक्ता काश्चित् तत्र पद्म-गन्धाः काश्चित् मालति सौरभाः ।।३८।।

अर्थः—ये सभी नारियाँ श्रीराम प्रेम में परिपूर्ण और नाना प्रकार की चेष्टाओं से युक्त कोई उनमें से कमल के समान गन्ध वाली है और कोई मालती के समान गन्ध वाली हैं ।।३८।।

मू०-मल्लिकागन्धवत्यश्च केतकी सौरभान्विताः :
पटलामोदवत्यश्च काश्चित्काश्मीर सौरभाः ।। ३९ ।।

अर्थः—बहुत सी मल्लिका फूल के समान गन्ध वाली है, कोई केतकी के फूल के समान गन्ध वाली, कोई गुलाबी रंग आनन्द वाली, कोई केशर के समान सुगन्ध वाली ।।३९।।

Chapter Three - The Manifestation of Sita's Companions

> *Vahni-śuddhāḥ su-kāñcanābhāḥ sarvābharaṇa-bhūṣitāḥ,*
> *Kiśoryaḥ paramāhlāda-jananyaḥ paramādbhutāḥ.* (36)

Pure as fire and radiant like fine gold, adorned with every ornament, the companions appeared eternally youthful and supremely wondrous, awakening the highest delight.

> *Rūpa-yauvana-śālinyo mālinyaḥ padma-locanāḥ,*
> *Nānā-guṇāḍhyāś ca vidyāḥ kāma-śāstra-viśāradāḥ.* (37)

Endowed with beauty and youth, garlanded and lotus-eyed, they possessed innumerable virtues and arts and were deeply learned in the science of divine love.

> *Nānāṅgīta-samāyuktā Rāma-prema-prapūritāḥ,*
> *Tatra kāścit padma-gandhāḥ kāścic ca mālatī-saurabhāḥ.* (38)

Skilled in many kinds of song and filled completely with love for Rama, some gave forth the fragrance of lotus and others the perfume of malati blossoms.

> *Mallikā-gandhavatyaś ca ketakī-saurabhānvitāḥ,*
> *Paṭalāmodavatyaś ca kāścit kāśmīra-saurabhāḥ.* (39)

Some bore the fragrance of jasmine, others the scent of ketaki; some were perfumed like patala flowers, while others gave forth the fragrance of saffron.

मू०-सर्व गन्धयुताश्चान्या मदविह्वलितेक्षणाः ।
सीताभाः असिताभाश्च काश्चित्क्षतजभा शुभाः ।।४०।।

अर्थः—कोई सभी प्रकार के सुगन्धों से पूर्ण अङ्ग वाली अन्य कोई विह्वल हृदय से कटाक्ष वाली, कोई सफेद रंग की, कोई श्याम रंग की, कोई लाल कमल के समान रंग वाली कल्याणमयी श्री विग्रह वाली ।।४०।।

मू०-निर्दग्धकनकाभांगानाना वर्णाश्च कोटिशः ।
मुख्यास्तेनाधिका रम्यादास्यस्तासां सहस्रसः ।।४१।।

अर्थः—कोई विशेष तपाये हुए सोने के समान अङ्ग वाली और भी नाना रंग वाली करोड़ों की संख्या में प्रधाना उनसे भी अधिक रमणीया मुखचन्द्रवती और भी उनमें हजारों की संख्या में ।।४१।।

मू०-एकैकशः प्रयत्नेन सेवन्तेनिशमुत्तमाः ।
दृष्ट्वा ता भगवान् रामोरमणेच्छुरभूद्विभुः ।।४२।।

अन्वयः—उत्तमा एकैकशः अनिशं प्रयत्नेन सेवते विभू भगवान् रामो-रमणेच्छुः अभूत् ।।४२।।

अर्थः—जो सभी लोग परम उत्तम हैं वे एक-एक करके दिन-रात बड़े प्रयत्न के साथ सेवा करती हैं, और यह देखकर व्यापक भगवान् (समर्थ) श्रीराम जी को रमण करने की इच्छा हुयी ।।४२।।

मू०-आत्मस्वरूपाननुगांश्चब्य सृजत्पुरुषान्वरान् ।
श्यामलान्सस्मितमुखान्सर्वाभरणभूषितान् ।।४३।।

अन्वयः—च (ततः) श्यामलान् सस्मितमुखान सर्वाभरणभूषितान् आत्मस्वरूपान वरान् अनुगान पुरुषान् ब्यसृजत् ।।४३।।

अर्थः—और इसके बाद श्याम रंग के मुसक्यान युक्त मुख वाले सभी प्रकार के वस्त्राभूषणों से भूषित आत्म स्वरूप ही अपने अनुकूल श्रेष्ठ पुरुषों को उत्पन्न किये ।।४३।।

मू०-किशोरान्कमनीयांश्च कामविद्या विशारदान् ।
रसास्वादनुगुणांश्च किरीट कुंडलांवितान् ।।४४।।

Original source - Scan 43 of 116

Chapter Three - Rama Manifests the Youthful Companions

> *Sarva-gandha-yutāś cānyā mada-vihvala-locanāḥ,*
> *Sītābhā asitābhāś ca kāścit kṣata-javāḥ śubhāḥ.* (40)

Still others combined every fragrance and cast glances made restless by love. Some were fair, some dark, and some auspiciously radiant with the crimson hue of the red lotus.

> *Nirdagdha-kanakābhāṅgā nānā-varṇāś ca koṭiśaḥ,*
> *Mukhyās tenādhikā ramyā dāsyas tāsāṃ sahasraśaḥ.* (41)

Millions appeared in many colours, some with limbs like highly refined gold. Their principal leaders were more enchanting still, and each was served in turn by thousands of attendants.

> *Ekaikaśaḥ prayatnena sevante 'niśam uttamāḥ,*
> *Dṛṣṭvā tā Bhagavān Rāmo ramaṇecchur abhūd vibhuḥ.* (42)

These excellent companions served one by one, diligently and without cease. Seeing them, the all-powerful Lord Rama desired to begin the divine play.

> *Ātma-svarūpān anugāṃś ca vyasṛjat puruṣān varān,*
> *Śyāmalān sasmitamukhān sarvābharaṇa-bhūṣitān.* (43)

Rama then manifested excellent youthful men from his own essential form, each perfectly suited to his companion: dark-complexioned, smiling, and adorned with every ornament.

> *Kiśorān kāmanīyāṃś ca kāma-vidyā-viśāradān,*
> *Rasāsvādānuguṇāṃś ca kirīṭa-kuṇḍalānvitān.* (44, continues)

They were eternally youthful and captivating, accomplished in the art of divine love, perfectly suited to the relishing of *rasa*, and adorned with crowns and earrings.

अन्वय:—च किशोरान्कमनीयां कामविद्या विशारदात् रसास्वादानु-गुणां च किरीट कुण्डलान्वितान् ॥४४॥

अर्थ:—और वे सब किशोर अवस्था वाले अति सुन्दर काम विद्या में महामण्डित रसास्वादन (अनुकूल) अनुगुण और किरीट कुण्डलों से युक्त ॥४४॥

मू०-ते सर्वे विपिनं दृष्ट्वा शोभमानं मनोरमम् ।
कामाभिवाण संविद्धामत्त गान समुत्सुकाः ॥४५॥

अन्वय:—ते सर्वे शोभमानं मनोरमम् विपिनं दृष्ट्वा कामाभिवाण संविद्धा मत्तगान समुत्सुकाः ॥४५॥

अर्थ:—वे सभी रूप (विलास सम्पति से युक्त) अतिशय शोभायमान मन रमणीय वन को देख कामवाणों से बेधित मतवाले गानों को सुन कर अतिशय उत्सुक हो गये ॥४५॥

मू०-बिधुमुखशीधुमधुव्रतोयोरसिक नायको जयत्यन्तात्मापटु ।
जलद पटल नीलो बिबिध रतिविदग्धनागरो रामः ॥४६॥

अन्वय:—जलद पटल नीलो विविधरति विग्धनागरो अनन्तात्म पटु विधुमुखशीधुमधुव्रतोयोरसिक नायको रामः जयति ॥४६॥

अर्थ:—अनेक प्रकार के रति विलास विद्या के श्रेष्ठ पण्डित नील मेघ मण्डल के सदृश्य वर्ण वाले अनन्त रूप धारण करने में कुशल चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाले श्रेष्ठ भ्रमर का व्रत लिये हुए रसिक नायक श्रीराम जी हैं, उनकी जय हो ॥४६॥

इति श्रीमद्हनुमत्संहितायां परम रहस्ये महारासोत्सवे
श्रीहनुमदगस्त संवादे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीसीताराम रहस्य रसराजैकनिष्ठ दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणार-विन्द मकरन्द रसलम्पट श्री जानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा "श्रीहनुमत्संहिता" श्रीसीतारामरहस्य प्रकाशिका टीका तृतीयोध्यायः ।

Chapter Three - The Rasika Hero

The youthful companions manifested by Rama were exquisitely beautiful, learned in the arts of love, fitted to every mode of *rasa*, and adorned with crowns and earrings. (44, completed)

> *Te sarve vipinaṃ dṛṣṭvā śobhamānaṃ manoramam,*
> *Kāmābhi-bāṇa-saṃviddhā matta-gāna-samutsukāḥ.* (45)

Beholding the radiant, enchanting forest, all those companions were pierced by the flower-arrows of divine desire and became eagerly absorbed in ecstatic song.

> *Vidyun-mukha-śrī-madhu-mudritayor rasika-nāyako jayaty anantātma-padaḥ,*
> *Jalada-paṭala-nīlo vividha-rati-vidyā-nāgaro Rāmaḥ.* (46)

Victory to Rama, supreme hero of the rasikas: dark as a mass of rainclouds, lovely-faced as the moon amid lightning, able to assume boundless forms, and consummately skilled in every art of divine love.

Thus ends the Third Chapter of the supremely secret *Śrī Hanumat Saṃhitā*, the great festival of the *mahārāsa*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

The printed edition further identifies the commentary as the *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā*, composed by Śrīmad Devacharya Vanshavant Śrī Swami Priyasharanji Maharaj-known as Madhukar, “the Honeybee”-and devoted to the lotus feet of Sri Janaki.

* अथ चतुर्थोऽध्यायः *

श्री अगस्त्युवाच—

मू० -शुष्कं कर्णबिलं मेघतववाचासुवारिणा ।
पूरयस्व महाभाग सदानुग्रह भाग्यतः ॥ १ ॥

अन्वयः—यतः हे सदानुग्रहभाग्यतः मेघ महाभाग शुष्कं कर्णविलं तव वाचा सुवारिणा पूरयस्व ॥१॥

अर्थः - श्री अगस्त जी बोले—हे सदानुग्रह, कृपा करने वाले महाभागशाली मेघ श्री हनुमान जी (मेरे) सूखे कानरूपी विलों को आपकी वाणी रूप सुन्दर जल से पूर्ण कीजिए ॥१॥

श्री हनुमान उवाच—

मू०—कुहूकुहूनादरटन् मुहुर्मुहुर्न्नटन्नटंश्चूत नवांकुरेषु ।
उन्मत्त उत काकभृतः प्रमत्तः प्रियः प्रियायाः कलनं करोति ॥२॥

अन्वयः—प्रमतः प्रियायाः प्रियः उत्त उन्मत्त काकभृतः चूतनवांकुरेषु मुहुः-मुहुः नटन-नटन कुहु-कुहु नाद रटन् कलनं करोति ॥२॥

अर्थः—मतवाले प्रियाओं के प्रियतम क्या तो, उन्मत्त कोमल बनकर आम के नवीन अंकुरों में बार-बार नाचते-नाचते कुहूँ-कुहूँ ऐसा नाद रटते-रटते सुन्दर कल्लोमय गान कर रहे हैं ॥२॥

मू०—नृत्यतिमत्ताः शिखिनः समंताद्गायन्ति गीतं शुकसारिकादयः।
अन्येद्विजाश्चारु मयूरदारैर्मुखैश्चवाद्यानभिवादयन्ति ॥३॥

अन्वयः—समंतात् मत्ताः शिखिनः चारू मयूरदारैः नृत्यन्ति शुकसारिकादयः गीतं गायन्ति च अन्येद्विजाः चारुमुखैः बाद्यान् अभिवादयन्ति ॥३॥

अर्थः—(वन के) चारों तरफ मतवाले मोर अपनी सुन्दर पत्नियों के साथ नृत्य कर रहे हैं । शुक, सारिका आदि पक्षी गीत गा रहे हैं । और अन्य बहुत से पक्षी सुन्दर मुखों से विविध प्रकार के वाद्यों को सम्यक् प्रकार बजा रहे हैं ॥३॥

मू०—अदृष्ट पूर्वाश्च मृगाश्च गावोग्रासं जजक्षुरभितस्तदाकिल ।
दृष्ट्वा रघुणां प्रवर प्रभाव मर्द्धार्द्धमश्नंति त्यजंतिचार्द्धं ॥४॥

Chapter Four - The Forest Awakens to the Rasa

Agastya said:

> *Śuṣkaṃ karṇa-bilaṃ megha tava vācā su-vāriṇā,*
> *Pūraya tvaṃ mahābhāga sadānugraha-bhāgyataḥ.* (1)

O greatly blessed Hanuman, compassionate cloud of grace, fill the dry hollows of my ears with the beautiful water of your speech.

Hanuman said:

> *Kuhu-kuhu-nāda-raṭan muhur muhur naṭan naṭaś cūta-navāṅkureṣu,*
> *Unmatta uta kāka-bhṛtaḥ pramattaḥ priyaḥ priyāyāḥ kalanaṃ karoti.* (2)

The intoxicated cuckoo, beloved of his mate, danced again and again among the tender mango shoots. Calling "kuhu, kuhu," he poured forth a lovely, playful song.

> *Nṛtyanti mattāḥ śikhinaḥ samantād gāyanti gītaṃ śuka-sārikādayaḥ,*
> *Anye dvijāś cāru-mukhair udāraṃ mukhaiś ca vādyān abhivādayanti.* (3)

All around, enraptured peacocks danced with their lovely mates. Parrots, mynas, and other birds sang, while still others seemed to play varied instruments through their melodious voices.

> *Adṛṣṭa-pūrvāś ca mṛgāś ca gāvo grāsaṃ jajakṣur abhitas tadā kila,*
> *Dṛṣṭvā Raghūṇāṃ pravara-prabhāvam ardhaṃ samaśnanti tyajanti cārdham.* (4, continues)

Deer and cows, beholding the unprecedented glory of the foremost of Raghu's line, forgot their grazing. They ate only half of each mouthful and let the other half fall.

अन्वय:—तदाकिल रघुणां प्रवर प्रभावं दृष्ट्वा अदृष्टपूर्वा: अभित मृगाश्चगावो ग्रासं जजक्षु: अर्द्धमर्द्धमश्नंति च अर्द्धं त्यजन्ति ॥४॥

अर्थ:—उस समय रघुवंश में श्रेष्ठतम श्रीराम का प्रभाव देखकर जो, पहले किसी के द्वारा नहीं देखे गये थे, ऐसे मृग तथा गायें, ग्रासों को खाते हुए आधा ही खाते हैं, आधा छोड़ देते हैं ॥४॥

मू०-निमेषहीनोर्द्धमुखाः समंताद्विषाण कर्णौकृतवंतएकैं ।
मुञ्चंति नेत्रैर्जलविंदुमुत्तमंस्तब्धानि रोमाणि षडिंद्रियाणि ॥५॥

अन्वय:—समंतात् निमेष हीनोर्द्धमुखाः विषाण कर्णै एकै कृतवन्तः नेत्रैः उत्तमः जल विन्दुमुंचति रोमाणि षड्न्द्रियाणि स्तब्धानि ॥५॥

अर्थ:— उस वन के चारों तरफ चरने वाली मृग और गायें अपलक नेत्रों से अपने मुख को आकाश की तरफ उठाकर अपने कान और सींग को एक करते हुए, नेत्रों से उत्तम जल विन्दुओं को बहा रहे हैं, तथा जिनके रोम कूप और छः ज्ञानेन्द्रियाँ स्तम्भित हो गयी हैं ॥५॥

मू०-दृष्ट्वाद्भुतं रासरसं मनोज्ञं योगीवभोगीगतदेहबुद्धिः ।
विनिः सृतार्द्धोविवराद्धराच्चनिश्चेष्टितोभेक निमग्नभोगः ॥६॥

अन्वय:—अद्भुतं मनोज्ञं रासरसं दृष्ट्वा भोगी योगीव गतदेह बुद्धि भेक भोगः धरात् विवरात् च विनिः सृतार्द्धो निश्चेष्टितो निमग्नः ॥६॥

अर्थ:—अद्भुत मन रमणीय रास रस को देख करके सभी भोगाशक्त लोग योगियों की तरह देह बुद्धि रहित हो गये । मेढक खाने वाला साँप पृथ्वी से और बिलों से आधा निकल करके चेष्टाहीन होकर आनन्द मग्न हो गया ॥६॥ (गी० अ० २ श्लोक ५६) के अनुसार सूक्ष्म चाहना (वासना) कि निवृति तत् पद वाच्य सर्व स्वतन्त्र प्रेरक परमात्मा का (नाम, रूप, लीला, धाम) दर्शन होने पर हो जाती है यहाँ स्पष्ट रूप से दिखता है ।

मू०-काचिच्च पंचानन मध्य मध्यामालेव वाला प्रियकंठलग्ना ।
अभ्रं परिभृच्चपलेव चंचला श्यामा चलान्निः सृतहेमधारा ॥७॥

अन्वय:—काचित् बाला पंचाननमध्य मध्या माला इव प्रियकण्ठ लग्ना चपलेव चञ्चला अभ्रं परिभृत श्यामाश्चलात् निसृत हेमधारा ॥७॥

Chapter Four - Even the Animals Enter Absorption

Overcome by Rama's unprecedented splendour, the grazing deer and cows stopped with their food half-eaten. (4, completed)

> *Nimeṣa-hīnod-dha-mukhāḥ samantād viṣāṇa-karṇau kṛtavanta ekaṃ,*
> *Muñcanti netrair jala-bindum uttamaṃ stabdhāni romāṇi ṣaḍ-indriyāṇi.* (5)

They stood on every side without blinking, faces lifted upward, ears and horns appearing as one. Tears streamed from their eyes; their hair and all six faculties became motionless in devotional absorption.

> *Dṛṣṭvādbhutaṃ rāsa-rasaṃ manojñaṃ yogīva bhogī gata-deha-buddhiḥ,*
> *Viniḥsṛtārdho vivarād dharāyā niśceṣṭito bheka-nimagno bhogaḥ.* (6)

A serpent, half-emerged from its earthen hole in search of a frog, saw the wondrous and enchanting *rāsa*. Like a yogi who has lost all awareness of the body, it became utterly still and submerged in bliss.

The commentator notes that this makes a philosophical point visible: subtle desire ceases when the independently directing Supreme Self is encountered through the divine name, form, play, and abode.

> *Kācic ca pañcānana-madhya-madhyā māleva bālā priya-kaṇṭha-lagnā,*
> *Abhraṃ pariṣvajya lateva cañcalā śyāmācalād iva mṛta-hema-dhārā.* (7, continues)

One slender-waisted maiden clung to her beloved's neck like a garland. Embracing his cloud-dark form like a golden vine, she resembled a shining stream of molten gold descending a dark mountain.

अर्थः—और सिंह के कमर के समान कमर वाली कोई बाला माला की तरह से प्रियतम के कण्ठ में लगी हुई, मेघ में लपटी हुई या विजुली की तरह चंचला श्याम पर्वत से निकली हुई सोने की धारा सी शोभित हो रही है ॥७॥

मू०—काचिच्चरामा रमणीय वेषाकामावशाद्राम मुखं चुचुम्वे ।
मुदा सरचन्द्रमसः सकाशात्सुधां ययाचे च चकोरिका किम् ॥८॥

अन्वयः—च रमणीय बेषा काचित् रामा काम अवशात् राममुखं चुचुम्बे च मुदा सरच्चन्द्रमसः सकाशात् किं चकोरिका सुधां ययाचे ॥८॥

अर्थः और रमणीय शृंगार वाली कोई रामा काम के सम्यक् प्रकार वस में होकर श्रीराम जी के मुख को चूम रही हैं, किंवा आनन्द में भर कर के शरदपूर्णिमासी के चन्द्रमा से क्या चकोरी अमृत की याचना कर रही हैं ? ॥८॥

मू०—नब्यासुभब्या युत सब्य दक्षिणे भुजौ ददौ चारुगले प्रियायाः।
स्वर्णाद्रिमध्ये पतिता यथाचला धाराद्विधा भूमकलिंदजायाः ॥९॥

अन्वयः—सब्यदक्षिणे नब्यासुभब्या अयुत प्रियायाः चारुगले भुजौ ददौ यथा कलिंदजायाः चला धाराद्विधाभूम स्वर्णाद्रिमध्ये पतिता ॥९॥

अर्थः—दाहिने बायें तरफ नवीना अतिसय सुन्दरी दस हजार की संख्या में प्रियाओं के मध्य, प्रिया जू के सुन्दर गले में दोनों भुजाओं को दिये हुए प्रियतम ऐसे शोभित हैं, जैसे यमुना जी की चलायमान दो धारायें सोने के पहाड़ के मध्य में गिरी हुई हैं ॥९॥

मू०—उत्फुल्लतापिच्छ समंस्फुरद्वपुर्नितम्बिनी मध्यगत शुभ्रप्रदम् ।
विभाति तन्मन्मथचित्तमर्दनं यथातरु स्वर्णलताभिरावृता ॥१०॥

अन्वयः—नितम्बिनीं मध्यगतं मन्मथचित्तमर्दनं उत्फुल्लतापिच्छसमं वपुः स्फुरत् स्वर्णलताभिरावृतम् यथा तरुं वपुः विभाति ॥१०॥

अर्थः—सुन्दर नितम्ब वाली के मध्य गत (कमर) शुभ प्रदान देने वाले कामदेव के मन को मर्दित करने वाले जिस प्रकार सोने के लता से लपेटे हुए, तरु के समान मोर पंख के समान वर्ण श्री विग्रह (प्रियतम जू) शोभित हो रहे हैं ॥१०॥

मू०—काचित्क्वच्चित्कुंज गतासुबाला कामाकुला रामसुखं निरीक्षती ।
ह्रियानकिंचिद्वदति स्वभिज्ञा करे करन्यासविदस्यकिंचित् ॥११॥

Original source - Scan 47 of 116

Chapter Four - Moonlight Among Dark Clouds

The golden-complexioned beloved, clasped about Rama's dark form, shone like a stream of gold pouring from a blue-black mountain. (7, completed)

> *Kācid ramā ramaṇīya-veṣā kāmāvaśād Rāma-mukhaṃ cucumba,*
> *Mudā śarac-candramasaḥ sakāśāt sudhāṃ yayāce ca cakorikā kim.* (8)

One beautifully adorned maiden, overcome by love, kissed Rama's face. Was she a chakori joyfully begging nectar from the full autumn moon?

> *Navyāsu bhavyāyuta-savya-dakṣiṇe bhujau dadau cāru-gale priyāyāḥ,*
> *Svarṇādri-madhye patitā yathācalā dhārā dvidhā bhūmi-Kalindajāyāḥ.* (9)

Amid ten thousand lovely young companions to his right and left, Rama placed both arms around the beautiful neck of his beloved. They shone like the two moving streams of the Yamuna falling between mountains of gold.

> *Utphulla-tāpīccha-samaṃ sphurad-vapur nitambinī-madhyagataṃ śubha-pradam,*
> *Vibhāti tan Manmatha-citta-mardanaṃ yathā taruḥ svarṇa-latābhir āvṛtaḥ.* (10)

Standing among the graceful women, Rama's auspicious, radiant body-dark like a fully opened peacock feather and able to humble even Kama-shone like a dark tree wrapped in golden vines.

> *Karābhijñā kare saṃjñāṃ viditvā kvacit kuñjagatā su-bālā,*
> *Kāmākulā Rāma-mukhaṃ nirīkṣatī hriyā kiñcin na vadati.* (11, continues)

One lovely maiden understood the secret sign made by Rama's hand and entered a secluded bower. Gazing at his face, overwhelmed by love, she stood too shy to speak.

अन्वयः—करन्यास विदस्य करे स्वभिज्ञा क्वचित्कुंजगता सुबाला कामा-कुला राममुखं निरीक्षती ह्रिया किंचित् न वदति ॥११॥

अर्थः - हाथ के संकेत को जानने वाले के हाथ के संकेत को अपने लिए कुछ समझ कर कोई सुन्दरी बाला किसी कुञ्ज में पहुँची हुई, श्रीराम मुख को देखती हुई, लज्जा से कुछ बोलती नहीं है ॥११॥

मू०—काचिच्चवाला विमलानिकुंजे सुखेनरामं परिरंभ्यसस्मिता ।
निरीक्षतीचारुमुखं श्रियायुतं पुनः पुनश्चुम्बति सादरेण ॥१२॥

अन्वयः—काचित् विमला वाला सुखेन निकुञ्जे सस्मिता रामं परिरम्य-श्रियायुतं चारुमुखं निरीक्षती पुनः पुनः सादरेण चुम्बति ॥१२॥

अर्थः—कोई सुन्दरी बाला सुख पूर्वक किसी कुञ्ज के भीतर मन्द-मन्द मुसक्याती श्रीराम जी को आलिङ्गन करके शोभा युक्त सुन्दर मुख श्रीराम जी को देखती हुई बड़े आदर पूर्वक बार-बार चूमती है ॥१२ ।

मू०—कांतामुखं वीक्ष्य रघुत्तमेन विहस्य पद्मानन मात्मनस्ततः ।
पुनः कथं संकुचितं च चुंवने दृष्ट्वा शरच्चंद्रमसः प्रकाशम् ।१३।

अन्वयः—ततः शरदचन्द्रमसः प्रकाशं आत्मनः पद्माननं रघुत्तमेन विहस्य कान्तामुखं बीक्ष्य पुनः कथं चुम्वने संकुचितं दृष्ट्वा ॥१३॥

अर्थ-उसके बाद श्री रघुनन्दन शरदपूर्णिमा के चन्द्र प्रकाश के समान अपने कमल मुख से हँस करके प्यारी के मुख को देख कर फिर किसी प्रकार चुम्बन करने से संकुचित देख कर ॥१३॥

मू०—वराननी वराननां गगामुदा विराजते कदाकुहुक्षयांतरे किमुद्गता सुचन्द्रिका । विदग्ध चारु नागर व्रतौरस प्रिया क्वचिद्यथा नवीन नीरदैः समाचितौ सुभूधरौ ॥१४॥

अन्वयः - रसव्रतौ विदग्धचारु नागरः क्वचिद् प्रिया यथा नवीन नीरदैः सुभूधरौ समाचित्तौ मुद्रा बराननां गगाविराजते कदा बराननी कुहुक्षपान्तरे सुचन्द्रिका किं उद्गता ॥१४॥

अर्थः—रस ही भोग करना है, व्रत जिसका रस व्रत में पण्डित सुन्दर चतुर प्रियतम जू कहीं परम प्रिया को जैसे नवीन मेघों के द्वारा सोने के दो पहाड़ को

Original source - Scan 48 of 116

Chapter Four - Intimate Play in the Bowers

Having followed Rama's hand-sign into a bower, the maiden gazed upon his face but, overcome by modesty, could say nothing. (11, completed)

> *Kācic ca bālā vimale nikuñje sukhena Rāmaṃ parirabhya sasmitā,*
> *Nirīkṣatī cāru-mukhaṃ śriyāyutaṃ punaḥ punaś cumbati sādareṇa.* (12)

In a pure and secluded bower, another maiden gently embraced Rama with a soft smile. Gazing upon his beautiful, radiant face, she kissed him again and again with loving reverence.

> *Kāntā-mukhaṃ vīkṣya Raghūttamena vihasya padmānanam ātmanaḥ tataḥ,*
> *Punaḥ kathaṃ saṅkucitaṃ ca cumbane dṛṣṭvā śarac-candramasaḥ prakāśam.* (13)

Rama smiled with his own lotus face, radiant as the autumn moon, and looked upon his beloved. Seeing her hesitate shyly to kiss him again, he wondered at her sweet reserve.

> *Varānanī varānanaṃ mudā virājate kadā kuhu-kṣapāntare kim udgatā sucandrikā,*
> *Vidagdha-cāru-nāgara-vratau rasa-priyau kvacid yathā navīna-nīradaiḥ samācitau su-bhūdharau.* (14, continues)

The moon-faced beloved shone beside her noble lover. Was she lovely moonlight rising within the dense darkness of the rainy season? The refined and graceful pair, devoted to the vow of *rasa*, resembled golden heights enclosed by fresh rainclouds.

घेरा जाता है । इस प्रकार पकड़ के आनन्द में भर कर प्रिया का गीत गाते हुए विराजमान हो रहे हैं । वह सुन्दर मुख चन्द्रवती भी कभी श्रावण के अमावश्या के घोर रात्रि में क्या सुन्दर चन्द्रिका उदय हुई है ॥१४॥

मू०–सुरांगणानरांगणा समीरपांगनागणे वरांगणा पदत्विषा विनिर्जिता सुभामिनी । प्रिया, प्रियेण विद्धृता प्रनृत्यतीशुचिस्मिता विलोल पाच्चब्यन्य सत्पटां चलं सुचंचला ॥१५॥

अन्वयः—सुरांगणानरांगणा समीरपांगना गणे बिनिर्जिता पदत्विषा वरांगणा सुभामिनी प्रियाप्रियेण विद्धृताशुचिस्मिता प्रनृत्यती च विलोलया पटांचलं सुचंचला सुव्यन्यसत् ॥१५॥

अर्थः—देवकन्या, राजकन्या, गाग कन्याओं के समाज में अपने प्रभाव से सबके प्रभाव को जीत लेने वाली श्रेष्ठ नारी सुन्दर प्रकाशवती प्रिया (सीता) को प्रियतम ने (दोनों हाथों से) पकड़े तो मन्द मुसक्याती हुई ऐसा नृत्य किया उनकी चंचलता से शरीर के सभी कपड़े अत्यन्त चंचल हो करके शोभित हो रहे हैं ॥१५॥

मू०–नृत्यश्रमायाः शिथिलीकृतांगया मल्लिप्रसूनानि पतन्ति केशात् । अपूर्व शोभां नितरां प्रपेदिरे जलोपलानां विकिरंतिमेद्याः ॥१६॥

अन्वयः—नृत्यश्रमायाः शिथिली कृतांगया मल्लिप्रसुनानि केशात् पतन्ति मेघाः जलोपलानां विकिरंति (इव) नितरां अपूर्व शोभां प्रपेदिरे ॥१६॥

अर्थः—नृत्य के परिश्रम से ढीले हुए अंग वाली के केशों से मालती फूल गिर रहे हैं, मानो (जैसे) मेघ जल के पत्थरों को फेंकते हैं । इस प्रकार अतिसय अपूर्व शोभा प्राप्त हो रही है ॥१६॥

मू०–अलोलपाणि चरणास्मित दृग्विभंगी विभ्रच्चलद्बलय कंकण-नूपुरादीन् । आश्लिष्ट कंठकुचको जनकात्मजाया रामोरराज भवनाटक नाट्यवेषः ॥१७॥

अन्वयः—चलत् बलय कंकण नूपुरादीन् विभ्रत् जनकात्मजायाः आश्लिष्ट कण्ठ कुचकः अलोल पाणि चरणास्मितदृग्विभंगी नाटक भवः नाट्य वेषः रामोरराज ॥१७॥

Chapter Four - The Dance of Sita and Rama

The fair beloved among Rama's cloud-dark forms appeared like moonlight rising in the deep darkness of the rainy season. Filled with the joy of play, she sang of her beloved's deeds. (14, completed)

> *Surāṅganā-narāṅganā-samīra-pannagāṅganā-gaṇe varāṅganā pada-tviṣā vinirjitā subhāminī,*
> *Priyā priyeṇa vidhṛtā pranṛtyatī śuci-smitā vilola-pāñcavya-nya-sat-paṭāñcalaṃ sucañcalā.* (15)

Sita, supreme among women and surpassing the splendour of celestial maidens, royal women, and daughters of the serpent race, was held by both hands by her beloved. Smiling purely, she danced so gracefully that every fold and border of her garments trembled in beauty.

> *Nṛtya-śramāyāḥ śithilī-kṛtāṅgayā mallī-prasūnāni patanti keśāt,*
> *Apūrva-śobhāṃ nitarāṃ prapedire jalopalānāṃ vikiranti meghāḥ.* (16)

As her limbs relaxed from the exertion of dancing, jasmine blossoms fell from her hair. They created an unprecedented beauty, like hailstones scattered from a raincloud.

> *Alola-pāṇi-caraṇā smita-dṛg-vibhaṅgī vibhrac-calad-valaya-kaṅkaṇa-nūpurādīn,*
> *Āśliṣṭa-kaṇṭha-kucako Janakātmajāyā Rāmo rarāja bhava-nāṭaka-nāṭya-veṣaḥ.* (17)

With hands and feet moving in rhythm, smiling eyes casting expressive glances, and bracelets, bangles, and anklets ringing as they swayed, Rama embraced the neck and breast of Janaka's daughter. He shone as the supreme dancer upon the theatre of existence.

अर्थः—चंचल कंकण नूपुरादिकों को धारणा की हुई श्री जानकी जी कण्ठ कुच आलिङ्गित अङ्ग वाले अचंचल हाथ, पैर, मन्द मुसक्यान, नेत्रों के टेढ़ी कटाक्ष वाले नाटक जनित वेषयुक्त श्रीराम जी शोभित हो रहे हैं ।।१७।।

मू०—लसल्ललित नीरद द्यूतिदलद्वपुः श्यामलम् ।
दधत्सुस्थिर तडिल्लता जनकनन्दिनी वामतः ।। १८ ।।

अन्वयः—सुस्थिर तडितलता जनकनन्दिनी वामतः दधत् ललित नीरद द्यूति श्यामल वपुः दलत् लसत ।।१८।।

अर्थः—अचंचल विजली सदृश्य लता स्वरूप श्री जानकी जी को वाम अंग में धारण किये हुए, सुन्दर मेघ के समान प्रकाशमान श्याम शरीर को हिलाते हुए शोभित हो रहे हैं ।।१८।।

मू०—कलित कमल कौतुकं निजजनस्य संजीवनम ।
हरत्हररिपोर्मनोरसिक मौलि मालं भजे ।। १६ ।।

अन्वयः—हररिपोर्मनोहरत् कलित कमल कौतुकं निज जनस्य संजीवनं रसिक मौलिमालं भजे ।।१६।।

अर्थः- श्री शंकर जी शत्रु कामदेव के मन को हरते हुए हाथ में कमल को घुमाते हुए (शोभित) अपने निजी जनों के प्राण संजीवन रसिक मौलि माला को (मैं) हम भजते हैं ।।१६।।

मू०—रामस्य वामे दक्षे च राजते मतकामिनी ।
यथासूत्रैर्मरकतं वेष्टितं पुरटं वहिः ।। २० ।।

अन्वयः—रामस्यबामे च दक्षे मत्तकामिनी यथा पुरटं सूत्रैः बहिः मरकतं बेष्टितं राजते ।।२०।।

अर्थः—श्रीराम जी के बायें और दाहिने मत्तवाली कामिनियाँ जिस प्रकार सोने के धागा से बाहर में मरकतमणि पोही (गुंथी) जाती हैं, इस तरह से शोभित हैं ।।२०।।

मू०—मृदङ्ग मुरली बीणा पणवानक झर्झरान् ।
वादयन्ति प्रयत्नेन नानायन्त्राश्च नारिकाः ।। २१ ।।

Chapter Four - The Dance of Sita and Rama

Rama’s body shone darkly, with the lovely radiance of a fresh raincloud. On his left he held Janaka’s daughter, who gleamed like a motionless vine of lightning against that cloud. (17, completed)

> *Lasal-lalita-nīrada-dyuti-dalad-vapuḥ śyāmalaṃ*
> *Dadhat susthira-taḍil-latāṃ Janaka-nandinīṃ vāmataḥ.* (18)

Dark as a newly opened raincloud and radiant with gentle beauty, Rama bore Janaka’s daughter at his left like a steady streak of lightning.

> *Kalita-kamala-kautukaṃ nija-janasya sañjīvanaṃ*
> *Harat-hara-ripor mano rasika-mauli-mālaṃ bhaje.* (19)

I worship the crown-garland of connoisseurs of divine love: he playfully holds a lotus, restores life to his own devotees, and steals even the mind of Love-the adversary of Hara.

> *Rāmasya vāme dakṣe ca rājate matta-kāminī,*
> *Yathā sūtrair marakataṃ veṣṭitaṃ puraṭaṃ bahiḥ.* (20)

Love-intoxicated women shone on Rama’s left and right, like an emerald set about and enclosed in gleaming gold.

> *Mṛdaṅga-muralī-vīṇā-paṇavānaka-jharjharān,*
> *Vādayanti prayatnena nānā-yantrāś ca nārikāḥ.* (21, continues)

The women carefully played *mṛdaṅgas*, flutes, vīṇās, small drums, kettledrums, cymbals, and many other instruments.

अन्वयः—नारिकाः मृदङ्ग मुरली बीणा पणवानक झर्झरान् च नाना-यंत्राः प्रयत्नेन बादयन्ति ॥२१॥

अर्थः—(उस रास मण्डल में) श्री किशोरी जी की सखियाँ मृदंग, मुरली, बीणा, पणव (ढुढ्ढी) झालों को तथा और भी नाना प्रकार के यंत्रों को, सुन्दर ताल स्वर से यत्नपूर्वक बजाती हैं ॥२१॥

मू०-सप्तस्वरेण गायन्ति छोलाक्यं रागरागिणी ।
माधुर्येणवरार्हेण विदग्धा राम सद्गुनान् ॥ २२ ॥

अन्वयः—राम सद्गुदान् विदग्धा वरार्हेण माधुर्येण सप्तस्वरेण छोलाक्यं रागरागिणी गायन्ति ॥२२॥

अर्थः—श्रीराम जी के उत्तम गुणों को जानने में पण्डिता उत्तम ढंग में माधुर्य पूर्वक सातों स्वरों से मन को उमङ्ग पहुँचाने वाली रागरागिनियों को गातीहैं ॥२२॥

मू०-तेन बाद्येन गानेन मोहितो रघुनन्दनः ।
स्वगुणेन गुणग्राही कामिनी कामनास्पदः ॥ २३ ॥

अन्वय—स्वगुणेन गुणग्राही कामिनी कामनास्पदः रघुनन्दनः तेन गानेन वाद्येन मोहितः ॥२३॥

अर्थः—अपने गुणों से ही आश्रितों के गुणों को ग्रहण करने वाले अपनी कामिनियों के सभी कामों के निवास स्थान श्री रघुनाथ जी उन संगीत गान वाद्यों से मोहित हो गये ॥२३॥

मू०-प्रियया सहितः प्रेम्णाहास्यलास्ये मनोदधे ।
रासाजिरे रसावेशात्कारयामास मण्डलीम् ॥ २४ ॥

अन्वयः—रसावेशात रासाजिरे मण्डलीम् कारयामास प्रेम्णा प्रियया सहितः हास्यलास्ये मनोदधे ॥२४॥

अर्थः—रस के आवेश में आकर रास के आंगन में मण्डलीम् (सखियों के समाज का) मण्डल बना अनुराग में भरकर प्रिया जी के सहित हास्य-लास्य भावों में मन को लगाये ॥२४॥

मू०-रणयन्नूपुरंपादे क्वणयन्कंकणंकरे ।
कलयन्किकिणीं कट्यां वलयान्वादयन् मुहुः ॥ २५ ॥

Original source - Scan 51 of 116

Chapter Four - The Rasa Celebration

With great skill, the women filled the bowers with the sound of *mṛdaṅgas*, flutes, vīṇās, drums, cymbals, and many other instruments. (21, completed)

> *Sapta-svareṇa gāyanti chollākyaṃ rāga-rāgiṇīḥ,*
> *Mādhuryeṇa varārheṇa vidagdhā Rāma-sad-guṇān.* (22)

The accomplished singers used the seven notes to unfold varied melodies and their feminine modes. With incomparable sweetness, they sang of Rama's noble virtues.

> *Tena vādyena gānena mohito Raghunandanaḥ,*
> *Sva-guṇena guṇa-grāhī kāminī-kāmanāspadaḥ.* (23)

Enchanted by that music and song, Raghunandana-the discerning appreciator of excellence, whose own virtues make him the object of every loving woman's desire-became wholly absorbed in delight.

> *Priyayā sahitaḥ premṇā hāsya-lāsye mano dadhe,*
> *Rāsājire rasāveśāt kārayāmāsa maṇḍalīm.* (24)

Together with his beloved, he lovingly gave his heart to smiling dance and graceful play. Immersed in *rasa* upon the dancing ground, he formed the dancers into a circle.

> *Raṇayan nūpurau pāde kvaṇayan kaṅkaṇau kare,*
> *Kalayan kiṅkiṇīṃ kaṭyāṃ valayān vādayan muhuḥ.* (25, continues)

Anklets rang upon his feet and bracelets chimed upon his wrists; the little bells at his waist sounded while his bangles beat out their music again and again.

अन्वयः—पादे नूपुरं रणयन् करे क्वण्यन्कंकणं कट्यां किंकिणीं कलयन् मुहुः वलयान् वादयन् ॥२५॥

अर्थः—पैरों में नूपरों को छमकाते हुए, हाथों में कंकणों को कुनकुनाते हुए, कमर में किंकिणियों को कलकलाते हुए फिर हाथों में छूले कड़े को बजाते हुए ॥२५॥

मू०—नीलपीताम्वरधरौ स्रग्विणौ च शुचिस्मितौ ।
विराजेते महापीठे तुमुले रास मण्डले ॥ २६ ॥

अन्वयः—तुमले रास मण्डले महापीठे नीलपीताम्वरधरौ स्रग्विणौ च शुचिस्मितौ ते विराजे ॥२६॥

अर्थः—तुमुल महारास मण्डल के महामणिमय सिंहासन पर नीले और पीले वस्त्रों को धारण किये हुए फूलों की लम्बी माला पहने हुए मन्द मुस्कराते हुए वे शोभित हो रहे हैं ॥२६॥

मू०—सर्वाः सर्वे प्रनृत्यन्ति नृत्ययन्ति परस्परम् ।
गायन्ति गाययंत्यश्च नन्दतिनदन्यति च ॥ २७ ॥

अन्वयः—सर्वाः सर्वे नृत्यन्ति परस्परम् प्रनृत्ययन्ति च गाययंत्यः गायन्ति च नदयन्ति नदन्ति ॥२७॥

अर्थः—सभी सखियाँ अपने-अपने साथ के रामरूप को नचाती हैं, नाचती हैं, और गवाती हैं, गाती हैं, और खूब आनन्द देती हैं, और आनन्दित होती हैं ॥२७॥

मू०—लोलालकाः परिभ्रान्त्या बेणी श्रेणी भिरंजिताः ।
वंक ताटंक धारिण्यो गंड मण्डल मण्डिताः ॥ २८ ॥

अन्ववः—बेणीश्रेणीभिरंजिताः परिभ्रात्या लोलालकाः बंकताटंक धारिण्यो गंड मण्डल मण्डिताः ॥२८॥

अर्थः—(वे सब सखियाँ) रास मण्डल के मध्य में अपनी-अपनी सिर के चोटियों से सुन्दर शोभिता घूमाती हुई सिर की अलकावलियाँ चंचल हो रही हैं, अर्धचन्द्राकार मणि के ताटंक (कान का भूषण) को धारण की हुई उनके कपोल मण्डल पर सुन्दर भूषित हो रहे हैं ॥२८॥

Chapter Four - The Rasa Celebration

As the dance quickened, anklets rang at the feet, bracelets chimed upon the hands, and the girdle's little bells and circling bangles sounded again and again. (25, completed)

> *Nīla-pītāmbara-dharau sragviṇau ca śuci-smitau,*
> *Virājete mahāpīṭhe tumule rāsa-maṇḍale.* (26)

Clad in blue and yellow garments, garlanded and smiling with spotless joy, Sita and Rama shone upon the exalted seat amid the jubilant circle of the *rāsa*.

> *Sarvāḥ sarve pranṛtyanti nṛtyayanti parasparam,*
> *Gāyanti gāyayantyaś ca nandanti nandayanti ca.* (27)

Every woman and every companion danced, and each inspired the others to dance. They sang and made one another sing; they rejoiced and caused one another to rejoice.

> *Lolālakāḥ pariśrāntyā veṇī-śreṇī-virājitāḥ,*
> *Vaṅka-tāṭaṅka-dhāriṇyo gaṇḍa-maṇḍala-maṇḍitāḥ.* (28)

Wearied by dancing, their loosened curls swayed around rows of shining braids. Their curved earrings moved against their cheeks, adorning the lovely circles of their faces.

मू०–ताभिः परमहर्षेण रमते रघुनन्दनः ।
यथापूर्णशशीतारा बेष्टितो भाति निर्मलः ॥ २६ ॥

अन्वयः—रघुनन्दनः ताभि परमहर्षेण रमते यथा तारावेष्टितो निर्मलः पूर्णशशी भाति ॥२६॥

अर्थः—श्री रघुनाथ जी उन सखियों के द्वारा परम हर्ष में भरकर रमण कर रहे हैं । जैसे ताराओं से घिरे हुये निर्मल पूर्ण चन्द्रमा की तरह अनुभव हो रहे हैं ॥२६॥

मू०–एवं प्रियाः प्रयत्नेन प्राप्यरास रसोत्सवं ।
न त्यजन्ति प्रियं कान्तं तथा रंको ललामकम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—एवं राम रास रसोत्सवं प्रयत्नेन प्राप्य प्रियाः प्रियकान्तं यथा रंको ललामकम् न त्यजन्ति ॥३०॥

अर्थः—इस प्रकार श्रीराम जी के रास रस का उतसव वड़े प्रयत्न के साथ प्राप्त करके सभी प्रियायें जैसे दरिद्र उत्तम रत्न को जिस प्रकार नहीं त्यागता उसी प्रकार प्रियतम कान्त को नहीं छोड़ती हैं ॥३०॥

मू०–भजामि सरयूतीरमाश्रितं रघुनन्दनम् ।
सीता सह महारास रसिकं नटिनं हरिम् ॥ ३१ ॥

अन्वयः—सीता सह महारास रसिकं नटिनं सरयूतीर माश्रितं हरिम् रघुनन्दनं भजामि ॥३१॥

अर्थः—श्री सीता जी के साथ महारास के महारसिक सरयू तीर के (वनों का) आश्रयण लिए हुए भगवान् श्री रघुनाथ जी को मैं भजता हूँ ॥३१॥

मू०–स्मरावेश कलं चित्तं नाट्य गीतोत्सुकं परम् ।
अनन्त सखिभिर्युक्तं रामचन्द्रं भजाम्यहम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—अनन्त सखिभिर्युक्तं नाट्यगीतोत्सुकं परम् स्मरावेष कलंचित्तं अहं रामचन्द्रं भजामि ॥३२॥

अर्थः—अनन्त सखियों के समाज में घिरे हुए नृत्य गान की उत्सुकता से कामावेश में आकुलित चित्त श्रीराम जी को मैं भजता हूँ ॥३२॥

Original source - Scan 53 of 116

Chapter Four - The Rasa Celebration

> *Tābhiḥ parama-harṣeṇa ramate Raghunandanaḥ,*
> *Yathā pūrṇa-śaśī tārā-veṣṭito bhāti nirmalaḥ.* (29)

Raghunandana delighted with them in supreme happiness. Surrounded by those radiant companions, he shone like the stainless full moon encircled by stars.

> *Evaṃ priyāḥ prayatnena prāpya Rāma-rasotsavam,*
> *Na tyajanti priyaṃ kāntaṃ tathā raṅko lalāmakam.* (30)

Having at last attained the festival of Rama's divine love through devoted effort, the beloved companions would not leave their cherished lover-just as a pauper who has found a priceless jewel will never let it go.

> *Bhajāmi Sarayū-tīram āśritaṃ Raghunandanam,*
> *Sītā-saha-mahārāsa-rasikaṃ naṭinaṃ Harim.* (31)

I worship Raghunandana, who dwells upon the bank of the Sarayu: Hari, the consummate dancer and connoisseur of the great *rāsa* celebrated with Sita.

> *Smarāveśākulaṃ cittaṃ nāṭya-gītot-sukaṃ param,*
> *Ananta-sakhībhir yuktaṃ Rāmacandraṃ bhajāmy aham.* (32)

I worship Ramachandra, whose heart is stirred by the ecstasy of love, who delights supremely in dance and song, and who is surrounded by countless companions.

मू०-नर्मप्रियं रसान्नर्म नर्मवाक् नर्मचातुरम् ।
नर्मप्रियः प्रियायुक्तं भजामि रघुवंशजम् ।। ३३ ।।

अन्वयः—नर्मचातुरम् प्रियायुक्तं नर्मप्रियः नर्मवाक् नर्मप्रियं रसान्नं (खादन) रघुवंशजं भजामि ।।३३।।

अर्थः—नर्मता ही है प्रिय जिनको और नर्म चतुरता पूर्वक नर्म बोलते हुए (प्रिया जू के सहित श्री रघुनाथ जी को) (कोमल अतिप्रिय रसमय अन्न खाते हुए) भजन करता हूँ ।।३३।।

मू०-काचिद्विरह संतप्ता नितांन्तं कांतमुत्तमम् ।
न जहाति प्रियं तेन यथा प्रोषितभर्तृका ।। ३४ ।।

अन्वयः—काचिद्विरह संतप्ता ते न यथाप्रोषितभर्तृका नितांतं उत्तमम् कान्तं प्रियं न जहाति ।।३४।। तथा सा ।

अर्थः—कोई प्रिया प्रियतम के वियोग से संतप्त हुई, जिस प्रकार से परदेशी पति का समागम प्राप्त होने पर नितान्त उत्तम कामनीय प्रियतम को नहीं त्यागती हैं, उसी प्रकार सखियाँ भी प्रियतम को ।।३४।।

मू०-काचिद् दृष्ट्वा प्रियं काभिर्भुक्तं लांछनलांछितम् ।
छद्मना चाटुवाक्येन खंडिते वाचरत्य हो ।। ३५ ।।

अन्वयः—काभिर्भुक्तं (अतएव) लांछन लांछितम् प्रियं दृष्ट्वा छद्मनां चाटुवाक्येन अहो खंडिता इव आचरति ।।३४।।

अर्थः—किसी सखी के द्वारा भोगे हुये, अतएव भोग के चिन्हों से चिन्हित अपने प्रियतम को देखकर छलमय चाटुवाक्य बोलती हुयी आश्चर्य है, खंडिता नायिका सी आचरण करती है ।।३५।।

मू०-काचित्प्रियं प्रणमति प्रागुक्त्वा चाप्रियं ह्रिया ।
पुनः प्रसन्नाय सतीकलहान्तरिता यथा ।। ३६ ।।

अन्वयः—काचित् यथा कलहान्तरिता सती पुनः प्रसन्नाय ह्रिया च अप्रियं प्रागुक्त्वा च प्रियं प्रणमति ।।३६।।

अर्थः—कोई जैसे प्रियतम से कलह करने वाली हो, इस प्रकार होते हुए भी फिर प्रियतम को प्रसन्न करने के लिए लजाती हुई पहले अप्रिय शब्द कह करके फिर प्रियतम को प्रणाम करती है ।।३६।।

Original source - Scan 54 of 116

Chapter Four - The Eight Heroines

> *Narma-priyaṃ rasāntarmaṃ narma-vākyaṃ narma-cāturam,*
> *Narma-priyā-priyā-yuktaṃ bhajāmi Raghuvaṃśajam.* (33)

I worship the descendant of Raghu, lover of tender jokes and inwardly immersed in *rasa*, clever in playful speech and united with beloved companions who delight in such loving sport.

> *Kācid viraha-santaptā nitāntaṃ kāntam uttamam,*
> *Na jahāti priyaṃ tena yathā proṣita-bhartṛkā.* (34)

One heroine, long scorched by separation, would not leave her most excellent beloved after regaining him. She embodied the *proṣita-bhartṛkā*, the faithful lover whose husband has been far away.

> *Kācid dṛṣṭvā priyaṃ kābhir bhuktaṃ lāñchana-lāñchitam,*
> *Chalamānā cāṭu-vākyena khaṇḍitevācaraty aho.* (35)

Another saw upon her beloved the telltale marks of pleasure enjoyed with someone else. Feigning anger despite his coaxing words, she behaved like the offended *khaṇḍitā* heroine.

> *Kācit priyaṃ praṇamati prāg uktvā cāpriyaṃ hriyā,*
> *Punaḥ prasattaye satī kalahāntaritā yathā.* (36)

Another, ashamed of the harsh words she had spoken earlier, bowed before her beloved to win back his favour. Thus the virtuous maiden became the *kalahāntaritā*, separated from him by a lovers' quarrel.

मू०-काचित्संकेत कुंजांतर्गता तत्र न पश्यति ।
प्रियं सख्यं भर्त्सतिस्म विप्रलब्धेव भामिनी ।। ३७ ।।

अन्वयः—काचित् भामिनी संकेत् कुंजांतर्गता प्रियं सख्यं न पश्यति विप्रलब्धेव भर्त्सतिस्म ।।३७।।

अर्थः—कोई प्रकाशवती सखि एक कुन्ज से सांकेतिक दूसरे कुन्ज में गई तो वहाँ प्रिय सखा को न देखकर विप्रलब्ध स्त्री की तरह डांटने फटकारने लगी ।।३७।।

मू०-काचित्कुञ्जगता बाला तत्रा दृष्ट्वा प्रियं स्वकम् ।
विरहानल तप्तांगा भवत्युत्कण्ठिता यथा ।। ३८ ।।

अन्वयः—काचित् बाला कुञ्जगता तत्र स्वकम् प्रियं अदृष्ट्वा यथा उत्कण्ठिता विरहानल तप्तांगा भवति ।।३८।।

अर्थः—कोई बाला सखि अपने कुञ्ज में गयी, वहाँ अपने प्रियतम को नहीं देखी, तो जैसे उत्कण्ठिता स्त्री हो इस प्रकार विरहाग्नि से संतप्त अंग वाली हो गयी ।।३८।।

मू०-काचित्मालां ग्रंथयती गायंति प्रियचेष्ठितं ।
पुष्पशय्यां सज्जयति यथा वासक सज्जिका ।। ३९ ।।

अन्वयः—काचित्मालां ग्रंथयती यथा वासक सज्जिका यथा प्रिय चेष्टितं गायन्ती पुष्पशय्यां सज्जयति ।।३९।।

अर्थः—कोई बाला माला गूँथती हुई जिस प्रकार वासक सज्जिका स्त्री होती हैं, उस प्रकार प्रियतम की चेष्टिाओं के गीत गाती हुई फूलों की शय्या सजा रही हैं ।।३९।।

मू०-काचित् प्रियं न त्यजतिक्षणमात्रमुरः स्थलात् ।
प्राणात्परमसंगोप्यं यथास्वाधीन भर्तृका ।। ४० ।।

अन्वयः—काचित् प्राणात्परम संगोप्यं प्रियं उरस्थलात् क्षणमात्रं यथा स्वाधीन भर्तृका न त्यजति ।।४०।।

अर्थः—कोई प्रिया प्राणों से भी अधिक परम अनुराग में छिपाये हुए प्रियतम को अपने उरस्थल से जैसे स्वाधीनभर्तृका (नायिका का गुण है) इस तरह से नहीं त्यागती हैं ।।४०।।

Chapter Four - The Eight Heroines

> *Kācic ca saṅketa-kuñjāntar-gatā tatra na paśyati,*
> *Priyaṃ sakhyaṃ bhartsayitvā vipralabdheva bhāminī.* (37)

One radiant maiden went from her own bower to another appointed as their meeting place. When she did not find her beloved companion there, she reproached him like the disappointed *vipralabdhā* heroine.

> *Kācit kuñja-gatā bālā tatrādṛṣṭvā priyaṃ svakam,*
> *Virahānala-taptāṅgā bhavaty utkaṇṭhitā yathā.* (38)

Another young woman entered her bower but did not see her own beloved. Her limbs burned in the fire of separation, and she became the yearning *utkaṇṭhitā* heroine.

> *Kācin mālāṃ granthayantī gāyantī priya-ceṣṭitam,*
> *Puṣpa-śayyāṃ sajjayati yathā vāsaka-sajjikā.* (39)

Another wove a garland while singing of her beloved's charming deeds and prepared a bed of flowers, like the *vāsaka-sajjikā* who adorns herself and her chamber for his arrival.

> *Kācit priyaṃ na tyajati kṣaṇa-mātram uraḥ-sthalāt,*
> *Prāṇāt param asaṅgopyaṃ yathā svādhīna-bhartṛkā.* (40)

Another would not release her cherished beloved from her breast for even a moment, guarding him as something dearer than life itself. She was like the *svādhīna-bhartṛkā*, whose lover remains wholly devoted to her.

मू०–काचित्कांतार्थिनीकांतमुदिश्य गच्छतिद्रुतम् ।
कुञ्जात्कुञ्जं प्रविशति यथाभिसारिका मुदा ॥४१॥

अन्वयः—काचित् कान्तार्थिनी कान्तं उद्दिश्य मुदा कुञ्जात् कुञ्जं द्रुतं प्रविशति यथाभिसारिका गच्छति ॥४१॥

अर्थ.—कोई कान्त की चाहना वाली प्रिया कान्त को खोजती हुई आनन्द पूर्वक एक कुञ्ज से दूसरे कुञ्ज में शीघ्रतापूर्वक बैठती है, जैसे अभिसारिका (नायिका का गुण है) चलती है ॥४१॥

मू०–काचिन्मानवती बालां प्रणयेन वशीकृता ।
प्रयत्नश्च इत्याह वाचयंश्चाटुवाक्यतः ॥ ४२ ॥

अन्वयः—काचित् प्रयत्नः चाटुकवाक्यतः मानवतीबालां प्रणयेन वशीकृता वाचयनः इत्याह ॥४२॥

अर्थः—कोई सखी बड़े परिश्रम से और चुटकीले बचनों से किसी मानवती बाला को प्रणय प्रेम के अधीन करके बोलती हुई इस प्रकार कही ॥४२॥

मू०–हावभाव प्रभावज्ञा रामाग्रे कापिसस्मित ।
गानयुक्तैर्महावाद्यैस्तोषिता रासमण्डले ॥ ४३ ॥

अन्वयः—कापि हाव-भाव प्रभावज्ञा गानयुक्तैर्महावाद्यैः रासमण्डले तोषिता रामाग्रे सस्मिता ॥४३॥

अर्थः—कोई, हाव-भाव के प्रभाव को समझने वाली, गान युक्त महावाद्यों के द्वारा रास मण्डल में संतुष्ट की हुई श्री रघुनाथ जी के आगे मुस्करा रही है ॥४३॥

मू०–काचिच्चामर हस्ता च काचिद्व्यजन हस्तकाः ।
सुगंधमाल्य हस्ता च स्थिता कमल हस्तका ॥ ४४ ॥

अन्वयः—काचिच्चामरहस्ता च काचिद्व्यजन हस्तकाः च सुगन्ध माल्य हस्ता कमल हस्तकाः स्थिता ॥४४॥

अर्थः—कोई सखि चामर को हाथ ली हुई, और कोई सखि पंखा हाथ में ली हुई, और कोई सखि सुगन्धित फूल माला हाथ में ली हुई, और कोई सुन्दर हाथ में सुन्दर कमल लेकर खड़ी हैं ॥४४॥

Chapter Four - The Companions' Loving Service

> *Kācit kāntārthinī kāntam uddiśya gacchati drutam,*
> *Kuñjāt kuñjaṃ praviśati yathābhisārikā mudā.* (41)

One lover, longing for her beloved and intent upon finding him, joyfully hurried from bower to bower like the bold *abhisārikā* who goes out to meet her lover.

> *Kācin mānavatīṃ bālāṃ praṇayena vaśīkṛtā,*
> *Prayatnaś cety āha vācyaṃś cāṭu-vākyataḥ.* (42)

With great effort and artful, coaxing words, one companion brought a proudly offended maiden back under love's gentle sway and spoke to her persuasively.

> *Hāva-bhāva-prabhāvajñā Rāmāgre kāpi sasmitā,*
> *Gāna-yuktair mahā-vādyais toṣitā rāsa-maṇḍale.* (43)

Another, expert in the power of gesture and expression, smiled before Rama. Amid the *rāsa* circle she was delighted by the magnificent instruments joined with song.

> *Kācic cāmara-hastā ca kācid vyajana-hastakā,*
> *Sugandha-mālya-hastā ca sthitā kamala-hastakā.* (44)

One companion stood with a fly-whisk in hand, another with a fan; one held a fragrant flower garland, and another stood bearing a beautiful lotus.

मू०-स्वर्णाधारे जलंकाश्चित्कृत्वा कौतूहलान्विताः।

मिष्टान्नैश्च समायुक्तं काश्चित्कांचन भाजनम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—काश्चित् स्वर्णाधारे जलं च काश्चित् कांचन भाजनं मिष्टान्नैः समायुक्तं कृत्वा कौतूहलान्विताः ॥४५॥

अर्थः—कोई सोने के झारी में जल लेकर, और कोई सोने के थाली में मिष्ठान्नों को भरकर कौतूहल युक्त हो रही हैं ॥४५॥

मू०-काचिद् घटं करे धृत्वा पूर्णमैरेयकं रहः ।

अव्यग्राग्रे प्रेमयुतादद‍ृशे राघवं मुदा ॥ ४६ ॥

अन्वयः—काचित् पूर्णमैरेयकम् घटं करे धृत्वा मुदा रहः अव्यग्र प्रेम-युता अग्रे राघवं ददृशे ॥४६॥

अर्थः—कोई मैरेय से भरा हुआ घड़ा हाथ में लेकर, आनन्द में भरी हुई प्रातः काल अव्यग्रचित्त होकर प्रेम से भरी हुई आगे श्री राघव जी को देखने लगी ॥४६॥

मू०-सितातपत्रं काश्चित्तु धृत्वातांवूलमुत्तम् ।

कुंकुमागर कस्तुरी चंदनाद्यैः प्रपूरितम् ॥ ४७ ॥

अन्वयः—काश्चित् सितात पत्रं तु कुम्कुमागर कस्तुरी चन्दनाद्यैः प्रपूरितं उत्तमं ताम्बूलं धृत्वा ॥४७॥

अर्थः—कोई सखि छत्र और कुंकुम, अग्र, कस्तूरी, चन्दनादि से परिपूर्ण ताम्बूल को हाथ में लेकर ॥४७॥

मू०-कांदोरकं धृताश्चान्या रामसेवा परायणाः ।

नानायंत्र कराः काश्चिदिंगितज्ञा मनोरमाः ॥ ४८ ॥

अन्वयः—अन्याः कांदोरकं धृता च रामसेवा परायणाः काश्चित् नानायंत्रकराः मनोरमाः इंगिताः ॥४८॥

अर्थः—कोई वक्ष स्थलों से शोभित श्री राम सेवा में परायण हैं, कोई अन्या विविध प्रकार के बाजाओं को हाथ में ली हुई हैं, ये सब इशारों को समझने वाली मन रमणीया हैं ॥४८॥

Chapter Four - The Companions' Loving Service

> *Svarṇādhāre jalaṃ kāścit kṛtvā kautūhalānvitāḥ,*
> *Miṣṭānnaiś ca samāyuktaṃ kāścit kāñcana-bhājanam.* (45)

Some eagerly brought water in vessels of gold, while others carried golden dishes filled with sweet delicacies.

> *Kācid ghaṭaṃ kare dhṛtvā pūrṇa-maireyakaṃ rahaḥ,*
> *Avyagrāgre prema-yutā dadṛśe Rāghavaṃ mudā.* (46)

One carried in her hand a jar filled with *maireya*, a fragrant festive drink. Calm and full of love in that secluded place, she joyfully came before Raghava and gazed upon him.

> *Sitātapatraṃ kāścit tu dhṛtvā tāmbūlam uttamam,*
> *Kuṅkumāgara-kastūrī-candanādyaiḥ prapūritam.* (47)

Some bore a white parasol, while others carried excellent betel prepared with saffron, aloe perfume, musk, sandalwood, and other fragrant ingredients.

> *Kāndorakaṃ dhṛtāś cānyā Rāma-sevā-parāyaṇāḥ,*
> *Nānā-yantra-karāḥ kāścid iṅgitajñā manoramāḥ.* (48)

Other lovely companions, wholly devoted to Rama's service, held *kāndoraka* service-vessels; still others carried varied instruments and understood his slightest gesture.

मू०-सेवंत्योहर रहः प्रीत्याः ससीतं रघुनन्दम् ।
रासेश्वरं निरीक्षन्ति सद्भक्तया भक्तवत्सलम् ।।४६।।

अन्वयः—भक्तवत्सलं रासेश्वरं ससीतं रघुनन्दनं सद्भक्तया प्रीत्याः अहररहः सेवन्त्यः निरीक्षन्ति ।।४६।।

अर्थः—भक्त वत्सल रामेश्वर श्री सीता जी के सहित रघुनाथ जी की, बड़े सुन्दर अनुराग से, सुन्दर भक्तिपूर्वक रात-दिन सेवा करती हुई देखती हैं ।।४६।। इसके आगे श्री हनुमान जी अपने मन को कहते हैं, कि हे मन श्री सीताराम जी के रास जल समुद्र में स्नान करो ।

मू०-रासार्णवे सुखजले चारुप्रेमतरंगैरंकिते ।
स्त्रीरत्नानां हेतोर्मज्जमनो रामचन्द्रस्य रासे ।।५०।।

अन्वयः—चारुप्रेमतरंकिते रासार्णवे सुख जले स्त्रीरत्नानां हेतोः रामचन्द्रस्य रासे ममज्ज ।।५०।।

अर्थः—सुन्दर प्रेम के तरंगों से लहरित रास समुद्र के सुख जल में स्त्रियाँ रूपी रत्नों (के परम प्रिय) श्री रामचन्द्र जी के रास में हे मेरा मन, मज्जन करो, (अवगाहन करो) ।।५०।।

मू०-सरसनिकासे प्रेमजलैः परिपूर्ण स्वर्णाग्याः ।
विकसितानन कमलं पिवति यत्र मधुव्रतो रामः ।।५१।।

अन्वयः—स्वर्णांग्याः प्रेमजलैः परिपूर्णे सरसनिकासे यत्र रामः मधुव्रतः विकसित आनन कमलं पिवति ।।५१।।

अर्थः—प्रकाशमान सोने के समान अंग वालियों के अनुराग जल से भरा हुआ रासलीला रस निकलने के स्थान में श्रीराम जी जहाँ पर भ्रमर वन खिले हुए मुख कमलों का रस पी रहे हैं ।।५१।।

मू०-रामोरसिक शशिवदनी विलशत्पतिरातश्रांत चेतावै ।
दलितां जनचय सदने तत्र किमुनिरंजनो विभातिस्म ।।५२।।

अन्वयः—पतिरति श्रान्तचेता दलितां जनचय सदने शशिवदनी रसिक रामो वै तत्र किमुनिरंजन विभाति स्म ।।५२।।

अर्थः—पति के साथ विलास से श्रमिता जिनका आँख, का अंजन समूह

Chapter Four - The Ocean of Rasa

> *Sevantyo 'har-ahaḥ prītyā sasītaṃ Raghunandanam,*
> *Rāseśvaraṃ nirīkṣanti sad-bhaktyā bhakta-vatsalam.* (49)

Serving Sita and Raghunandana lovingly day after day, the companions gazed with pure devotion upon the Lord of the *rāsa*, who is ever tender toward his devotees.

Hanuman now turns inward and addresses his own mind: "O mind, bathe in the ocean of Sita and Rama's *rāsa*."

> *Rāsārṇave sukha-jale cāru-prema-taraṅgair aṅkite,*
> *Strī-ratnānāṃ hetor majja mano Rāmacandrasya rāse.* (50)

O my mind, plunge into Ramachandra's *rāsa*: an ocean whose waters are bliss, beautifully marked by waves of love, and cherished for the jewel-like women who move within it.

> *Sarasa-nikāse prema-jalaiḥ paripūrṇe svarṇāṅgyāḥ,*
> *Vikasitānana-kamalaṃ pibati yatra madhuvrato Rāmaḥ.* (51)

There, in the fountainhead of *rasa*, filled with the waters of love flowing from women whose limbs shine like gold, Rama becomes a honeybee drinking deeply from their blossoming lotus faces.

> *Rāmo rasika-śaśivadano vilasann atirata-śrānta-cetā vai,*
> *Dalitāṃ Janakajā-sadane tatra kim u nirañjano vibhāti sma.* (52, continues)

In Janaka's daughter's palace, moon-faced Rama-the stainless connoisseur of love-sportingly shone, his heart delightfully wearied by the intensity of their loving play. Who could describe the incomparable splendour revealed there?

विचलित हो गया, ऐसे महल में चन्द्रमुखियों के रसिक राम जी विलास करते हुए वहाँ पर क्या निरंजन अनुभव हो रहे हैं ।।५२।।

मू०-विलसदलस नेत्रां रामगात्रानुरक्तां सुरुचिमुख पद्मेस्वेदविन्दू-दधानां। शिथिल कुचकच श्रीं विभ्रतीं भ्राजमानां नमति जनक-पुत्रीं प्रेमसंवर्द्धनींताम् ।।५३।।

अन्वयः—विलसत् अलस नेत्रां सुरुचिमुखपद्मे स्वेदविंदूदधानां शिथिल कुचकच श्रीं विभ्रतीं भ्राजमानां प्रेम सम्वर्द्धनीं, तां रामगात्रानुरक्तां जनक पुत्रीं नमति ।।५३।।

अर्थः—विलासमय अलसाये हुए सुन्दर नेत्र वाली, सुन्दर मन रमणीय मुख कमल में पसीने के बिन्दुओं को धारण की हुई, शिथिल वक्ष स्थल और केशलशे वाली, शोभा को धारण की हुई, प्रकाशवती, उन प्रियतम के अनुराग को बढ़ाने वाली श्री जनक पुत्री को कोई नमस्कार कर रही हैं ।।५३।।

मू०-अमल कमल नेत्रं जानकी प्रेमपात्रं सजल जलद गात्रं पीतवस्त्रं दधानम् । उरसिवनजमालं कौस्तुभा सक्तकंठं स्मितरुचिर विकासं रामचन्द्रं भजेऽहम् ।।५४।।

अन्वयः- अहं अमलकमल नेत्रं जानकी प्रेमपात्रं सजल जलद गात्रं पीतवस्त्रं दधानं उरसिवनजमालं कौस्तुभा सक्तकण्ठं स्मितरुचिर विकासं रामचद्रं भजे ।।५४।।

अर्थः—मैं (नाम हनुमान वक्ता) निर्मल कमल के समान नेत्र वाले श्री जानकी जी के अतिसय प्रेम पात्र, जल भरे हुए मेघ के समान श्री विग्रह में पीला वस्त्र धारण किये हुए, कण्ठ में कौस्तुभमणि धारण किये हुए सुन्दर मन्द मुस्क्यान का प्रकाश (विकास) करने वाले श्री रामचन्द्र जी को भजता हूँ ।।५४।।

इति श्रीमद्हनुमत्संहितायां परम रहस्ये महारासोत्सवे
श्रीहनुमदग्रस्त संवादे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

श्रीसीताराम रहस्य रसराजैकनिष्ठ दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणार-विन्द मकरन्द रसलम्पट श्री जानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा "श्रीहनुमत्संहिता" श्रीसीतारामरहस्य प्रकाशिका टीका चतुर्थोऽध्यायः ।

Original source - Scan 59 of 116

Chapter Four - Closing Praise of Sita and Rama

In Sita's palace, the spotless and moon-faced Rama shone as the supreme connoisseur of love. After the intensity of their intimate play, the divine couple rested in a beauty beyond description. (52, completed)

> *Vilasad-alasa-netrāṃ Rāma-gātrānuraktāṃ suruci-mukha-padme sveda-bindūn dadhānām,*
> *Śithila-kuca-kaca-śrīṃ vibhratīṃ bhrājamānāṃ namati Janaka-putrīṃ prema-saṃvardhanīṃ tām.* (53)

I bow to that radiant daughter of Janaka, whose lovely eyes are languid from amorous play, whose whole being clings in love to Rama's body, and whose beautiful lotus face bears beads of perspiration. With loosened bodice and hair she shines, ever increasing her beloved's love.

> *Amala-kamala-netraṃ Jānakī-prema-pātraṃ sajala-jalada-gātraṃ pīta-vastraṃ dadhānam,*
> *Urasi vana-ja-mālāṃ Kaustubhāsakta-kaṇṭhaṃ smita-rucira-vikāsaṃ Rāmacandraṃ bhaje 'ham.* (54)

I worship Ramachandra, whose eyes are spotless lotuses, who is the cherished vessel of Janaki's boundless love, whose body resembles a rain-laden cloud, and who wears a yellow garment. A garland of forest flowers rests upon his breast, the Kaustubha jewel adorns his neck, and a beautiful gentle smile unfolds upon his face.

Thus ends the fourth chapter of the *Hanumat Saṃhitā*, the supremely secret teaching on the great festival of the *mahārāsa*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

The printed Hindi exposition identifies the edition as the work of the rasika teacher Śrī Sītārāma Śaraṇa Jī Mahārāja of Madhukar, in the lineage of Śrī Agra Deva Ācārya, and closes the chapter under the title *Śrī Hanumat Saṃhitā*.

❋ अथ पंचमोऽध्याय: ❋

श्री अगस्त्य उवाच—

मू०—तवाननाद्वाक्य प्रभव प्रभाकरात्प्रफुल्लितं मद्हृदयं सरोरूहम् ।
सीतासखीभि: सहयत्र सांम्प्रतं मिलिदंवन्नंदति रामभद्र: ।।१।।

अन्वय:—यत्र तवाननाद्वाक्य प्रभव प्रभाकरात् मत्हृदयं सरोरूहं प्रफुल्लितं रामभद्र: सांप्रतं यत्र सीतासखीभि: सह च मिलिंदवत् रामभद्रोऽपि नंदति।।१।।

अर्थ:—श्री अगस्त जी बोले हे श्री हनुमान जी ! आप के श्री मुख वाणी से उत्पन्न सूर्य किरणों से मेरा हृदय कमल खिल गया है। श्री रामचन्द्र जी इस समय जहाँ श्री सीता जी के सखी समाज के साथ भ्रमर की तरह से आनन्दित हो रहे हैं ।।११।। इसके बाद श्री हनुमान जी बोले—

श्री हनुमानुवाच—

मू०—श्रान्तं कान्तान्नं कान्तं स्वेदेन परिपूरितं दृष्ट्वा राम: ।
प्रहृष्टात्मा मज्जनाय मनोदधे ।। २ ।।

अन्वय:—राम: कांतं कान्तानन्नं स्वेदेन परिपूरितं श्रान्तं दृष्ट्वा प्रहृष्टात्मा मज्जनाय मनोदधे ।।२।।

अर्थ:—श्री हनुमान जी बोले-श्रीराम जी अपने प्रकाशमान प्रिया जू के मुख को पसीने से परिपूर्ण (तरवतर) श्रमित देख कर प्रसन्न होकर श्री सरयू जी में स्नान करने के लिए मन बढ़ाये ।।२।।

मू०—ता: सर्वा प्रमुदितास्तत्र भगवन्तं रघुत्तमम् ।
नाना भरण सम्पन्ना वेष्टितास्नान चेतस: ।। ३ ।।

अन्वय:—तत्र स्नान चेतस: भगवन्तं रघुत्तमं नानाभरण सम्पन्ना ता: सर्वा: वेष्टिता प्रमुदिता: ।।३।।

अर्थ:—स्नान करने की चाहना वाले भगवान् श्री रामचन्द्र जी को नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से सम्पन्न, वे सब सखियाँ आनन्दित हो करके घेर लिये ।। ३ ।।

मू०—नृत्यवाद्यै: सुमधुरैराकीर्ण छत्र चामरै: ।
गच्छन्तौ भासमानौ हंसकुंजरगामिनौ ।। ४ ।।

Chapter Five - The Water Festival in the Sarayu

Agastya said:

> *Tavānanād vākya-prabhava-prabhākarāt praphullitaṃ mad-dhṛdayaṃ saroruham,*
> *Sītā-sakhībhiḥ saha yat sāmpratam milindavan nandati Rāmabhadraḥ.* (1)

The sun of speech rising from your mouth has made the lotus of my heart blossom. Tell me now of that place where Ramabhadra rejoices like a honeybee among Sita and her companions.

Hanuman said:

> *Śrāntaṃ kāntānanaṃ kāntaṃ svedena paripūritaṃ dṛṣṭvā Rāmaḥ,*
> *Prahṛṣṭātmā majjanāya mano dadhe.* (2)

Seeing the lovely face of his weary beloved covered with perspiration, Rama's heart filled with joy and he resolved that they should bathe.

> *Tāḥ sarvāḥ pramuditās tatra bhagavantaṃ Raghūttamam,*
> *Nānābharaṇa-sampannā veṣṭitāḥ snāna-cetasaḥ.* (3)

All the companions, adorned with varied ornaments and delighted at the thought of bathing, gathered around the blessed and supreme Raghava.

> *Nṛtya-vādyaiḥ sumadhurair ākīrṇau chatra-cāmaraiḥ,*
> *Gacchantau bhāsamānau haṃsa-kuñjara-gāminau.* (4, continues)

Sita and Rama proceeded amid sweet music and dancing, shaded by parasols and attended by fly-whisks. Their stately gait combined the grace of swans with the majesty of royal elephants.

अन्वयः—तौ हंसकुञ्जर गामिनौ सुमुधुरै नृत्यवाद्यै राकीर्ण छत्र चामरैः गच्छन्तं भासमानौ ॥४॥

अर्थः—दोनों सरकार (श्री सीताराम जू) हँस और हाथी की चाल से चलने वाले सुमधुर नृत्य गान वाद्यों से छत्र चामर से सुशोभित धीरे चलते प्रकाशमान हो रहे हैं ॥४॥

मू०—प्राप्तौ तौ सलिलाभ्या सन्तरंगैरूप शोभितम् ।
गन्धवन्तं श्रियाजुष्टं काम सन्दीपकारकम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—तरंगैरूप शोभितं गन्धवन्तं श्रियाजुष्टं कामसंदीप कारकम् सलिलाभ्यासं तौ प्राप्तौ ॥५॥

अर्थः—तरंगों से लहराती हुई शोभायमान सुगन्धित शोभा से युक्त काम को उद्दीप्त करने वाली सरयू धारा के किनारे वे दोनों सरकार प्राप्त हो गये ॥५॥

मू०—सरयूस्तं प्रियं दृष्ट्वा जानक्यालिंगितं विभुं ।
शीतलेन सुगन्धेन जलेन पदपङ्कजम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—सरयूः जानक्यालिंगितं प्रभुं तं प्रियं दृष्ट्वा शीतलेन सुगंधेन जलेन पदपंकजं प्रक्षालिवती ॥६॥

अर्थः—श्री सरयू जी श्री जानकी जी को आलिंगन किये हुए प्रभु उन प्रीतम श्रीराम जी को देख कर शीतल, सुगंधित जल से चरण प्रछालन किया ॥६॥

मू०—पूजयित्वा प्रसूनेन जलजेन प्रपूज्यवै ।
नानोपचारैर्नैवेद्यैः पूजयामास सा सती ॥ ७ ॥

अन्वयः—सा सती प्रसूनेन पूजयित्वा जलजेन (मुक्तामणि प्रवालेऽपि) प्रपूज्यवै नानोपचारै नैंवेद्यैश्च पूजयामास ॥७॥

अर्थः—उन सती प्रतिव्रता ने परम प्रियतम को सुमनों से पूजकर विशेष रूप से मणि मुक्ताप्रवालों से पूजकर नाना उपचारों नैवेद्यादिकों से प्रेम पूर्वक पूजन किया ॥७॥

मू०—ततः परमहर्षेण जानक्या सह राघवः ।
क्रीड्यन् वारि मध्ये च यथा मत्तमतंगजः ॥ ८ ॥

Chapter Five - Arrival at the Sarayu

With music, dancing, parasols, and fly-whisks surrounding them, the divine couple shone as they walked toward the river with the graceful majesty of swans and elephants. (4, completed)

> *Prāptau tau salilābhyāsaṃ sat-taraṅgair upaśobhitam,*
> *Gandhavantaṃ śriyā juṣṭaṃ kāma-sandīpa-kārakam.* (5)

The two reached the water's edge, beautified by lovely waves, fragrant and filled with splendour-a place that kindled the tenderness of love.

> *Sarayūs taṃ priyaṃ dṛṣṭvā Jānakyāliṅgitaṃ vibhum,*
> *Śītalena sugandhena jalena pada-paṅkajam.* (6)

The Sarayu beheld her beloved Lord embraced by Janaki and washed his lotus feet with her cool, fragrant waters.

> *Pūjayitvā prasūnena jalajena prapūjya vai,*
> *Nānopacāra-naivedyaiḥ pūjayām āsa sā satī.* (7)

That faithful river-goddess worshipped him with flowers and water-born lotuses, then honoured him lovingly with many offerings, services, jewels, and food.

> *Tataḥ parama-harṣeṇa Jānakyā saha Rāghavaḥ,*
> *Krīḍayan vāri-madhye ca yathā matta-mataṅgajaḥ.* (8, continues)

Then Raghava, filled with supreme delight, entered the water with Janaki and sported there like a joyful, love-intoxicated elephant.

अन्वयः—ततः जानक्या सहराघवः परमहर्षेण वारिमध्ये क्रीडयत् च यथा मत्तः मतंगजः ॥८॥

अर्थः—उसके बाद श्री जानकी जी के साथ श्री राघव जी परम हर्ष में भर करके जल के मध्य में बिहार करते हुए जैसा मत्तवाला हाथी होता है वैसे हो गये ॥ ८ ॥

मू०—सखीभिः सहितोभाति भगवान्सर्वकामदः ।
काचित्करे करं धृत्वा ह्यागाधे प्रक्षिपन्मुदा ।। ९ ।।

अन्वयः—सर्वकामदः भगवान् मुदाकरे काचित् करंधृत्वा ह्यागाधे प्रक्षिपन् सखीभिः सहतोभाति ॥९॥

अर्थः—सभी कामनाओं को सम्पूर्ण रूप से देने वाले भगवान् श्रीराम जी आनन्द में भरकर अपने हाथों से किसी सखि का हाथ पकड़ करके अगाध जल में फेंकते हुए सब सखियों के साथ शोभित हो रहे हैं ॥९॥

मू०—काचिच्चकैतवतया रामांगे निपतत्य हो ।
काचित्तीरात् प्रपतति जले काचिन्निमज्जति ।।१०।।

अन्वयः—अहो काचिच्चकैतवतया रामांगे निपतति काचित्तोरात् प्रपतति काचित् जले निमज्जयति ॥१०॥

अर्थः—आश्चर्य है कोई सखि ठगपना से श्रीराम जी के अग पर (ऊँचे से) कूद पड़ती है । कोई किनारे पर से गिर पड़ती है, कोई जल में डूब कर श्री रघुनाथ जी को डुबाती है ॥१०॥

मू०—यन्त्रितावाहुयन्त्रेण काचित्कमल लोचना ।
काचित् सिंजयन्ती करमुक्तेन बारिणा ।। ११ ।।

अन्वयः—काचित् कमल लोचनाबाहुयंत्रेण यंत्रिता काचित् कर मुक्तेन वारिणा सिंजयंती ॥११॥

अर्थः—कोई कमल लोचना सखि प्रीतम के दोनों भुजाओं से बँधी हुई हैं, कोई दोनों हाथों से जल को उछाल कर प्रियतम् (श्रीराम जी) को सींचती हैं ॥ ११ ॥

Chapter Five - Water Play

Raghava entered the Sarayu with Janaki in supreme happiness and roamed through the water with her like a joyous royal elephant. (8, completed)

> *Sakhībhiḥ sahito bhāti bhagavān sarva-kāmadaḥ,*
> *Kācit kare karaṃ dhṛtvā hy agādhe prakṣipan mudā.* (9)

The Lord who fulfils every loving desire shone among the companions. Taking one maiden by the hand, he joyfully drew her into the deep water.

> *Kācic ca ketavatyā Rāmāṅge nipataty aho,*
> *Kācic tīrāt prapatati jale kācin nimajjati.* (10)

What wonderful play! One mischievous companion leapt upon Rama's body; another plunged from the bank, while yet another disappeared beneath the water.

> *Yantritā bāhu-yantreṇa kācit kamala-locanā,*
> *Kācit siñcayantī kara-muktena vāriṇā.* (11)

One lotus-eyed maiden was caught in the living snare of Rama's arms, while another splashed her beloved with streams of water flung from both hands.

मू०-परस्परं जलकणान् सिंजयन्ति वरांगणा ।
काचिज्जलं करपादैस्ताडयन्ति मुहुर्मुहुः ॥ १२ ॥

अन्वयः—काचित्वरांगणा परस्परं जलकणान सिंजयंति काचित् मुहुर्मुहुः कर पादैः जलं ताडयन्ति ॥१२॥

अर्थः—कोई सुन्दर श्री विग्रह वाली सखि एक दूसरे को जल के कणों से सींचती है कोई हाथ पैरों से बार-बार जल को पीटती है ॥१२॥

मू०-महान्शब्दो भवत्तत्र समुद्रमथने यथा ।
काचित्सन्तारयन्प्रेम्णा काचिच्चोरस्य कारयत् ।।१३।।

अर्थः—काचित्प्रेम्णा संतारयन् काचित् उरस्यकारयत् तत्र यथा समुद्र मथने महान्शब्दोऽभवत् ॥१३॥

अर्थः—कोई अनुराग में भर करके तैरती हुई, कोई हृदय से हृदय लगाई है, इस प्रकार वहाँ पर जैसे समुद्र मंथन से महान शब्द होता है, ऐसा ही रहा है ॥ १३ ॥

मू०-निपत्य च महागाधे प्रहस्य रघुनन्दनः ।
काचित्मग्नभयात्कान्तं गाढमालिङ्गनं ददौ ।। १४ ।।

अन्वयः—काचित्मग्नभयातकांतं गाढमालिंगनं ददौ च प्रहस्य रघुनन्दनः महागाधे निपत्य (क्रीड्यति) ॥१४॥

अर्थः—कोई डूबने के भय से प्रीतम को गाढ़ आलिंगन देती है और श्री रघुनाथ जी हँस करके महाअगाध जल में कूद कर खेलने लगे ॥१४॥

मू०-काचित्प्रवाह पतिता तरंगैर्वारितां शुका ।
ह्रियानायाति निकटं सङ्कटं बहुमन्यते ।। १५ ।।

अन्वयः—काचित् तरंगैर्वारितांशुका प्रवाह पतिता संकटं बहुमन्यते ह्रियानिकटं न याति ॥१५॥

अर्थः—कोई सखि जल तरंगों से बही हुई कपड़ा वाली जल प्रवाह में गिर पड़ी संकट बहुत मानती है, परन्तु लज्जा के मारे (कारण) समीप नहीं आती है ।। १५ ।।

Chapter Five - Water Play

> *Parasparaṃ jala-kaṇān siñcayanti varāṅganāḥ,*
> *Kācij jalaṃ kara-pādais tāḍayanti muhur muhuḥ.* (12)

The beautiful women sprinkled one another with droplets. Some beat the water again and again with their hands and feet, sending showers through the air.

> *Mahāñ śabdo bhavat tatra samudra-mathane yathā,*
> *Kācit santārayan premṇā kācic corasi kārayat.* (13)

A tremendous sound arose, like the tumult of the churning ocean. One swam forward, full of love, while another pressed heart to heart in a close embrace.

> *Nipatya ca mahāgādhe prahasya Raghunandanaḥ,*
> *Kācin magna-bhayāt kāntaṃ gāḍham āliṅganaṃ dadau.* (14)

Laughing, Raghunandana plunged into the deepest water. Afraid that she might sink, one maiden clasped her beloved in a tight embrace.

> *Kācit pravāha-patitā taraṅgair vāritāṃśukā,*
> *Hriyā nāyāti nikaṭaṃ saṅkaṭaṃ bahu manyate.* (15)

One companion was caught in the current, and the waves displaced her garment. Too ashamed to come near, she regarded her predicament as a grave danger.

मू०-तां तु काचित्करेधृत्वा चानीता राघवान्तिके ।
लज्जयाधोमुखी भूत्वा निमज्जति जलेऽमले ॥ १६ ॥

अन्वयः—तां तु काचित्करेधृत्वा राघवांतिके चानीता लज्जयाधोमुखी भूत्वा अमले जले निमज्जति ॥१६॥

अर्थः—उस सखि को हाथ पकड़ करके कोई सखि श्री रघुनाथ जी के समीप लाई तो लज्जा के मारे नीचे मुख करके निर्मल जल में डूब गई ॥१६॥

मू०-चिबुकेद्वांगुलिं दत्वा गण्डं गण्डे नियुज्यताः ।
यथा कमल वक्रान्ते चञ्चरीकाश्चुचुम्बिरे ॥ १७ ॥

अन्वयः—गंडं गंडे नियुज्यताः (काश्चित्) यथा कमलवक्रान्ते चंचरीकाः चिबुके वांगुलिं दत्वा चुचुम्बिरे ॥१७॥

अर्थः—कपोल पर कपोल सटा करके कोई सखी जिस प्रकार कमल के मुख में भौंरा इस प्रकार चिबुक में दो अंगुली देकर चूमने लगी ॥१७॥

मू०-सुश्नातावारिभिः लिकन्नानीरहा विवृतानता ।
रुक्मांगी सूक्ष्मवसना नग्नामग्ना जले पुनः ॥ १८ ॥

अन्वयः—सुश्नातावारिभिः लिकन्नानीरहा विवृतानता रुक्मांगी सूक्ष्मवसना नग्ना पुनः जले मग्ना ॥१८॥

अर्थः—(कोई सखि) सुन्दर तरह से स्नान करके जल से भींजी हुई शरीर से जल बहता हुआ (कपड़ा शरीर में चिपक जाने के कारण से) लज्जा के मारे झुकी हुई सोने के समान गौर वर्ण वाली झिना वस्त्र पहनी हुई नग्न सदृश दिखाई पड़ने से पुनः जल में डूब गयी ॥१८॥

मू०-एवं नानाविधानेन क्रीडयित्वा पुनः पुनः ।
उत्तस्थौतीरमतुलं ताभिः सहविलासकृत ॥ १९ ॥

अन्वयः—एवं नानाविधानेन ताभिः सह विलासकृत पुनः पुनः क्रीड्यित्वा अतुलं वीरं उत्तस्थौ ॥१९॥

अर्थः—इस प्रकार नाना बिधानों से उन नायिकाओं के साथ विलास करते हुए फिर-फिर क्रीड़ा (कौतुक) करते हुए उत्तम घाट के किनारे उतर आये ॥१९॥

Chapter Five - Water Play

> *Tāṃ tu kācit kare dhṛtvā cānītā Rāghavāntike,*
> *Lajjayādho-mukhī bhūtvā nimajjati jale 'male.* (16)

Another companion took the embarrassed woman by the hand and brought her near Raghava. Overcome with modesty, she lowered her face and submerged herself in the clear water.

> *Cibuke dvāṅguliṃ dattvā gaṇḍaṃ gaṇḍe niyujya tāḥ,*
> *Yathā kamala-vakrānte cañcarīkāś cucumbire.* (17)

They placed two fingers beneath the chin, pressed cheek to cheek, and kissed like bees settling upon the curved petals of a lotus.

> *Susnātā vāribhiḥ klinnā nīrahā vivṛtānatā,*
> *Rukmāṅgī sūkṣma-vasanā nagnā magnā jale punaḥ.* (18)

One golden-limbed woman had bathed completely; her fine garment, drenched and clinging, left her form almost uncovered. Ashamed at appearing naked, she quickly sank beneath the water once more.

> *Evaṃ nānāvidhānena krīḍayitvā punaḥ punaḥ,*
> *Uttasthau tīram atulaṃ tābhiḥ saha vilāsa-kṛt.* (19)

After sporting with them again and again in many different ways, the master of loving play emerged with the companions upon the incomparable riverbank.

मू०-सर्वाभिरलिभिस्तत्र चाभाति जयशब्दकम् ।
ततो मंजुलकं कुञ्जं प्रविश्य परमाद्भुतम् ॥ २० ॥

अन्वयः - ततो परमाद्भुतं मंजुलकं कुञ्जं सर्वाभिरलिभिः प्रविश्य च तत्र जयशब्दकम् अभाति ॥२०॥

अर्थः—इसके बाद परम अद्भुत सुन्दर कुञ्ज में सब सखियों के साथ (प्रीतम) प्रवेश किये तो उस कुञ्ज के भीतर जय शब्द से सुन्दर गुञ्ज हुआ ॥२०॥

मू०-ततस्तु सुखदं धाम गमनेच्छु रघुत्तमः ।
हास्यलास्य विनोदेन प्राप्य स्थानमनुत्तमम् ॥ २१ ॥

अन्वयः—हास्यलास्य विनोदेन अनुत्तमं स्थानं प्राप्य ततः रघुत्तमः सुखदं धाम गमनेच्छु ॥२१॥

अर्थः हाव-भाव विनोदमयी चेष्टाओं से सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करके तब (इसके बाद) रघुनाथ जी सुखमय महल में जाने की इच्छा किये ॥२१॥

मू०-सुरागमुले विमले मण्डपे मणि मण्डिते ।
तोरणैर्हेम कलशैर्मणिस्तभै विराजिते ॥ २२ ॥

अन्वयः—सुरागमूले तोरणैर्हेम कलशैर्मणिस्तम्भै विमले मणिमण्डिते विराजिते ॥२२॥

अर्थः—कल्प वृक्ष के नीचे स्वर्णमयी तोरण, कलश, मणिमय खम्भाओं से रचना युक्त निर्मल मणिमय मण्डप में विराजे ॥२२॥

मू०-राकायास्तरणे दिब्ये विस्तीर्णे परमासने ।
तत्रसिंहासनं कान्तं नानामणिभिरावृतं ॥ २३ ॥

अन्वयः—विस्तीर्णे राकायास्तरणे दिब्ये परमासने तत्र नानामणिभिरावृतं कान्तं सिंहासनं ॥२३॥

अर्थः—विस्तार युक्त चन्द्रकान्त मणि के दिव्य बिछावन में वहाँ पर नाना मणियों से घिरा हुआ रचनायुक्त सिंहासन है ॥२३॥

मू०-तन्मध्ये षोडशदलं परमज्योतिर्मयं परम् ।
न्यवसद्राघवस्तत्र सीतया सहसुवृतः ॥ २४ ॥

Original source - Scan 65 of 116

Chapter Five - The Jeweled Bower

> *Sarvābhir lalibhis tatra cābhāti jaya-śabdakam,*
> *Tato mañjulakaṃ kuñjaṃ praviśya paramādbhutam.* (20)

Surrounded by all the playful companions, the divine couple entered a supremely wondrous and beautiful bower, which resounded with cries of victory.

> *Tatas tu sukhadaṃ dhāma gamanecchur Raghūttamaḥ,*
> *Hāsya-lāsya-vinodena prāpya sthānam anuttamam.* (21)

Then Raghuttama desired to proceed to the abode of bliss. Amid laughter, graceful dance, and joyous entertainment, he reached that unsurpassed place.

> *Surāga-mūle vimale maṇḍape maṇi-maṇḍite,*
> *Toraṇair hema-kalaśair maṇi-stambhair virājite.* (22)

Beneath a splendid wish-fulfilling tree stood a pure pavilion adorned with jewels, shining with ornamental arches, golden finials, and gem-studded pillars.

> *Rākāyās taraṇe divye vistīrṇe paramāsane,*
> *Tatra siṃhāsanaṃ kāntaṃ nānā-maṇibhir āvṛtam.* (23)

Upon a vast divine spread gleaming like the full moon stood a charming and exalted lion-throne covered with many kinds of precious stones.

> *Tan-madhye ṣoḍaśa-dalaṃ parama-jyotirmayaṃ param,*
> *Nyavasad Rāghavas tatra Sītayā saha suvrataḥ.* (24, continues)

At its centre was a supreme sixteen-petalled lotus made of pure radiance. There the noble Raghava sat together with Sita.

अन्वयः—तन्मध्ये परम ज्योतिर्मयं षोडशदलं तत्र परम सुवृतः सीतया सह राघवः निवसति ॥२४॥

अर्थः-उस सिंहासन के बीच में परम ज्योतिर्मय सोलहदल के कमल हैं, उस कमल में (सखियों के परम समाज से घिरे हुए) श्री सीता जी के सहित श्रीराम जी बैठे हैं ॥२४॥

मू०—तत्रकुञ्जान्यनेकानि फुल्लितानिह सर्वतः ।
पंक्षिसंघश्च निनदैर्नादितानि मनोहरैः ॥ २५ ॥

अन्वयः—तत्र सर्वतः फुल्लितानि अनेकानि कुञ्जानि इह मनोहरैः पक्षिसंघः निनदैर्नादितानि ॥२५॥

अर्थः—वहाँ पर चारों तरफ खिले हुए फूल वाले अनेक कुञ्ज हैं । इस स्थान में मनोहर पक्षियों के समूह का नाद गुञ्जित हो रहा है ॥२५॥

मू०—बसन्ताद्यर्तवोयत्र फल पुष्प समन्विताः ।
नवपल्लव नम्राग्रा भ्रमद्भ्रमर वेष्टिताः ॥ २६ ॥

अन्वयः—यत्र वसन्तादि रितवः नवपल्लव नम्राग्राभ्रमद्भ्रमर वेष्टिता फलपुष्प समन्विताः [लतातरवः सन्ति] ॥२६॥

अर्थः—जहाँ पर बसन्तादि सभी ऋतुयें हैं, नवीन पल्लवों में घूमते हुए भ्रमर झुण्ड के झुण्ड घेरे हुए हैं वैसे फल पुष्पों से युक्त बृक्ष लतायें हैं ॥२६॥

मू०—बहन्तिबाता पद्मानि सुखस्पर्श मनोरमाः ।
कामदा कामनीनां च मनोहलादकराः पराः ॥ २७ ॥

अन्वयः—कामनीनां कामदा पराः मनोह्लादकराः च सुखस्पर्शं मनोरमाः पद्मानि वाता वहन्ति ॥२७॥

अर्थः—कामिनियों के सभी कामनाओं के पूर्ण करने वाली परम मन को आह्लाद करने वाली मन रमणीय सुख स्पर्श वाली कमलों की हवा बह रही हैं ॥२७॥

मू०—तत्पद्मेषोड्शदले वयस्याः सन्तिसोत्सुकाः ।
क्रमेणतासां नामानि श्रूयतां मुनिसत्तम ॥ २८ ॥

Chapter Five - The Lotus Pavilion

In the heart of the jeweled lion-throne shone a radiant sixteen-petalled lotus. Surrounded by the foremost companions, Sita and Rama took their seat upon it. (24, completed)

> *Tatra kuñjāny anekāni phullitāni hi sarvataḥ,*
> *Pakṣi-saṅghāś ca ninadanti tāni manoharāṇi.* (25)

All around were innumerable bowers bursting into flower, and flocks of enchanting birds filled them with melodious cries.

> *Vasantādi-ṛtavo yatra phala-puṣpa-samanvitāḥ,*
> *Nava-pallava-namrāgrā bhramad-bhramara-veṣṭitāḥ.* (26)

There all the seasons, beginning with spring, were present at once. The trees were laden with fruit and flowers, their tips bending beneath tender new leaves and encircled by wandering bees.

> *Vahanti vātāḥ padmāni sukha-sparśā manoramāḥ,*
> *Kāmadā kāminīnāṃ ca manohlādakarāḥ parāḥ.* (27)

Delightful breezes carried the fragrance of lotuses. Their touch was gentle and blissful, fulfilling the lovers' desires and bringing supreme joy to their hearts.

> *Tat-patre ṣoḍaśa-dale vayasyaḥ santi ṣoḍaśa,*
> *Krameṇa tāsāṃ nāmāni śṛṇutāṃ munisattama.* (28, continues)

Upon the petals of that sixteen-petalled lotus dwell sixteen intimate companions. O best of sages, hear their names in order.

अन्वयः—तत् षोडशदले पद्मे सोत्सुकाः वयस्याः सन्ति हे मुनिसत्तम् क्रमेण तासां नामानि श्रूयतां ॥२८॥

अर्थः—उस सोलह दल के कमल में दल-दल प्रति बड़े उत्सुकता में समान उम्र वाली सखियाँ हैं। हे मुनि श्रेष्ठ श्री अगस्त जी मैं उन सखियों के नामों को क्रमशः कहता हूँ सुनिये ॥२८॥

मू०-उज्जलाकाञ्चनी चित्रा चित्र रेखा सुधामुखी।
हंस प्रसंसी कमला विशदाक्षी सुदंशका ॥ २६ ॥

मू०-चन्द्रानना चन्द्रकला माधुर्य्या शालिनी वरा।
कर्पुरांगी बरारोहा इत्याद्या षोड्शः स्मृता ॥ ३० ॥

अर्थः—१-उज्जला २-कांचनी ३-चित्रा ४-चित्र रेखा ५-सुधामुखी ६-हँसी ७-प्रसंसी ८-कमला ६-विशदाक्षी १०-सुदंशका ११-चन्द्रानना १२-चन्द्रकला १३-माधुर्यशालिनी १४-वरा १५-कर्पुरांगी १६-वरारोहा इस प्रकार से आदि अन्त तक सोलह गिनी गई है ॥२६,३०॥

मू०-तस्य पद्मस्योपदले राजन्ते षोड्शाङ्गनाः।
श्रृणुनामानि तासां वै महामुनिवरेश्वर ॥ ३१ ॥

अन्वयः—तस्य पद्मस्य उपदले षोड्शाङ्गना राजन्ते हे महामुनेश्वर वै तासां नामानि श्रृणु ॥३१॥

अर्थः—उस कमल के सोलह उपदलों में सोलह सखियाँ इस प्रकार रहती हैं हे महामुनिवरों के स्वामी श्री अगस्त जी निश्चय करके आप उन सोलहों के नामों को सुनिये ॥३१॥

मू०-शोभना शुभदा शान्ता संतोषा सुखदा सती।
चारुस्मिता चारुरूपा चावंगी चारुलोचनाः ॥ ३२ ॥
हेमा क्षेमा क्षेमदात्री धात्री धीरा धरास्मृता।
अनेक सेवाभिरता सेवन्ते निशिमुत्तमाः ॥ ३३ ॥

अर्थः—१-शोभना २-शुभदा ३-शान्ता ४-सन्तोषा ५-सुखदा ६-सती ७-चारुस्मिता ८-चारुरूपा ६-चार्वाङ्गी १०-चारुलोचना ११-हेमा १२-क्षेमा

Chapter Five - The Companions of the Lotus Pavilion

O foremost sage, I shall now name the sixteen companions who dwell upon the petals of the lotus, each radiant with the excellence of her own petal. (28, completed)

> *Ujjvalā Kāñcanī Citrā Citrarekhā Sudhāmukhī,*
> *Haṃsī Prasaṃsī Kamalā Viśadākṣī Sudarśakā.* (29)

They are Ujjvala, Kanchani, Chitra, Chitrarekha, Sudhamukhi, Hansi, Prasansi, Kamala, Vishadakshi, and Sudarshaka.

> *Candrānanā Candrakalā Mādhurya-śālinī Varā,*
> *Karpūraṅgī Varārohā ity ādyāḥ ṣoḍaśa smṛtāḥ.* (30)

The remaining six are Chandranana, Chandrakala, Madhuryashalini, Vara, Karpurangi, and Vararoha. These are remembered as the sixteen.

> *Tasya padmasyopadale rājante ṣoḍaśāṅganāḥ,*
> *Śṛṇu nāmāni tāsāṃ vai mahāmunivareśvara.* (31)

Sixteen more radiant women shine upon the subsidiary petals of that lotus. O lord among great sages, listen now to their names.

> *Śobhanā Śubhadā Śāntā Santoṣā Sukhadā Satī,*
> *Cārusmitā Cārurūpā Cārvaṅgī Cārulocanā.* (32)

They begin with Shobhana, Shubhada, Shanta, Santosha, Sukhada, Sati, Charusmita, Charurupa, Charvangi, and Charulochana.

> *Hemā Kṣemā Kṣemadātrī Dhānī Dhīrā Dharāsmṛtā,*
> *Aneka-sevābhiratā sevante nirnimeṣataḥ.* (33, continues)

The six who complete the group are Hema, Kshema, Kshemadatri, Dhani, Dhira, and Dharasmrita. Absorbed in many forms of loving service, they attend the divine couple without so much as blinking.

१३-क्षेमदात्री १४-धात्री १५-धीरा १६-धरास्मृता । अनेक उत्तम स्त्रियों में अनेक प्रकार की सेवा में आसक्त होकर सेवा करती हैं ॥३२,३३॥ इसके बाद कमल के बारह दल वाले आवरण में रहने वाली सखियों का नाम क्रमशः कहते हैं—

मू०—क्षीरोद्भवाभद्ररूपा भद्रदाभामवर्जिता ।
विद्युल्लता पद्मनेत्रा पावनी हंस गामिनी ॥ ३४ ॥
रमणीया प्रेमदात्री कुंकुमांगी रसोत्सुकाः ।
एतासख्यो वसन्त्यत्र दलेषु द्वादशेषु च ॥ ३५ ॥

अर्थः—१-क्षीरोद्भवा २-भद्ररूपा ३-भद्रदा ४-भामवर्जिता ५-विद्युल्लता ६-पद्मनेत्रा ७-पावनी ८-हंसगामिनी ९-रमणीया १०-प्रेमदात्री ११-कुंकुमांगी १२-रसोत्सुका, ये सब सखियाँ इस बारह दल वाले आवरण में रहती हैं ॥३४,३५॥ इसके आगे बारह उपदलों के रहने वाली सखियों के नाम कहते हैं।

मू०—महार्हामाधवी माल्या कामदा काम मोहिनी ।
रतीक्षती नितिवती प्रेमदा कुशला कला ॥ ३६ ॥
लीलाद्यायाश्चोपदले सेवन्ते रघुनन्दनम् ।
दृश्यन्ते च महाप्रेम मग्नाकौतूहलान्विताः ॥ ३७ ॥

अर्थः—१-महार्हा २ माधवी ३-माल्या ४-कामदा ५-काम मोहिनी ६-रतीक्षती ७-नितिवती ८-प्रेमदा ९-कुशला १०-कला ११-लीला १२-लीलावती (आदि शब्द से लीलावती है) ये बारह सखियाँ, बारह उपदल वाले आवरण में रहने वाली हैं, जो श्री रघुनाथ जी की सेवा करती हैं। इन बारहों को महाप्रेम में मग्न हुई महाकौतूहल वाली देखी जाती हैं ॥३६,३७॥ इसके आगे अष्टकुन्ज का वर्णन है—

मू०—ततोष्टदल मध्ये च नानासौभाग्य संयुते ।
कुंजाधिष्ठात्री सख्यस्तानृत्य सेवन तत्पराः ॥ ३८ ॥

अन्वयः—च ततोऽष्ट दल मध्ये नाना सौभाग्य संयुते नृत्यसेवन तत्पराः ताः कुञ्जाधिष्ठात्री सख्यः ॥३८॥

Chapter Five - The Circles of Companions

The sixteen companions of the subsidiary petals devote themselves unceasingly to varied forms of service. (33, completed)

The next ring has twelve petals, inhabited by the following companions:

> *Kṣīrodabhavā Bhadrarūpā Bhadradā Bhāvavarjitā,*
> *Vidyullatā Padmanetrā Pāvanī Haṃsagāminī.* (34)

Kshirodabhava, Bhadrarupa, Bhadrada, Bhavavarjita, Vidyullata, Padmanetra, Pavani, and Hamsagamini.

> *Ramaṇīyā Premadātrī Kuṅkumāṅgī Rasotsukā,*
> *Etāḥ sakhyo vasanti atra daleṣu dvādaśa ca.* (35)

Ramaniya, Premadatri, Kunkumangi, and Rasotsuka complete the twelve companions dwelling upon those petals.

Beyond them is another twelve-petalled circle:

> *Mahārhā Mādhavī Mālyā Kāmadā Kāma-mohinī,*
> *Ratīkṣatī Nitivaktī Premadā Kuśalā Kalā.* (36)

Its companions are Maharha, Madhavi, Malya, Kamada, Kamamohini, Ratikshati, Nitivakti, Premada, Kushala, and Kala.

> *Līlādayaś copadale sevante Raghunandanam,*
> *Dṛśyante ca mahāprema-mattāḥ kautūhalānvitāḥ.* (37)

Lila and Lilavati complete this circle. Drunk with the highest love and filled with joyous eagerness, these companions serve Raghunandana upon the surrounding petals.

> *Tato 'ṣṭa-dala-madhye ca nānā-saubhāgya-saṃyute,*
> *Kuñjādhiṣṭhātrī-sakhyas tā nṛtya-sevana-tatparāḥ.* (38, continues)

Before them lies an eight-petalled lotus endowed with every beauty. Its eight presiding companions govern the bowers and are wholly devoted to dance and service.

अर्थ:—और उस बारह दल के आगे अष्टदल वाले आवरण के मध्य नाना प्रकार के सौभाग्यों से युक्त जो नृत्यादि सेवाओं में सावधान हैं, उन अष्टकुञ्ज की अधिष्ठात्री सखियों का नाम आगे कहते हैं ॥३८॥

मू०-प्रथमवेष कुञ्जं तौ प्रविष्टौ मर्मभिर्वृतौ ।
विलासिनी सखी तत्र दृष्ट्वा रासेश्वरौ मुदा ॥ ३६ ॥

अन्वय:—प्रथमं तौ नर्मभिर्वृतौ वेष कुञ्जौ प्रविष्टौ तत्र बिलासिनी सखी रासेश्वरौ मुदा दृष्ट्वा ॥३६॥

अर्थ:—सबसे पहले युगल सरकार सखियों के नर्मलीलाओं के आनन्द से घिरे हुए श्रृंगार कुञ्ज में प्रवेश किये । उस कुञ्ज की प्रधान सखी विलासनी जी ने दोनों रासेश्वर को आनन्दमयी दृष्टि से देखा तो ॥३६॥

मू०-बेषंचकार शीघ्रं सा वस्त्रालङ्कार माल्यकैः ।
उभयोर्वरदम्पत्योरनुरूपं सुभक्तितः ॥ ४० ॥

अन्वय:—सुभक्तितः उभयोर्वरदम्पत्योरनुरूपं वस्त्रालङ्कार माल्यकैः सा शीघ्रं बेषं चकार ॥४०॥

अर्थ:—सुन्दर अनुराग पूर्वक दम्पति दोनों सरकार के मन के अनुकूल (अनुरूप) वस्त्रभूषण मालादिकों से उस विलासनी सखी ने शीघ्र श्रृंगार कर दिया ॥४०॥

मू०-गत्वा तौ मालती कुञ्जं सांगानन्द सखीयतः ।
तस्या सेवां संगृही तौ प्रेम्णा परमहर्षितौ ॥ ४१ ॥

अन्वय:—तौ मालती कुञ्जं गत्वा सांगानन्द सखी तस्या सेवां संगृहीतौ प्रेमणा यतः परम हर्षितौ ॥४१॥

अर्थः—दोनों सरकार मालती कुञ्ज में गये सांगानन्द सखि के सेवा को ग्रहण किये, जिससे दोनों सरकार उसके प्रेम से अति हर्षित हुए ॥४१॥

मू०-केलिकुञ्जांतरगतः श्रीरामः सीतया सह ।
यत्र वृन्दा तखी नित्या नित्यानन्दे निमज्जति ॥ ४२ ॥

अन्वय:—सीतया सह श्रीरामः केलिकुञ्जान्तरगतः यत्र नित्या वृन्दा-सखी नित्यानन्दे निमज्जति ॥४२॥

Original source - Scan 69 of 116

Chapter Five - The Eight Presiding Bowers

The foremost ring contains eight petals, each a distinct bower presided over by a principal companion skilled in dancing and the intimate service of the divine couple. (38, completed)

> *Prathamaṃ veṣa-kuñjaṃ tau praviṣṭau narma-bhṛt tau,*
> *Vilāsinī sakhī tatra dṛṣṭvā Rāseśvarau mudā.* (39)

First, the playful divine pair entered the Bower of Adornment. Its presiding companion, Vilasini, joyfully beheld the two Lords of the *rāsa*.

> *Veṣaṃ cakāra śīghraṃ sā vastrālaṅkāra-mālyakaiḥ,*
> *Ubhayor vardha-rūpyor anurūpaṃ subhaktitaḥ.* (40)

With beautiful devotion she quickly dressed and adorned them in garments, ornaments, and garlands perfectly suited to the ever-increasing beauty of each.

> *Gatvā tau Mālatī-kuñjaṃ Sāṅgānanda-sakhī yataḥ,*
> *Tasyāḥ sevāṃ saṅgṛhya tau premṇā paramaharṣitau.* (41)

They next entered the Jasmine Bower, where the companion Sangananda served them. Accepting her loving service, Sita and Rama became supremely delighted.

> *Keli-kuñjāntar-gatau Śrīrāmaḥ Sītayā saha,*
> *Yat vṛndā tatra nityā nityānande nimajjati.* (42)

Then Sita and Sri Rama entered the Bower of Play. The eternal circle of companions dwelling there is forever immersed in unbroken bliss.

अर्थः—श्री सीता जी के सहित श्रीराम जी केलिकुञ्ज के भीतर गये, जहाँ नित्य सखी वृन्दा नित्यानन्द में डूबती और डुबाती हैं ॥४२॥

मू०—विहरंस्तत्र हर्षेण केलि कौतूहलेन च ।
तोषयित्वा च यस्यां तां कामेन कलनेन च ॥ ४३ ॥

अन्वयः—तां कामेन कलनेन तोषयित्वा च यस्यां केलिकौतूहलेन च हर्षेण तत्र विहरन ॥४३॥

अर्थः—उस वृन्दा सखि को काम से और केलिकौतूहल से सन्तुष्ट करके जिस केलिकौतूहलों के द्वारा उस कुञ्ज में परम हर्ष से बिहार करके ॥४३॥

मू०—ततस्तु सुखदं नाम कुञ्जं दृष्ट्वा मनोरमम् ।
उभौ परम सन्तुष्टौ नित्या यत्र विराजते ॥ ४४ ॥

अन्वयः—तु ततः मनोरमं सुखदं नाम कुञ्जं दृष्ट्वा यत्र नित्या सखो विराजते उभौ परम सन्तुष्टौ ॥४४॥

अर्थः—उसके बाद फिर मनरमणीय सुखद नाम के कुञ्ज को देखे, जहाँ पर नित्या नाम की सखि विराजमान है । और दोनों सरकार परम सन्तुष्ट हुए ॥४४॥

मू०—ततौ हिंडोलके कुञ्जे डोलयित्वा मुहुर्मुहुः ।
प्रेम प्रदर्शनी सख्याः पूर्णकृत्वा मनोरथम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः—ततः हिंडोलके कुञ्जे मुहूर्मुहुः डोलयित्वा प्रेम प्रदर्शनी सख्या मनोरथं पूर्ण कृत्वा ॥४५॥

अर्थः—उसके बाद हिंडोल कुञ्ज में बार-बार झूल करके प्रेम प्रदर्शनी नाम की सखि का मनोरथ पूर्ण करके ॥४५॥

मू०—मनोज्ञं डोलनं कुञ्जं ययौ राम सह प्रिया ।
बसन्त रंगनी यत्र वसन्ती परम हर्षिता ॥ ४६ ॥

अन्वयः—यत्र परम हर्षिता बसन्तरंगनी सखि बसन्ति मनोज्ञं डोलनं कुञ्ज सहप्रिया रामः ययौ ॥४६॥

अर्थः—फिर जहाँ पर अत्यन्त हर्ष में भरी हुई बसन्त रंगनी नाम की सखि बास करती है, उस मनरमणीय डोलन कुञ्ज में प्रिया जू के सहित श्रीराम जी गये ॥ ४६ ॥

Chapter Five - The Eight Presiding Bowers

In the Bower of Play, Sita and Rama rejoiced with the eternal companion Vrinda, who remains perpetually immersed in divine bliss. (42, completed)

> *Vihārais tena harṣeṇa keli-kautūhalena ca,*
> *Toṣayitvā ca yasyāṃ tāṃ Kāmena Kalanena ca.* (43)

They pleased Vrinda with joyous roaming, intimate play, and the many arts of love, then wandered happily through the bower she governed.

> *Tatas tu sukhadaṃ nāma kuñjaṃ dṛṣṭvā manoramam,*
> *Ūhe parama-santuṣṭo Nityā yat virājate.* (44)

Next they beheld the enchanting Bower of Bliss, where the companion Nitya presides. The divine pair became supremely content in that delightful place.

> *Tato hindolakaṃ kuñjaṃ dolayitvā muhur muhuḥ,*
> *Premapradarśinī sakhyāḥ pūrṇakṛtvā manoratham.* (45)

They then entered the Swing Bower and swung again and again. In this way they fulfilled the loving wish of its companion Premapradarshini.

> *Manojñaṃ dolanaṃ kuñjaṃ yayau Rāmaḥ saha priyā,*
> *Vasantaraṅgiṇī yatra vasantī paramaharṣitā.* (46)

Rama and his beloved next went to another charming bower of swings, where the supremely delighted companion Vasantarangini dwells.

मू०-बसन्त कुसुमैर्युन्तु वेष्टितं परमाद्भुतम् ।
कोकिलादि गणैर्जुष्टं कामसंदीपकारकम् ।। ४७ ।।

अन्वय:—काम संदीपकारकम् कोकिलादि गणैर्जुष्टं यत् तु परमाद्भुतं बसन्त कुसुमैः बेष्टितम् ।।४७।।

अर्थः—काम संदीपकारक जो कोकिलादि से सेवित है, जिसको परम अद्भुत वासन्तिक फूलों से मंडित कर रखा है ।।४७।।

मू०-सखीभिः सीतयासार्द्धं गतोभोजन कुञ्जकम् ।
सदानुमोदनो नाम भौगैस्संतर्पिता मुदा ।। ४८ ।।

अन्वय:—सीतया सार्द्धं रामः सखीभिः भोजन कुञ्जकम् गतः सदानुमोदनी नामसुदा भौगैः संतर्पिता ।।४८।।

अर्थः—श्री सीता जी के सहित श्रीराम जी सखियों के द्वारा भोजन कुञ्ज में गये, सदानुमोदनी नाम की सखि को भोगों के द्वारा सम्यक् प्रकार से तृप्त किये ।। ४८ ।।

मू०-शमनीय चारुकुञ्जं दृष्ट्वान् भगवान प्रभुः ।
प्रहर्षमतुलं लेभे कोमलास्तरणैर्वृतम् ।। ४९ ।।

अन्वय:—प्रभुः भगवान् कोमलास्तरणैर्वृतं शमनीयं चारुकुञ्जं दृष्टवान् अतुलं प्रहर्षं लेभे ।।४९।।

अर्थः—सब तरह से समर्थ भगवान् श्रीराम जी कोमल बिछावन वाले कुञ्जों से घिरा शयन करने योग्य सुन्दर कुञ्ज को देखकर असीम हर्ष को प्राप्त हो गये ।। ४९ ।।

मू०-स्थित्वा यत्र सखीसाक्षात् श्रीमन्मदनमञ्जरी ।
सुष्वाप सीतासार्द्धं तस्थौ प्रेम्णा प्रवोधितः ।। ५० ।।

अन्वय:—यत्र साक्षात् श्रीमन्मदन मंजरी सखी आसीत् तया सीतया सार्द्धं स्थित्वा सुस्वाप प्रेम्णा प्रवोधितः तस्थौ ।।५०।।

अर्थः—जहाँ पर साक्षात् श्री मन्मदन मंजरी सखि जी रहती हैं । उस (शयन कुञ्ज) में बैठ करके फिर शयन कर गये । और फिर अनुराग पूर्वक प्रातः काल जागृत होकर बैठ गये ।।५०।।

Chapter Five - The Eight Presiding Bowers

> *Vasanta-kusumair yuktaṃ veṣṭitaṃ paramādbhutam,*
> *Kokilādi-gaṇair juṣṭaṃ kāma-sandīpa-kārakam.* (47)

That astonishing bower was enclosed by the blossoms of spring and filled with cuckoos and other melodious birds. Everything within it kindled the tenderness of love.

> *Sakhībhiḥ Sītayā sārdhaṃ gato bhojana-kuñjakam,*
> *Sadānumodinī nāma bhojais tarpita mudā.* (48)

With Sita and the companions, Rama entered the Dining Bower. There the companion Sadanumodini joyfully satisfied the divine pair with delicious foods.

> *Śāmanīyaṃ cāru-kuñjaṃ dṛṣṭavān Bhagavān prabhuḥ,*
> *Praharṣam atulaṃ lebhe komalāstaraṇāvṛtam.* (49)

The blessed Lord then beheld the lovely Bower of Repose, spread throughout with soft bedding, and experienced incomparable delight.

> *Sthitvā yat sakhī sākṣāt Śrīmanmadanamañjarī,*
> *Suṣvāpa Sītayā sārdhaṃ tataś ca premṇā prabodhitaḥ.* (50)

There the companion Manmadanamanjari herself attended them. Rama slept beside Sita and, when the time came, was gently awakened through love.

मू०—अष्टदलस्योपकोणे वल्लीपादमण्डिता ।
माधवी चम्पकामल्ली पुन्नागा मालती तथा ।। ५१ ।।
लवंगलतिकाधात्री तुलसी परमाद्भुताः ।
सर्वगन्धयुताः सर्वाः सर्वपुष्प प्रपूरिताः ।। ५२ ।।

अर्थः—अष्ट उपदलों के कोनों में लता वृक्षों से भूषित ये आठ वन हैं जिनका नाम— १-माधवी २-चम्पका ३-मल्ली ४-पुन्नागा ५ मालती और ६-लवंगलतिका ७ धात्री ८-परमाद्भुता तुलसी ये आठ वन सब प्रकार के सुगन्धों से परिपूर्ण सर्व प्रकार के फूलों से परिपूर्ण फूले हुए हैं ।।५१ व ५२।।

मू०—फलानि यत्र स्वादूनि पत्राणि चामृतादपि ।
तत्र सख्यो विराजन्ते यन्त्र हस्ता प्रहर्षिता ।। ५३ ।।

अन्वयः—यत्र अमृतादधि स्वादूनि फलानि च पत्राणि तत्र यन्त्र हस्ताः प्रहर्षिता सख्यो विराजते ।।५३।।

अर्थः—जहाँ पर अमृत से भी अधिक मीठे स्वाद वाले फल और पत्र हैं, उन वन में हाथों में वाद्यादि यन्त्रों को लिये हुए अत्यन्त हर्ष में भरी हुई सखियाँ बिराजती हैं ।।५३।।

मू०—गायन्त्यो नृत्य यन्त्यश्च बीक्षयन्त्यः सुदम्पती ।
तासां नामानि मुनिराट् श्रूयतां हृदिधारय ।। ५४ ।।

अन्वयः—गायन्त्यो नृत्ययन्त्यश्च सुदम्पती वीक्ष यन्त्यः हे मुनिराट् तासां नामानि श्रूयतां हृदिधारयः ।।५४।।

अर्थः—वे सब सखियाँ गान करती हुई, और नृत्य करती हुई, तथा सुन्दर दम्पती (युगल सरकार) को देखती हुई हे मुनियों के राजा श्री अगस्त जी उनके नामों को सुनिये और हृदय में धारण कीजिए ।।५४।।

मू०—बीणावती वीणहस्ता बेणुहस्ता सुगन्धिका ।
कविलास विलासेन शोभा शोभान्विता भवेत् ।। ५५ ।।

अर्थः—उन सखियों के ये नाम हैं १-वीणावती २-वीणाहस्ता ३-वेणुहस्ता ४-सुगंधिका ५-कविला ६-सविला ७-शोभा ८-शोभान्विता ।।५५।।

Original source - Scan 72 of 116

Chapter Five - The Forest Groves and Musicians

> *Aṣṭa-dalasyopakoṇe vallī-pādapa-maṇḍitāḥ,*
> *Mādhavī Campakā Mallī Punnāgā Mālatī tathā.* (51)

At the corners surrounding the eight-petalled lotus lie eight forests adorned with vines and trees: Madhavi, Champaka, Malli, Punnaga, and Malati are the first five.

> *Lavaṅga-latikā Dhātrī Tulasī paramādbhutāḥ,*
> *Sarva-gandha-yutāḥ sarvāḥ sarva-puṣpa-prapūritāḥ.* (52)

Lavanga-latika, Dhatri, and Tulasi complete the eight. Each wondrous grove is filled with every fragrance and every kind of flower.

> *Phalāni yatra svādūni patrāṇi cāmṛtād api,*
> *Tatra sakhyo virājante yantra-hastāḥ praharṣitāḥ.* (53)

There the fruits are sweeter than nectar, as are even the leaves. Joyful companions shine throughout those groves, carrying musical instruments in their hands.

> *Gāyantyo nṛtyayantyaś ca vīkṣayantyaḥ sudampatī,*
> *Tāsāṃ nāmāni munirāṭ śṛṇutāṃ hṛdi dhāraya.* (54)

They sing and dance while gazing upon the beautiful divine couple. O king among sages, hear their names and hold them within your heart.

> *Vīṇāvatī Vīṇahastā Veṇuhastā Sugāyikā,*
> *Kavilāsa Vilāsena Śobhā Śobhānvitā bhavet.* (55)

The first eight are Vinavati, Vinahasta, Venuhasta, Sugayika, Kavila, Savilasa, Shobha, and Shobhanvita-each distinguished by her own music, poetry, grace, or beauty.

मू०–सप्तस्वरान्मुखेनैव धृत्वासा सुखदा सती ।
खंजनाक्षी करे धृत्वा खंजरी रसमंजरी ॥ ५६ ॥

अन्वयः—मुखेनैव सप्तस्वरान् धृत्वा सुखदासती सा खंजरी करे घृत्वा खंजनाक्षी च रसमंजरी रराज ॥५६॥

अर्थः—मुख से ही सातों स्वरों को उच्चारण करती हुई अत्यन्त सुखदाई होने पर भी वे सब सखियाँ कोई खंजरी हाथ में लिये खंजनाक्षी नाम की साँखि तथा रसमंजरी ॥ ५६ ॥

मू०–गानकलाकरे नीत्वा मृदङ्गं मधुरस्वरम् ।
सारङ्गलोचनी सार्ङ्गी बादयत्यति हर्षिता ॥ ५७ ॥

अन्वयः—मधुर स्वरं मृदङ्गकरे नीत्वा गान कला अति हर्षिता सारङ्गलोचनी सारङ्गी वाद्यत् ॥५७॥

अर्थः—मधुर स्वर से बजाते मृदंग को हाथ में ली हुई गान कला और अत्यन्त हर्ष में भरकर सारंगी को बजाती हुई श्री सारंग लोचनी जी तथा सुखदामिनी जी आदि ॥ ५७ ॥

मू०–सुखदामिनी सुखस्पर्शा सुखमण्डलमण्डिता ।
सर्वाः सर्वरसाभिज्ञाः श्रीरामेङ्गितराधिकाः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—सुखदामिनी सर्वाः सर्वरसाभिज्ञाः सुखमण्डलमण्डिता सुखस्पर्शा रामेङ्गित राधिकाः ॥५८॥

अर्थः—सुखदामिनी जी आदि सभी सखियाँ सभी प्रकार के रसों को जानने वाली सुखमयी मण्डल रूप में भूषिता सभी सुखस्पर्शा (सुखमय स्वरूप वाली) है और श्रीराम जी के संकेतानुसार आराधना करने वाली हैं ॥५८॥

मू०–वराटके केशवराटकान्विते महामणींद्राद्भुत चारुमण्डपे ।
सोमार्कवह्निद्यूति कोटिवञ्चके चिंतामणेश्चित्त विमोहकारके ।५९।

अन्वयः—कोटि सोमार्क वह्नि द्यूति बंचके चित्त विमोहकारके चिंतामणेः महामणींद्राद्भुत चारु मण्डपे केशवराटकान्विते वराटके ॥५९॥

अर्थः—करोड़ों चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि के प्रकाश को ठगने वाला चित्त का अत्यन्त विमोहित करना वाला, चिंतामणि का और महामणीन्द्रों से अद्भुत सुन्दर

Original source - Scan 73 of 116

Chapter Five - The Forest Groves and Musicians

> *Saptasvarān mukhenaiva dhṛtvā sā Sukhadā Satī,*
> *Khañjanākṣī kare dhṛtvā khañjarī Rasamañjarī.* (56)

Sukhada and Sati produce the seven notes with their voices. Khanjanakshi holds the *khanjari* hand-drum, while Rasamanjari accompanies her in the music of *rasa*.

> *Gānakalā-kare nītvā mṛdaṅgaṃ Madhurasvaram,*
> *Sāraṅgalocanī sāraṅgī vādayaty ati-harṣitā.* (57)

Ganakala takes up the *mṛdaṅga* and Madhurasvara gives it a sweet voice, while the delighted Sarangalocani plays the *sarangi*.

> *Sukhadāminī Sukhasparśā Sukha-maṇḍala-maṇḍitā,*
> *Sarvāḥ sarva-rasābhijñāḥ Śrīrāmāṅgita-rādhikāḥ.* (58)

Sukhadamini, Sukhasparsha, and all the others adorn that circle of bliss. Each understands every mode of *rasa* and serves according to Sri Rama's slightest gesture.

> *Varāṭake keśa-varāṭakānvite mahāmaṇīndrādbhuta-cāru-maṇḍape,*
> *Somārka-vahny-ati-koṭi-vardhake cintāmaṇi-śrīta-vimohakārake.* (59, continues)

Within an astonishingly beautiful pavilion built of the greatest jewels stands a subtle chamber radiant with wish-fulfilling gems. Its brilliance exceeds that of millions of moons, suns, and fires, leaving the mind spellbound.

मण्डप के भीतर सूक्ष्म केश वाली महासखी समाज से परिपूर्ण ब्रह्मस्वरूप श्री सीताराम जी हैं ।।५६।।

मू०-तच्चोल्लसत्पीठ पवित्र निर्मले मन्त्रैः सुवर्णार्चिशतैः समांचिते ।
सकोमले केवल वर्चसत्वा पारे गुरोर्वाक्य सुगम्य रूपे ।।६०।।
स प्रणवैः सर्ववीजैः सर्वमन्त्रैश्चवेष्टिते ।
यथा मणिगणाकीर्णे विभाति मध्य नायकः ।। ६१ ।।

अन्वयः—सुवर्णार्चिशतैः समांचिते मन्त्रैः पवित्र निर्मले केवल वर्चसत्वा पारे सकोमले गुरोर्वाक्य सुगम्य रूपे तच्चोल्लसत् पीठे स प्रणवैः सर्ववीजैः सर्व मन्त्रैः च यथा मणि गणाकीर्णे च वेष्टिते पीठे मध्य नायकः विभाति ।। ६० व ६१ ।।

अर्थः—सोने के प्रकाश से सैकड़ों गुणा अधिक चमकीले अनन्त मन्त्रों से सैकड़ों गुणा अधिक पवित्र निर्मल केवल प्रकाशमय सत्व से परे अत्यन्त सुन्दर कोमल जो गुरू वाणी से ही सुगम है, उस मण्डप के भीतर प्रणवयुक्त सभी मन्त्रों के द्वारा घिरा हुआ अत्यन्त सुन्दर सुकोमल सिंहासन है, जिस प्रकार मणि समूहों से घिरा रहे, इस प्रकार उस सिंहासन के मध्य में सिंहासन के अधिनायक (श्री सीताराम जी) मनोहर प्रकाशमान शोभित हो रहे हैं ।।६० व ६१।।

मू०-तत्रावसत्पद्मपलास लोचनः प्रलम्ब वाहुद्वय सुप्रसन्नः ।
प्रतप्त चामीकर भूषणां चितो यस्यांङ्गना जानकी जीवन प्रियाः।।

अन्वयः—प्रलम्व वाहुद्वय पद्मपलासलोचनः प्रतप्त चामीकर भूषणां चितः यस्य जीवन प्रियाः जानकी अंगना सुप्रसन्न तत्र अवसत् ।।६२।।

अर्थः—बड़ी लम्बी दो भुजा और कमलदल के सदृश्य विशाल नेत्र विशेषतायें हुये प्रकाशमान सुन्दर सोने के भूषणों से भूषित जिनके (श्रीराम जी के) जीवन की अतिशय प्रिया श्री जानकी जी सभी अंगनाओं में प्रधान अंगना हैं । वे श्री राम जी प्रसन्न हुए, पूर्वोक्त सिंहासन पर बिराजे हैं ।।६२।।

मू०-परास्परालिंगितर्मिगतज्ञं हास्येन वाक्येन निमज्जतान्तरम् ।
रासास्पदं सर्वसुखास्पदं तं नमामि रासेश्वरमप्रधृष्टब्यम् ।।६३।।

Chapter Five - The Innermost Jeweled Throne

The innermost pavilion is woven of subtle radiance and wish-fulfilling jewels. Its light surpasses countless moons, suns, and fires, and within it the divine Sita and Rama manifest in the fullness of Brahman. (59, completed)

> *Tac caullasat-pīṭhaṃ pavitraṃ nirmalaṃ mantraiḥ suvarṇair citaiḥ samarcitam,*
> *Sa-komale kevala-varcasā pāre guror vacīyaṃ sugamya-rūpe.* (60)

There shines a sacred, stainless throne, adorned by countless golden mantras. Supremely soft and composed of pure spiritual brilliance, its true form can be approached only through the word of the guru.

> *Sa praṇavaiḥ sarva-bījaiḥ sarva-mantraiś ca veṣṭitaḥ,*
> *Yathā maṇi-gaṇākīrṇaṃ vibhāti madhya-nāyakaḥ.* (61)

Enclosed by the sacred syllable *Oṃ*, every seed-syllable, and every mantra, the central Lord shines like a throne covered on all sides with hosts of jewels.

> *Tat-pada-saroja-pallāsa-locanaḥ pralamba-bāhudvayaḥ suprasannaḥ,*
> *Pratapta-cāmīkara-bhūṣaṇa-cito yasyāṅganā Jānakī jīvana-priyā.* (62)

His eyes gleam like lotus petals, his two arms extend gracefully to his knees, and his face is perfectly serene. He is adorned with ornaments of molten gold, while Janaki-dearer to him than life-rests as the foremost of his beloved companions.

> *Parātparāliṅgitam iṅgitajñaṃ hāsyena vākyena nimajjitāntaram,*
> *Rāsāspadaṃ sarva-sukhāspadaṃ taṃ namāmi Rāseśvaram apradhṛṣyam.* (63)

I bow to the unassailable Lord of the *rāsa*, embraced by the supreme beloved and perfectly aware of every loving sign. Her smiles and words immerse his heart in bliss; he is the abode of *rāsa* and the dwelling place of every happiness.

अन्वयः—हास्येन वाक्येन निमज्जतान्तरम् ईगितज्ञं परस्परालिगितं रासास्पदं सर्वसुखास्पदं अप्रधृष्यं रासेश्वरं तं नमामि ॥६३॥

अर्थः—हास्य और विलासमय बचनों से रस में डूबे हुए अन्तःकरण वाले सभी के मनोभावों को समझने वाले परस्पर सभी से आलिंगित रासरस के मूल स्थान सभी प्रकार के सुखदाता जिनको कोई धर्षणा (नीचा) न कर सके, ऐसे रासेश्वर श्री सीताराम जी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥६३॥

मू०-तत्र सख्यः प्रसेवन्ते ससीतं राघवं मुदा ।
लक्ष्मणा चारुशीला च भद्रामानवती तथा ॥ ६४ ॥

अन्वयः—तत्र ससीतं राघवं लक्ष्मणा च चारुशीला भद्रा तथा मानवती सख्यः मुदा प्रसेवन्ते ॥६४॥

अर्थः—उपरोक्त सिंहासन पर बिराजे हुए श्री सीता जी सहित श्रीराम जी को श्री लक्ष्मणा जी और सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी तथा भद्रा जी मानवती जी ये प्रमुख सखियाँ आनन्द में भरकर युगल सरकार की सेवा करती हैं ॥६४॥

मू०—परमानन्द जननीं कृष्णासर्वांग शोभिता ।
धृत्वातपत्रं काचित्तु मयूर पुच्छ गुच्छकम् ॥ ६५ ॥

अन्वयः—सर्वांग शोभिता कृष्णा परमानन्द जननी (अन्योऽपि सीता सखी समाजः) काचित् धृत्वात पत्रं तु मयूर पुच्छ गुच्छकम् ॥६५॥

अर्थः—सभी अंगों से सर्वांग शोभिता किशोरावस्था सम्पन्न परमानन्द को पैदा करने वाली (श्री सीता जी की बहुत से सखियों का समाज) कोई छत्र लिए, तो कोई मयूरपिच्छ कोई मूरछल लिए हुए ॥६५॥

मू०—काचित्धृत्वा चामरं च काचित्ताम्बूलमुत्तमम् ।
सर्वांगादर्पणं काचिज्जलं काचित्तुसत्तमा ॥ ६६ ॥

अन्वयः—च काचित् चामरं धृत्वा काचित् उत्तमं ताम्बूलं च सर्वाङ्ग दर्पणं काचित् सत्तमा जलं तु ॥६६॥

अर्थः—और कोई युगल सरकार को चँवर धारण करके चँवर करती हुई, कोई उत्तम तरह से सुन्दर पान को ली हुई, कोई सर्वांग दर्पण को लिए हुये, कोई उत्तम श्रेष्ठ जलझारी लिए हुए और ॥६६॥

Original source - Scan 75 of 116

Chapter Five - Service at the Innermost Throne

I bow to Sita and Rama, the inseparably embraced sovereigns of *rāsa*. Immersed in one another through smiles, playful words, and perfect knowledge of each other's heart, they are the inviolable source of every form of happiness. (63, completed)

> *Tatra sakhyaḥ prasevante sasītaṃ Rāghavaṃ mudā,*
> *Lakṣmaṇā Cāruśīlā ca Bhadrā Mānavatī tathā.* (64)

There four principal companions joyfully serve Raghava together with Sita: Lakshmana, Charushila, Bhadra, and Manavati.

> *Paramānanda-jananīṃ kṛṣṇā sarvāṅga-śobhitā,*
> *Dhṛtvātapatraṃ kācit tu mayūra-puccha-gucchakam.* (65)

The youthful assembly, beautiful in every limb and the source of supreme bliss, attends them closely. One companion holds a parasol, another a cluster of peacock feathers.

> *Kācid dhṛtvā cāmaraṃ ca kācit tāmbūlam uttamam,*
> *Sarvāṅgādarpaṇaṃ kācij jalaṃ kācit tu sattamā.* (66)

One bears a fly-whisk and another excellent betel; one holds a full-length mirror, while another noble companion brings water.

मू०—मङ्गलं कलशं काचित्धृत्वाध्यजमनुत्तमम् ।
आनन्दमग्ना: सर्वाश्च पश्यन्ति रमयन्ति च ।। ६७ ।।

अन्वय:—काचित् मङ्गलं कलशं उत्तमं ध्वजं धृत्वा आनन्दमग्ना: सर्वा: रमयन्ति च पश्यन्ति ।।६७।।

अर्थ:—कोई मंगल कलश को ली हुई, कोई उत्तम ध्वज को ली हुई सभी आनन्द मग्न होकर रमण करती हैं और रमणीय दृश्य को देखती हैं ।।६७।।

मू०—नित्यसिद्धा नित्यसाध्या दम्पत्यो: पाद सेवनम् ।
कुरु ते परमया भक्त्या नानाभाव प्रपूरिता: ।। ६८ ।।

अन्वय:—नित्यसिद्धा नित्यसाध्या परमयाभक्त्या नानाभाव प्रपूरिता: दम्पत्यो पादसेवनं कुरुते ।।६८।।

अर्थ:—ये सब सखियाँ कोई नित्य सिद्धा हैं, कोई मुक्तपार्षद हैं, परम अनुराग पूर्वक अनेक भावों से परिपूर्ण अन्तःकरण वाली श्री सीताराम जी के युगल चरणों की सेवा करती हैं ।।६८।।

मू०—अयोध्या सरयूश्चाग्रे यंत्र हस्ता शुचिस्मिता ।
निरीक्षते राम वक्रं प्रेमामृत परिप्लुता ।। ६९ ।।

अन्वय:—अयोध्या च सरयू: प्रेमामृत परिप्लुता शुचिस्मिता यन्त्रहस्ता अग्रे श्रीरामवक्रं निरीक्षते ।।६९।।

अर्थ:—श्री अयोध्या जी और श्री सरयू जी ये दोनों भी (मूर्तिमान सखियों के रूप में) हृदय अनुराग में डूबी हुई, प्रेमामृत में पगी हुई, मन्द मुस्क्याती हुई, हाथ में वीणा यन्त्र लिये श्रीराम जी के आगे खड़ी होकर मुखचन्द्र को देख रही हैं ।।६९।।

मू०—सुरुचिर जलदाभं भावनाभावगम्यं कनकनिकर भास्वज्जानकी
वामभागम् । स्मितसुचिमुखकान्तं कामिनी कामकारं नमतहृदि-
वराब्जे प्रीत रासेश्वरं तं ।। ७० ।।

अन्वय:—सुरुचिर जलदाभं कनकनिकरभास्वज्जानकी वामभागं स्मित सुचिमुखकान्तं भावनाभावगम्यं कामिनी कामकारं तं रासेश्वरं हृदिवराब्जे प्रीत नमत ।।७०।।

Original source - Scan 76 of 116

Chapter Five - Service at the Innermost Throne

> *Maṅgalaṃ kalaśaṃ kācid dhṛtvā dhvajam anuttamam,*
> *Ānanda-magnāḥ sarvāś ca paśyanti ramayanti ca.* (67)

Some hold auspicious pitchers and others excellent banners. Immersed in bliss, all gaze upon the divine couple, delight them, and are themselves delighted.

> *Nityasiddhā nityasādhyā dampatyoḥ pāda-sevanam,*
> *Kurute paramayā bhaktyā nānā-bhāva-prapūritāḥ.* (68)

Some are eternally perfected and others eternally devoted to the path of perfection. Filled with innumerable loving moods, they serve the feet of the divine couple with the highest devotion.

> *Ayodhyā Sarayūś cāgre yantra-hastā śucismitā,*
> *Nirīkṣete Rāma-vaktraṃ premāmṛta-pariplute.* (69)

Ayodhya and the Sarayu themselves stand before Rama in the forms of radiant companions, holding musical instruments. Flooded with the nectar of love and smiling purely, they gaze upon his face.

> *Surucira-jaladābhaṃ bhāvanābhāva-gamyaṃ kanaka-nikara-bhāsvaṃ Jānakī-vāma-bhāgam,*
> *Smita-śuci-mukha-kāntaṃ kāminī-kāmakāraṃ namata hṛdi-varāje prīta-Rāseśvaraṃ tam.* (70)

Bow within the lotus of the heart to that beloved Lord of the *rāsa*: lovely as a raincloud, reached through the deepest contemplative feeling, shining amid masses of gold, with Janaki at his left. His pure smiling face enchants all, and he fulfils the loving desires of every devoted companion.

अर्थः—सुन्दर जलदाता मेघ के समान श्याम श्री अंगवर्ण वाले, तपाये हुए सोने के समूह के समान गौरांगी श्री जानकी जी को वामभाग में लिए हुए, परम रस में भरकर मन्द मुस्क्याते हुये, चन्द्रमा सदृश मुख कान्ति वाले, कृपादृष्टि रूप सद्गुरु प्रदत्त मन्त्र के अर्थगत भाव से जानने योग्य (भावनागम्य) कामिनियों के कामनाओं को पूर्ण करने वाले उन रासेश्वर श्रीराम जी को अपने हृदय कमल में अनुराग पूर्वक रख करके प्रीति पूर्वक नमस्कार करें ।।७०।।

मू०-जयति जनकजायाः पादपद्मं मनोज्ञं, हरिहरविधि वन्द्यं साधकानां सुसेब्यं । नखरनिकर कान्तं मुद्रिकानुपूराद्यैरहरहर्हृदिमध्ये योग योगीशभाव्यम् ।। ७१ ।।

अन्वयः—मुद्रिका नुपुराद्यैः नखरनिकरकान्तं मनोज्ञं जनकजायाः पाद पद्मं अहरहः हृदिमध्ये योगीश योगभाव्यम् हरिहर विधि बन्द्यं साधकानां सुसेब्यं जयति ।।७१।।

अर्थः—मुद्रिका नुपूरादिकों के द्वारा नख समूहों से प्रकाशमान मन रमणीय श्री जानकी जी के पद कमल दिन-रात हृदय के अन्दर बड़े-बड़े योगीशों के योग (आत्मसम्बन्ध) के द्वारा भावना किये गये, ब्रह्मा, विष्णु, महेश से नमस्कृत शरणागत साधकों के द्वारा सुन्दर तरह से सेवित चरणों की जय हो ।।७१।।

मू०-जयत्ययोध्या रमणो रसात्मा विलासिनी पूर्ण क्रीड़ाभिलाषः । सुचारु चामीकर चीरधारी धरासुता चित्तविनोदकारी ।। ७२ ।।

अन्वयः—सुचारु चामीकर चीरधारी धरासुता चित्त विनोदकारी विलासिनि पूर्ण क्रीड़ाभिलाषः रसात्मा अयोध्या रमणः श्रीरामोजयति ।७२।

अर्थः—दिव्य सोने के प्रकाश के समान पीताम्बर पहनने वाले पृथ्वी कन्या श्री सीता जी के चित्त को आनन्दित (विनोद करने वाले) विलासिनी सखियों के इच्छापूर्वक (अभिलाषा युक्त खेल करने वाले) महारस की आत्मा श्री अयोध्या जी के रमण श्रीराम जी की जय हो ।।७२।।

मू०-न चन्द्रस्य गतिस्तत्र न सूर्य्यस्य गतिस्तथा । प्रभयाराम चन्द्रस्य सीतायाश्च प्रभावतः ।। ७३ ।।

Chapter Five - Praise of Janaki, Rama, and Ayodhya

> *Jayati Janakajāyāḥ pāda-padmaṃ manojñaṃ hari-hara-vidhi-vandyaṃ sādhakānāṃ susevyam,*
> *Nakhara-nikara-kāntaṃ mudrikānūpurāḍhyaṃ hṛdi madhye yogi-yogīśa-bhāvyam.* (71)

Victory to the enchanting lotus feet of Janaka's daughter-revered by Hari, Hara, and the Creator, and lovingly served by spiritual practitioners. Their beautiful nails shine; rings and anklets adorn them; and the greatest yogis contemplate them in the innermost heart.

> *Jayaty Ayodhyā-ramaṇo rasātmā vilāsino pūrṇa-kṛīḍābhilāṣaḥ,*
> *Sucāru-cāmīkara-cīradhārī Dharāsutā-citta-vinodakārī.* (72)

Victory to the beloved Lord of Ayodhya, the very soul of *rasa*, whose desire for divine play is complete. Dressed in beautiful golden-yellow cloth, he brings delight to the heart of the daughter of the Earth.

> *Na candrasya gatis tatra na sūryasya gatis tathā,*
> *Prabhayā Rāmacandrasya Sītayāś ca prabhāvataḥ.* (73, continues)

Neither the moon nor the sun has any course there, for the brilliance of Ramachandra and the sovereign radiance of Sita illumine that realm entirely.

अन्वयः—रामचन्द्रस्य प्रभया च सीतयाः च प्रभावतः तत्र न चन्द्रस्य गतिः न सूर्यस्य गति तथा ॥७३॥

अर्थः—श्री रामचन्द्र जी के ऐश्वर्य से और श्री सीता जी के प्रभाव से उस स्थान में न चन्द्रमा की गति है, और न सूर्य की गति है, तथा ॥ ७३ ॥

नोटः-ऐश्वर्य स्वरूपा श्री सीता जी हैं ।

मू०—सदा प्रकाशतेत्यर्थं स्थलं परमशोभनम् ।
यत्ध्यात्वा निमिषार्द्धेण रसिका यान्ति तत्पदम् ॥७४॥

अन्वयः—परम शोभनं स्थलं अत्यर्थं सदा प्रकाशते निमिषार्द्धेण यत् ध्यात्वा रसिका तत् पदं यान्ति ।

अर्थः—अतिसय शोभायमान वह स्थान हमेशा अत्यन्त प्रकाशित रहता है । आधेनिमेष भी जिसका ध्यान करने से रसिक जन (तत्) उस पद में चले जाते हैं । (यानि प्राप्त करते हैं) ॥७४॥

मू०—अयोध्या ध्यानगम्यासा सप्तपूर्यधिकारिणी ।
भगवानाद्य पुरुषो रमते यत्र चाद्यया ॥ ७५ ॥

अन्वयः—सा सप्तपुरी अधिकारिणी ध्यानगम्या श्रींअयोध्या यत्र आद्याः सह आदि पुरुषः भगवान् रामोरमते ॥७५॥

अर्थः—वह सप्त पुरियों में (मथुरा, माया, काशी, काँची, अवन्तिका द्वारिकापुरी) इन छैः पुरियों की स्वामिनी सर्वा अधिकारिणी जो की ध्यान गम्या है, वही श्री अयोध्या जी है । जहाँ पर आदि शक्ति श्री सीता जी के साथ आदि पुरुष भगवान् श्रीराम जी आज भी रमण करते हैं ॥७५॥

मू०—आह्लादिनी शक्तिरूपा जानकी यस्य वामतः ।
तं रामं सच्चिदानन्दं नित्यं रासेश्वरं भजे ॥ ७६ ॥

अन्वयः—यस्य बामतः आह्लादिनी शक्तिरूपा जानकी तं सच्चिदानन्दं नित्यं रासेश्वर रामं भजे ॥७६॥

अर्थः— जिनके बामभाग में आह्लादिनी परात्पर शक्ति श्री जानकी जी हैं, उन सच्चिदानन्द ब्रह्मस्वरूप नित्य अनन्त रासों के ईश्वर श्रीराम जी को मैं भजता हूँ ॥७६॥

Chapter Five - The Eternal Ayodhya

In that eternal realm there is no need for the passage of moon or sun: Sita and Ramachandra themselves are its unsetting light. (73, completed)

> *Sadā prakāśate 'tyarthaṃ sthalaṃ parama-śobhanam,*
> *Yad dhyātvā nimiṣārdhena rasikā yānti tat-padam.* (74)

That supremely beautiful abode shines forever. By meditating upon it with one-pointed love, a devotee of *rasa* may reach that state in half the blink of an eye.

> *Ayodhyā dhyāna-gamyā sā sapta-pury-adhikāriṇī,*
> *Bhagavān ādi-puruṣo ramate yatra cādyayā.* (75)

That Ayodhya, sovereign among the seven sacred cities, is reached through contemplation. There the Blessed Lord, the primordial Person, eternally delights with the primordial Goddess.

> *Āhlādinī śakti-rūpā Jānakī yasya vāmataḥ,*
> *Taṃ Rāmaṃ sac-cid-ānandaṃ nityaṃ Rāseśvaraṃ bhaje.* (76)

I eternally worship Rama, the Lord of the *rāsa* and embodiment of being, consciousness, and bliss, at whose left stands Janaki as the very form of his delight-bestowing power.

मू०–तुरीया जानकी प्रोक्ता तुरीयो रघुनन्दनः ।
उभयोरंशजाः सर्वे चावताराह्य संख्यकाः ॥ ७७ ॥

अन्वयः—तुरीया जानकी प्रोक्ता तुरीयो रघुनन्दनः च उभयोरंशजाः ह्य संख्यकः अवताराः ॥७७॥

अर्थः—श्री जानकी जी तुरीयावस्था नाम से कही गयी हैं, इसी प्रकार श्री रघुनाथ जी तुरीय पुरुष कहे गये हैं, और इन्हीं दोनों सरकार के अंश से उत्पन्न असंख्य सभी अवतार होते हैं । तीन गुण–सत्, रज, तम, तीन अवस्था–जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, तीन कर्म-संचित, प्रारब्ध, क्रियामण, तीन देवता–ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ये बारहों मिलकर आत्मा को बाँधते हैं, ये सब मायामय हैं । इन माया के आवरणों से परे चैतन्य ब्रह्मस्वरूप सच्चिदानन्द घन हैं ॥७७॥

मू०–सर्वेषामवताराणामवतारी रघूत्तमः ।
श्रुतं दृष्टं मया सर्वं चिरायजीवानन्मुने ॥ ७८ ॥

अन्वयः—हे मुने रघूत्तमः सर्वेषां अवताराणाम् अवतारी चिरायजीवान् सर्वं मयाश्रुतं च दृष्टं ॥७८॥

अर्थः—श्री हनुमानजी कहते हैं कि—हे मुनि श्री अगस्त जी श्री रघुनाथ जी तो समस्त अवतारों के मूलकारण अवतारी हैं, चिरंजीवी होने के नाते मैंने यह सब सुना है और देखा भी है ॥७८॥

मू०–ब्रह्मविष्णुमहेशाद्याः संत्यन्ये चिरजीविनः ।
सर्वेऽपि विभवाशक्ता यतोहं विभवात्परः ॥ ७९ ॥

अन्वयः – ब्रह्मविष्णुमहेशाद्याः अन्येऽपि चिरजीविनः सन्ति सर्वं विभवाशाक्त यतः अहं विभवात्परः ॥७९॥

अर्थः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि अनन्त अवतार भी चिरंजीवी हैं, परन्तु सभी के सभी ऐश्वर्य में आशक्त हुए मैं जिस ऐश्वर्य से मैं परे हो गया ॥७९॥

मू०–माधुर्ये च वयस्याहमैश्वर्ये हनुमान्कपिः ।
किंचित्तेनैव जानामि रहस्यं रामसीतयोः ॥ ८० ॥

अन्वयः–माधुर्ये अहं वयस्या च ऐश्वर्ये हनुमान्कपिः ते नैव किंचित् रामसीतयोः रहस्यं जानामि ॥८०॥

Chapter Five - The Source of All Manifestations

> *Turīyā Jānakī proktā turīyo Raghunandanaḥ,*
> *Ubhayor aṃśajāḥ sarve cāvatārā hy asaṅkhyakāḥ.* (77)

Janaki is declared to be the transcendent fourth state, and Raghunandana is likewise the transcendent fourth. Countless divine descents arise as partial manifestations of this eternal pair.

> *Sarveṣām avatārāṇām avatārī Raghūttamaḥ,*
> *Śrutaṃ dṛṣṭaṃ mayā sarvaṃ cirāya jīvān mune.* (78)

Raghuttama is the source from whom every avatara descends. O sage, through long life and his grace I have heard and directly witnessed this entire mystery.

> *Brahmā Viṣṇu Maheśādyāḥ santy anye 'pi cirajīvinaḥ,*
> *Sarve 'pi vibhavāś cātra yata 'haṃ vibhavāt paraḥ.* (79)

Brahma, Vishnu, Mahesha, and the other long-lived divine beings are all majestic manifestations within this order. Through Rama's grace, I have been carried beyond mere awareness of those secondary manifestations to the supreme source itself.

> *Mādhuryaṃ ca vayasyaṃ ca aiśvaryaṃ Hanumān kapiḥ,*
> *Kiñcit tenaiva jānāmi rahasyaṃ Rāma-Sītayoḥ.* (80)

I, Hanuman, know something of the sweetness, intimate companionship, and sovereign majesty of Sita and Rama-but only through their own grace have I learned even a little of this secret.

अर्थः—युगल सरकार श्री रघुनाथ जी के माधुर्य लीला में मैं समान अवस्था वाली सखि हूँ, और ऐश्वर्य लीला में हनुमान नाम का बानर हूँ। इसी कारण से थोड़ा सा श्री युगल सरकार का रहस्य चरित्र मैं जानता हूँ ॥८०॥

इस जगह पर रसिक सन्तों की परम्परा में कुछ किंवदंती है जो इस प्रकार है। श्री परात्पर ब्रह्म को लीला दो प्रकार की है। (१) नित्य सगुण साकार जो कि कृपा के बिना कोई नहीं जान सकता है। श्री युगल सरकार की कृपादृष्टि से जो जानता है उसे सपने में भी मोह नहीं होता है। कृपादृष्टि रूपी वृष्टि को प्राप्त करके सभी अभय हो जाते हैं। (२) नित्य निर्गुण निराकार जो अत्यन्त सुलभ है। इसको जानकर भी, सगुणरूप जाने बिना बड़े-बड़े योगीश, मुनीश भी मोह में पड़ जाते हैं। उनका मोह सगुण साकार वाले कृपापात्रों के संग से निवृत्त होता है। श्री रामचरित मानस देखें—

दोहा-निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होइ॥ (उ०का०-७३)
यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ॥ (उ०का०-११६)
कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किए सुर वृन्द।
भालु कीस सब हरषे, जय सुख धाम मुकुन्द॥ (लं०का०-१०३)
बिनु विस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह विश्राम॥ (उ०का०-९०)
चौ०-सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहिं तुम्हहि होइ जाई॥
(अयो०का०-१२६)

परन्तु श्रीरघुनाथजी कब जनायेंगे, और किसको जनायेंगे, इस विषय में यह बात को प्राचीन प्रसिद्धि है। श्री रघुनाथजी नित्य दिव्य सगुण साकार रूप से जब निर्गुण निराकार ऐश्वर्यमयी लीला को फैलाने लगे, उस समय अपने दिव्य कल्याणमय गुणों को प्रधान ईश्वर बनाये, "राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णु स्वरूपवान्। वासुदेवो घनीभूतो तनुतेजो महाशिव"।

ऐसी अवस्था में महाशिव श्री रघुनाथ जी का अंग तेज

Original source - Scan 80 of 116

Chapter Five - Hanuman Explains the Two Modes of Divine Lila

Hanuman explains that within the Divine Couple's sweet, intimate *līlā* he is a companion of their own age, while within the majestic *līlā* he appears in the familiar form of Hanuman. Because he participates in both, he knows something of the mystery of the Divine Couple.

The rasika tradition distinguishes two modes in the play of the Supreme Brahman. The first is the eternal, qualified, embodied form. No one truly knows it without grace. One who receives the guru's grace and beholds it is never again overcome by delusion, not even in a dream; grace dispels fear and bewilderment.

The second is the eternal, unqualified, formless reality, which is exceedingly subtle. Even great yogis and contemplatives fall into confusion when they try to understand the formless without first knowing the personal, all-auspicious Lord. Their confusion is removed through the company of devotees who love the divine form.

The *Rāmacaritamānasa* is invoked to teach that the unqualified aspect may seem easy to describe, yet the qualified Lord is known by almost no one. His deeds are at once accessible and unfathomable, and even sages become bewildered on hearing them. Only one whom Raghunatha graces understands this mystery; such a person is not deluded even in dreams.

The same scripture says that when the Lord showers his gracious glance, the gods become fearless and the bears and monkeys rejoice, crying victory to Mukunda, the abode of happiness. Without trust there is no devotion; without devotion Rama's heart does not melt; and without Rama's grace the soul cannot find repose, even in a dream. Only the one to whom he reveals himself truly knows him-and, in knowing him, becomes one with his purpose.

The commentary then asks: when did Raghunatha reveal his true majesty, and to whom? This ancient teaching is now introduced.

महाशम्भू रूप से श्री हनुमान रूप धारण किये। कारण यह था कि श्री रघुनाथ जी को उनके जनाने पर जाना जाता है। जान जाने का फल उन श्रीराम जी के समान ऐश्वर्यवान् हो जाना है। श्री हनुमान् जी ने कहा है कि श्री रघुनाथ जी को हम चार जने जानते हैं। ब्रह्मा, बिष्णु, महेश और मैं (हनुमान्) परन्तु इन तीनों ने उस दिव्य ज्ञान का फल ऐश्वर्य ले लिया है। जिससे युगल सरकार की समता पा गये। मैंने नहीं लिया। क्यों नहीं लिया—जब जानने का फल ही ऐश्वर्य है, तो क्यों नहीं लिया ?

दिव्य गुणों को प्रगट करने के पहले भगवान् श्रीराम जी ने अपनी प्रतिकूल इच्छा (संकल्प) किया, जिससे असत् अज्ञान, दुःखमय माया को प्रगट कर लिया था। आपने "एकोऽहं वहूस्याम" एक से बहुत होने केलिए सत्य संकल्पता से कल्पना किये। उस कल्पना में आपका तेज प्रवेश कर गया, जिस तेज में महाविष्णु, वासुदेव, महाशम्भू ईश्वरों के रूप में प्रगट हो गये। श्री वासुदेव से अनन्त ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रगट हुये। महाविष्णु चार पाद विभूति के रूप में प्रगट हुये। महाशम्भू रूप से मैं (हनुमान) आत्मरूप से तो श्री किशोरी जू का चरण पड़ गया, तो समान अवस्था वाली सखी बना लिया; और ऐश्वर्य के स्थान में मैं महाशम्भू भाग कर माया के अन्दर सबसे नीच योनि बानर रूप धारण कर लिया। अब यदि मेरे को करोड़ों काम से अधिक सुन्दर, करोड़ों सूर्यों से अधिक प्रकाशमान बना भी दें तो माया के नियमों को भँग तो नहीं ही करेंगे। अतः मेरा बानर रूप नहीं मिटा सकेंगे। इससे वह दिव्य ज्ञान का फल जो ऐश्वर्य है सो लौटकर श्री रघुनाथ जी में ही प्रवेश कर गया। इसी से रघुनाथजी मेरी निष्कामता पर मेरे ऋणिया बन गये, और श्री सीता जी ने मेरी आत्मा को अपनी सखियों में सर्वेश्वरी श्री चारुशीला और श्रीं प्रसादा जी बना लिया। सभी ऐश्वर्य का मूल स्थान महामाधुर्य सच्चिदानन्द परात्पर ब्रह्म सुख ही है। अतः श्री हनुमान जी अपने को ऐश्वर्य से परे ऐसा भी कहते हैं ॥८०॥

Original source - Scan 81 of 116

Chapter Five - Hanuman's Place in the Divine Mystery

When Raghunatha, the eternal divine Lord endowed with every auspicious quality, began to unfold the majestic play of the unqualified and formless Absolute, he appointed divine powers to preside over his manifested qualities. Mahavishnu, Vasudeva, and Mahashiva came forth as embodiments of those powers.

In that dispensation, Mahashiva assumed the form of Hanuman so that Raghunatha's hidden majesty might awaken into recognition through their meeting. The fruit of truly knowing Rama is to become conformed to his divine sovereignty.

Hanuman therefore says that four know Raghunatha in this way: Brahma, Vishnu, Mahesha, and Hanuman himself. The first three accepted the fruit of that divine knowledge and thereby became established in majestic powers corresponding to the Divine Couple. Hanuman did not take that fruit for himself, because sovereignty is itself the fruit of such knowledge. Instead, he returned the whole treasure of realization to Raghunatha and remained wholly his servant.

Moved by this stainless self-surrender, Raghunatha became indebted to Hanuman, while Sita drew Hanuman's very self into her intimate circle in the companion-forms Charushila and Prasada. Thus the root of every majestic manifestation is the supreme sweetness of the eternal Sita and Rama-the bliss of the transcendent, indivisible, being-consciousness-bliss Absolute.

For this reason Hanuman can say that, although he renounced the independent enjoyment of divine majesty, even that majesty remains included within the self he has offered wholly to Sita and Rama. (80, completed)

मू०—नित्यलीला परिकरायेस्यु रघुवरादयः ।
तैः सार्द्धं भगवान् रामोऽयोध्यायामेव दीप्यते ॥ ८१ ॥

अन्वयः—ये रघुवरादयः नित्यलीला परिकराः स्युः तैः सार्द्धं अयोध्या यां एव भगवान् रामो दीप्यते ॥८१॥

अर्थः—जो श्री रघुनाथ जी के अनुयाई भक्तजन नित्य परिकर हैं उन्हीं के साथ श्री अयोध्या जी में ही भगवान् श्री रामचन्द्र जो प्रकाशमान होते हैं ॥८१॥

विशेष देखें—"अयोया यामेव दीप्यते" केवल अयोध्या में ही भगवान् प्रकाशित होते हैं, इसका भाव है कि आत्मा भगवत्धाम का ही अंश है। भगवान् चार पाद विभूति स्वरूप हैं। आत्मा, विभूतियों का ही प्रेरक की प्रेरणा से अंश है। इन सब विभूतियों का अंशी श्री सीताराम जी ही हैं, और श्री राम जी के हित चाहना से श्री सीता जी एक रूप से धाम हैं और एक रूप से धाम की देवी नित्य श्रीरामजी के समान सुख भोगती हैं, आत्मा विभूतियों का निर्गुण निराकार अंश है। जो आत्मा विभूतियों का शरणागत होगा, वह विभूतियों का पार्षद होता है। जो श्री सीताराम जू के कृपा रूप परम्परागत कृपादृष्टि के मूर्तिमान् स्वरूप श्री सद्गुरुदेव जी के द्वारा युगल मन्त्र को पा गया तो बह आत्मा युगल सरकार की कृपा से श्री अयोध्या जी का अंश होकर उसकी आत्मा अयोध्या हो जाती है। अतः शरणागतों के ही हृदय में भजन सेवा के प्रभाव से आत्मा का स्वरूप श्री अयोध्या हो जाता है, श्री अयोध्या जी ही व्यापक ब्रह्म हैं, श्री राम जी कभी भी रूपान्तर नहीं होते हैं—"राम रूप दूसर नहिं देखा।" और "राम न देखेउ आन।" (श्रीराम चरित मानस)।

श्रीमद्भागवद्गीता में भी आत्मा को भगवत्धाम कहा गया है। देखना चाहिये—अ० ८ के २० व २१, अ० १५ के ६, अ० १४ के २७ के अनुसार।

रघुवराद्यः—जितने ईश्वर हैं, वे श्री अयोध्या जी के ऐश्वर्य से श्री राम जी की इच्छा से, ईश्वर रूप अलग - अलग नाम, रूप, लीला, धाम स्वरूप हो जाते हैं। जिन ईश्वरों से जगत् व्यापार चलाया जाता है।

Chapter Five - Ayodhya as the Eternal Divine Abode

> *Nitya-līlā-parikarā ye syur Raghūvarādayaḥ,*
> *Te sārdhaṃ Bhagavān Rāmo 'yodhyāyām eva dīpyate.* (81)

Lord Rama shines eternally in Ayodhya together with Raghunatha's entire retinue of the everlasting *līlā*.

The commentary emphasizes the traditional dictum, "The Lord manifests only in Ayodhya." The individual self is an aspect of the divine abode, while the Blessed Lord is the fourfold source of all manifestation. Sita, out of concern for Rama's delight, is herself both the abode and its eternal goddess, enjoying happiness equal to his.

The companions are stainless manifestations of the soul's spiritual capacity. A soul who takes refuge in Sita and Rama receives a corresponding office within their divine manifestations. When the living mantra of the Divine Couple is received from the guru's gracious form, that soul becomes a conscious portion of Ayodhya, and its own being becomes Ayodhya through worship and service in the heart.

Ayodhya is thus the all-pervading Brahman in the form of the divine abode. Rama never abandons this form or changes into another: all other divine names, forms, deeds, and abodes arise by his will from the sovereign glory of Ayodhya.

The gods within creation are likewise partial manifestations of those divine powers. A soul that takes refuge in a particular manifestation becomes an attendant within that deity's sacred order; yet all such divine orders ultimately rest in the sheltering reality of Sita and Rama.

प्रकृति के अन्दर देवता लोग भी इन ईश्वरों के अंश हैं। जो जीव जिस ईश्वर का शरणागत होता है, उसी ईश्वर के धर्म रूप में पार्षद हो जाता है, श्रीरामजी के शरणागति धर्म से सभी पार्षद रघुबरादि कहे जाते हैं।

मू०-गोलोक साकेत समावुभौमुने कदापि भेदो नहि राघवस्य ।
उभौ तु विश्रामनिवास धाम्नी परस्परावास शदृशाद्विलासात्।८२।

अन्वयः—विलासात् विश्राम निवास धाम्नी उभौ तु परस्परावास शदृशात् राघवस्य साकेत गोलोक भूमौ हे मुने कदापि भेदो न ॥८२॥

अर्थः - रास विलासों के भेद से विश्राम निवास दोनों धामों में परस्पर महलों की समानता होने से श्रीराम जी के साकेत धाम और गोलोक धाम दोनों में, हे अगस्त जी कोई प्रकार का भेद नहीं है, क्योंकि श्री रघुनाथ जी अपने अंग प्रत्यंगों में सभी ईश्वरों और भक्तों को समान सुख देते हैं, अत। दोनों धामों में भेद नहीं है ॥८२॥

मू०-अस्माद्रासादादि भूतान्नानारासो भविष्यति ।
ज्ञात्वै वं रसिकाः सर्वे रमन्ते कथयन्ति च ॥ ८३ ॥

अन्वयः—अस्मात् आदिभूतात् रासात् नानाभेदेन रासो भविष्यति सर्वे रसिका एवं ज्ञात्वा रमन्ते च कथयन्ति ॥८३॥

अर्थः - यह श्रीराम जी का आदिभूत रास से नाना प्रकार के भेद रास के होते हैं, सभी रसिक जन ऐसा जान करके चाहे जहाँ भी रमण करते हैं, और कथन भी इसी ढंग से करते हैं ॥८३।

मू०-अस्मिन्महारास रसोत्सवाय मनोनिविष्टं रसिकाग्रणीशः ।
विधौ निषेधे दुरिते सुकर्मणि न बाध्यते तं यथा सदा गतिः ।८४।

अन्वयः—रसिकाग्रणीशः अस्मिन्महारास रसोत्सवाय मनोनिविष्टं तं यथा सदागतिः तथा विधौ निषेधे दुरिते सुकर्मणी न बाध्यते ॥८४॥

अर्थः—जो रसिकों में अग्रशिरोमणी हैं, वे इस महान् राम रास रसोत्सव के लिए अपने मन को आवेषित करते हैं, ऐसे श्रीराम रसिकों को जैसे वायु देवता, सर्वत्र जाते हुए कहीं रुकते बँधते नहीं हैं, उसी प्रकार उन श्रीराम रसिकों को विधिनिषेध युक्त पाप-पुण्य से कोई बाधा नहीं पहुँचती है, अर्थात् बन्धन नहीं होता है ॥८४॥

Chapter Five - The Unity of Saketa and Goloka

> *Goloka-Sāketa-samādi-bhāvaṃ mune kadāpi bhedo nahi Rāghavasya,*
> *Ubhau tu viśrāma-nivāsa-dhāmnī parasparāvāsa-śabda-śāstrilāsāt.* (82)

O sage, there is never any real division within Raghava between Goloka and Saketa. They are mutually indwelling abodes of divine repose, distinguished in scripture only according to the particular play being revealed.

> *Asmād rāsādi-bhūtānāṃ nānā-bhedena rāso bhaviṣyati,*
> *Jñātvaivaṃ rasikāḥ sarve ramante kathayanti ca.* (83)

From Rama's primordial *rāsa* all the many differentiated modes of sacred love come forth. Knowing this, rasika devotees delight wherever they dwell and speak of those divine moods in the same spirit.

> *Asmin mahārāsa-rasotsavāya mano 'niviṣṭaṃ rasikāgraṇīśaḥ,*
> *Vidhau niṣedhe durite sukarmāṇo na bādhyate taṃ yathā sadāgatiḥ.* (84)

The foremost rasika whose mind is wholly absorbed in this great festival of Rama's *rāsa* is no longer confined by ritual injunction and prohibition, merit and fault. Like the wind moving freely everywhere, such a devotee is not bound by them.

मू०—कैवल्य दौर्बल्यकरं महारसं सीतापतेर्रासविलास माद्यम् ।
कायेन वाचा मनसास्मरेद्यः सयाति गोलोकं निरामयं पदम् ।८५।

अन्वयः—सीतापतेः आद्यं रासविलासं महारसं कैवल्य दौर्बल्यकरं यः कायेन, बाचा, मनसास्मरेत् स गोलोकं निरामयं पदं याति ॥८५॥

अर्थः—श्री सीताराम जी के जो आदि रास विलास हैं । सबसे प्रथम रास विलास है, यह सभी रासों में जो महारास है वह कैवल्य मोक्ष को दुर्बल करने वाला है, जो कोई मन, वचन, कर्म से इस महारास का स्मरण करेगा । वह प्रकृति के विकृति से परे गोलोक में चला जायेगा । अर्थात् गोलोक के निरामय पद में चला जाता है ॥८५

मू०—इदं रहस्यं परमं सुगोपनं मयैवचोक्तं निगमागमात्परम् ।
यः श्रद्धया भक्तियुतः पठेद्वा सयाति रामस्यपदं महामुने ॥८६॥

अन्वयः—इदं परमं सुगोपनं निगमागमात्परं रहस्यं मयैव उक्तं च हे महामुने यः भक्तियुतः वा श्रद्धया पठेत् स रामस्य पदं याति ॥८६॥

अर्थः—यह परम गोपनीय वेदशास्त्रों से परे का रहस्य मैंने ही कहा है, और हे महामुनि अगस्तजी ! इस रहस्य को भक्ति युक्त होकर अथवा श्रद्धा से पढ़ेगा वह श्रीराम जी के दिव्य धाम में चला जायेगा ॥८६॥

मू०—यो भावकोभावयते हृदाब्जे रामस्य रासोरस वारिपूर्णः ।
पिवेश्च सत्सार सुधाधिकं रसं नरोचते क्षार जलं यथाकिल ।८७।

अन्वयः—रामस्य रसवारि पूर्णः रासः यो भावको हृदाब्जे भावयते किल सत्सार सुधाधिकं रसं पीत्वा यथा क्षारजलं न रोचते ॥८७॥

अर्थः—श्रीराम जी का रस जल से परिपूर्ण जो रासरस है । जो भावुक अपने हृदय कमल में भावना करता है, उसको क्यातों सत्सार अमृत से भी अधिक रस को पीने पर जैसे खारा जल अच्छा नहीं लगता है ॥८७॥

मू०—श्रुत्वा रहस्यं परमं पवित्रं महामुनिः सुस्थिरमारसो भवत् ।
परं परालिंगन भावयुक्तं दत्वा ययौ स्वाश्रम मात्मनस्तदा ॥८८।

अन्वयः—महामुनिः परमं पवित्रं रहस्यं श्रुत्वा सुस्थिरं आरसः अभवत् तदा भावयुक्तं परं परालिंगनं दत्त्वा मात्मनः स्वाश्रम ययौ ॥८८॥

Original source - Scan 84 of 116

Chapter Five - The Fruit of Hearing the Secret

> *Kaivalyaṃ daurbalyakaraṃ mahārāsa-Sītāpater rāsa-vilāsa-mādyam,*
> *Kāyena vācā manasā smared yaḥ sa yāti Goloka-nirāmayaṃ padam.* (85)

The great *rāsa* of Sita's Lord renders the solitary liberation of *kaivalya* pale and powerless. Whoever remembers this primordial loving play through body, speech, and mind reaches the stainless realm of Goloka.

> *Idaṃ rahasyaṃ paramaṃ sugopyaṃ mayaiva coktaṃ nigamāgamāt param,*
> *Yaḥ śraddhayā bhakti-yutaḥ paṭhed vā sa yāti Rāmasya padaṃ mahāmune.* (86)

O great sage, I have spoken this supreme and deeply guarded mystery, which lies beyond the ordinary reach of Veda and Āgama. Whoever reads it with faith and devotion attains the eternal feet and abode of Rama.

> *Yo bhāvako bhāvayate hṛd-abje Rāmasya rāsorasa-vāri-pūrṇaḥ,*
> *Pived rasaṃ sat-sāra-sudhādhikaṃ rasaṃ na rocante kṣāra-jalaṃ yathākhilam.* (87)

One who lovingly contemplates Rama's *rāsa* within the lotus of the heart becomes filled with its waters of divine emotion. Having drunk that true essence, sweeter than nectar, all lesser pleasures lose their savour, just as salty water cannot please one who has tasted ambrosia.

> *Śrutvā rahasyaṃ paramaṃ pavitraṃ mahāmuniḥ susthira-mānaso 'bhavat,*
> *Paraṃ parāliṅgana-bhāva-yuktaṃ dṛṣṭvā yayau svāśramam ātmanas tadā.* (88, continues)

Having heard this supremely sacred mystery, the great sage's mind became perfectly steady. Inwardly beholding the Divine Couple joined in their transcendent embrace, he prepared to return to his own hermitage.

अर्थः—महात्मा श्री अगस्त जी महाराज (महामननशील) परमपवित्र रहस्य को सुनकर हृदय में सुस्थिर महारस युक्त हो गये, उस समय भावयुक्त परम्परा से श्री हनुमान जी को आलिंगन देकर अपने निजी आश्रम में चले गये ॥८८॥

मू०—गच्छन गच्छन्पथि मुनिवरः पूर्णप्रेमामृताब्धौ मज्जन् मज्जन्सपद-
योर्न्यास भेदं न वेद । पश्यन्पश्यन्हृदि रघुपतिं सीतया शोभिवामं
हृष्यन् हृष्यन् परम मुदितः प्रापगेहं चिराय ॥८९॥

अन्वयः—मुनिवरः पथि गच्छन् गच्छन् पूर्ण प्रेमामृताब्धौ मज्जन् मज्जन् स पदयोर्न्यास भेदं न वेद सीतया शोभिवामं रघुपतिं हृदि पश्यन् पश्यन् हृष्यन् हृस्यन् परममुदितः चिराय गेहं प्राप ॥८९॥

अर्थः—मुनि श्रेष्ठ श्री अगस्त जी रास्ते में चलते-चलते पूर्ण अनुराग से भरे समुद्र में डूबते-डूबते वे जिस रास्ते में चल रहे थे, पैरों का आगे चलना या पीछे चलना इस भेद को न समझ पाये, क्योंकि वामभाग में श्री रघुनाथ जी को अपने हृदय कमल में देखते-देखते महाहर्ष की लहरों में परम आनन्दित हो रहे हैं, इसलिए अपने घर में बहुत समय में पहुँचे ॥८९॥

मू०—गतेमुनावाशुग संभवोमहान् सम्भावने ध्यान मनाबभूव ।
स्मरन् स्मरन् रासरसं हृदाब्जे वाह्येन्द्रियज्ञान मनोनिवृत्तं ॥९०॥

अन्वयः—मुनौ गते आसुसम्भवः महान् सम्भावने ध्यान बभूव हृदाब्जे रास रसं स्मरन् स्मरन् अतः बाह्येन्द्रियज्ञानं निवृत्तम् ॥९०॥

अर्थः—मुनि महाराज के चले जाने पर वायु से उत्पन्न श्री हनुमान जी महान् सम्यक् प्रकार से सद्भावना में ध्यानमग्न हो गये, हृदय कमल में श्रीराम रास रस में स्मरण करते-करते शरीर की वाह्येन्द्रियों का ज्ञान निवृत्त हो गया ॥९०॥

मू०—हनुमतऋषेः काब्यं भाब्यं श्राब्यं सदैवहि ।
तस्मिन् ससीतारामोपि तुष्टोभवति नान्यथा ॥ ९१ ॥

अन्वयः—हनुमतऋषेः काब्यं सदैवहि भाब्यं श्राब्यं स सीतारामोपि तस्मिन् तुष्टोभवति अन्यथा न ॥९१॥

Chapter Five - Agastya Returns to His Hermitage

The great sage Agastya heard the supremely pure mystery and became inwardly established in the great *rāsa*. Embracing Hanuman with a heart filled by the transcendent mood he had beheld, he departed for his hermitage. (88, completed)

> *Gacchan gacchan pathi munivaraḥ pūrṇa-premāmṛtābdhau majjan majjan sa padayor nyāsa-bhedaṃ na veda,*
> *Paśyan paśyan hṛdi Raghupatiṃ Sītayā śobhitāṅgaṃ hṛṣyan hṛṣyan parama-muditaḥ prāpa gehaṃ cirāya.* (89)

As the great sage walked on, he plunged again and again into the boundless ocean of love's nectar and no longer knew whether his feet moved forward or back. Beholding Raghupati within his heart, his form made radiant by Sita, Agastya thrilled with joy at every step and only after a long while reached his home.

> *Gate munāv āśuga-sambhavo mahān sad-bhāvane dhyāna-manobhavaḥ,*
> *Smaran smaran Rāma-rasaṃ hṛd-abje bāhyendriya-jñāna-mano-nivṛttam.* (90)

After the sage had gone, the mighty wind-born Hanuman entered profound contemplation. Remembering Rama's *rasa* again and again within the lotus of his heart, he withdrew mind and awareness from every external sense.

> *Hanumat-kṛṣeḥ kāvyaṃ bhāvyaṃ śrāvyaṃ sadaiva hi,*
> *Tasmin sasītā Rāmo 'pi tuṣṭo bhavati nānyathā.* (91, continues)

The poetic revelation of the seer Hanuman should always be contemplated, recited, and heard. Through this devotion Rama together with Sita becomes pleased; the text declares no other means equal to it.

अर्थः—इस श्री हनुमत्संहिता के ऋषि श्री हनुमान जी हैं। श्री हनुमान जी का "काव्य" की हमेशा भावना करनी चाहिए। इस कर्म से श्री सीता जी सहित श्रीराम जी सन्तुष्ट हो जाते हैं (एतदतिरिक्त भगवत् प्रीति का दूसरा) उपाय नहीं है। यह बात ही सही है ॥९१॥

इति श्रीमद्हनुमत्संहितायां परम रहस्ये महारासोत्सवे
श्रीहनुमदग्रस्त संवादे पंचमोऽध्यायः ॥४॥

श्रीसीताराम रहस्य रसराजैकनिष्ठ दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणार-विन्द मकरन्द रसलम्पट श्री जानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा "श्रीहनुमत्संहिता" श्रीसीतारामरहस्य प्रकाशिका टीका चतुर्थोऽध्यायः।

"वेदोक्तो हनुमान्नेवचारुशिला,,

(ऋग्वेद ५-३-३)

तवश्रियेमरुतो मर्जयन्त, रुद्रयत्ते जनिमचारुचित्रम्।
पदं यद्विष्णो रूपमं निधायि, तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम्॥

त्रिदण्डी स्वामी श्रीरामप्रपन्नाचार्य्य कृत

—: दीपिका टीका :—

अर्थः—श्रीराम विद्यामय स्थिर मना श्री हनुमान जी की देवता सब स्तुति करते हैं:-हे रुद्र हनुमान जी आपकी श्रीराम विद्यारूप सम्पदा को पाने के लिए देवगण भगवत् कृपापात्र सब आपका अन्वेषण करते हैं-गुरु रूप में आपको प्राप्त करना चाहते हैं। तप, ध्यान, आदि के द्वारा आपके शिष्यत्व के लिये प्रयास करते हैं। इस श्रीराम विद्या रूपी सम्पदा के कारण आपका उत्तम जन्म का नाम चारुशीला है, सो सफल है। क्योंकि आप विष्णु वाचक राम के पद समीप में अग्नित-त्वात्मक रमणत्व युक्त रेफ पद को रखते हैं, तथा उसके साथ प्रणाम वाचक सभी इन्द्रियों का आलय हृदय, मन्त्र हृदय, नमः पद को रखते हैं अर्थात् "राममन्त्र में नमः" यह पद से श्रीराम विद्या की उपासना करते हैं नित्य समीप में रहते हैं। उसका ही जन्म सफल है तथा वही गुरु है जो स्थिर मन से श्रीराम विद्या की उपासना करता है।

Chapter Five - Colophon and Editorial Note

The seer of the *Hanumat Saṃhitā* is Hanuman himself. His sacred "poetry" is not merely literary composition but contemplative revelation. One should hear it, recite it, and hold its vision continually in the heart. Through this practice the devotee satisfies Sita and Rama directly; no second method is required. (91, completed)

Thus ends the fifth chapter of the *Hanumat Saṃhitā*, the supremely secret teaching on the great festival of the *mahārāsa*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

The printed edition next cites a Vedic verse praising the divine guide who leads the seeker toward the beautiful form and supreme name. A short *Dīpikā* commentary attributed to Tridaṇḍī Svāmī Śrī Rāmaprapattācārya explains its application to Hanuman.

All the gods, the note says, praise Hanuman with steady minds. They choose him as guru so that he may reveal the treasure of Rama-knowledge. Through austerity, contemplation, and loving surrender they seek discipleship at his feet.

The commentary further connects this Vedic image with Hanuman's intimate service. The name Charushila-one of the companion-forms through which his devoted self enters Sita's circle-is therefore said to be fulfilled and fruitful. Just as the sacred mantra gathers every sense into the "heart of the heart" and places the devotee at Rama's feet, Hanuman's revelation keeps the contemplative soul always near the Divine Couple.

* अथ षष्टमोऽध्यायः *

श्री अगस्त्य उवाच—

मू०—इतो गत्वात्वहंवीर रामोत्साह समन्वितः ।

विविक्ते स्वाश्रमेस्थित्वा पुनरालोडितं मया ।। १ ।।

अन्वयः—हे वीर अहं इतो गत्वा तु रासोत्साह समन्वितः विविक्ते स्वाश्रमेस्थित्वा मया पुनः आलोडितं ।।१।।

अर्थः—श्री अगस्त जी महाराज बोले—हे महावीर श्री हनुमान जी मैं यहाँ से जब चला तो राम का उत्साह मेरे हृदय में सम्पूर्ण भरा हुआ था, एकान्त अपने आश्रम में जब मैं बैठा तो मैंने फिर मनन किया ।।१।।

मू०—यादृशी प्रीतिरेतासां श्री रामे वर्तते सदा ।

तादृशी सर्व जीवानां कथं जायेत राघवे ।। २ ।।

अन्वयः—एतासां सदा श्री रामेप्रीतिः वर्त्तते सर्वजीवानां तादृशी-प्रीतिः राघवे कथं जायेत ।।२।।

अर्थः – जिस प्रकार आत्मस्वरूप सम्बन्धि नित्य पार्षदों की प्रीति हमेशा श्री राम जी में निवास करती है । समस्त जीवो में इस प्रकार की प्रीति श्री रघुनाथ जी में कैसे पैदा हो जायेगी ।।२।।

मू०—एतत्प्रष्टुं पुनर्वीर ह्यागतोहं तवान्तिकम् ।

कथयस्व कृपां कृत्वा परं कौतूहलं हि मे ।। ३ ।।

अन्वयः—हे वीर एतत्प्रष्टुं ही अहं तवातिकं पुनः आगतः कृपां कृत्वा कथयस्व हि मे परं कौतुहलं ।।३।।

अर्थः – हे वीर श्री हनुमान जी, यह पूछने के लिये ही मैं आपके पास आया हूँ, कृपा कर कहिए, मेरे को यह सुनने के लिए परम कौतूहल है ।।३।।

मू०—कथं श्री रामे सम्प्रीतिर्जायते पवनात्मज ।

गृह देह कुटुम्बेषु बैराग्यं च कथं भवेत् ।। ४ ।।

अन्वयः—पवनात्मज श्रीरामे कथं सम्प्रीतिर्जायते च गृह देह कुटुम्बेषु कथं बैराग्यं भवेत् ।।४।।

Chapter Six - The Five Relationships of Devotion

Agastya said:

> *Ito gatvā tv ahaṃ vīra Rāmotsāha-samanvitaḥ,*
> *Vivikte svāśrame sthitvā punar ālocitaṃ mayā.* (1)

O heroic Hanuman, when I left this place my heart was filled with enthusiasm for Rama. Seated alone in my hermitage, I reflected once more upon all that I had heard.

> *Yādṛśī prītir etāsāṃ Śrī-Rāme vartate sadā,*
> *Tādṛśī sarva-jīvānāṃ kathaṃ jāyeta Rāghave.* (2)

How can every living being develop for Raghava the same kind of constant love for Sri Rama that dwells in these companions?

> *Etat praṣṭuṃ punar vīra hy āgato 'haṃ tavāntikam,*
> *Kathayasva kṛpāṃ kṛtvā paraṃ kautūhalaṃ hi me.* (3)

I have returned to you, O hero, precisely to ask this. Be gracious and explain it, for my longing to understand is very great.

> *Kathaṃ Śrī-Rāme samprītir jāyate Pavanātmaja,*
> *Gṛha-deha-kuṭumbeṣu vairāgyaṃ ca kathaṃ bhavet.* (4)

O son of the Wind, how does deep love for Sri Rama arise, and how does detachment from house, body, family, and worldly possession come into being?

अर्थ:—हे श्री हनुमान जी, श्रीराम जी में सुन्दर अनुराग (सम्यक् प्रकार से प्रीति) कैसे होगी और सांसारिक घर, शरीर, परिवार वालों में (से) कैसे वैराग्य होगा ॥४॥

श्री हनुमानुवाच—

मू०—कुम्भोद्भव परं श्रेयः शृणुसत्यं वदाम्यहम् ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं च सर्वदा ॥ ५ ॥

अन्वय:—कुम्भोद्भव अहं परं श्रेयः सत्यं बदामि शृणु च सर्वदा गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयम् ॥५॥

अर्थ:—हे श्री अगस्त्य जी मैं परम कल्याण कारक सत्य विषय को कहता हूँ, सुनिये और यह सदा गुप्त रखने योग्य है, गुप्त रखने योग्य है, गुप्त रखने योग्य है ॥५॥

मू०—श्री रामेतु संप्रीतिस्सम्बन्धेनैव जायते ।
प्रीत्युत्पत्तिकरं रामेनान्यल्लोकेषु विद्यते ॥ ६ ॥

अन्वय:—श्री रामेतु संप्रीति: सम्बन्धेनैव जायते रामे प्रीत्युत्पतिकरं लोकेषु अन्यत् न विद्यते ॥६॥

अर्थ:—श्रीराम जी में प्रेम तो केवल सम्बन्ध से ही पैदा होता है (इसका कारण केवल गुरु जी ही हैं) परन्तु श्रीराम जी में प्रेम उत्पन्न करने वाला लोक में दूसरा अन्य कुछ नहीं है ॥६॥

मू०—वर्णितो भक्ति सम्बन्धो वेदतन्त्रादि शास्त्रके ।
गुरोः कृपां विना तत्र यथावन्न स्फुटो भवेत् ॥ ७ ॥

अन्वय:—भक्ति सम्बन्धः वेद तन्त्रादि शास्त्रके वर्णितः तत्र यथावत् गुरो: कृपा विना स्फुटो न भवेत् ॥७॥

अर्थ:—भक्ति के सम्बन्ध तो वेद तन्त्र शास्त्र आदिकों में वर्णित है, परन्तु श्री गुरू महाराज के कृपा के बिना यथार्थ रूप से स्पष्ट नहीं होता है ॥७॥

मू०—यत्सारं सर्वशास्त्राणां गुह्यमत्यन्त दुर्लभम् ।
वक्ष्येऽमृतमयं विप्रज्ञात्वा त्वां भावभाजनम् ॥ ८ ॥

Original source - Scan 88 of 116

Chapter Six - Relationship as the Source of Love

Hanuman said:

> *Kumbhodbhava paraṃ śreyaḥ śṛṇu satyaṃ vadāmy aham,*
> *Gopanīyaṃ gopanīyaṃ gopanīyaṃ ca sarvadā.* (5)

O pot-born Agastya, listen to the highest good. I shall speak the truth, but this teaching must always be guarded-guarded, guarded, and guarded again.

> *Śrī-Rāme tu samprītiḥ sambandhenaiva jāyate,*
> *Prīty-utpattikaraṃ Rāme nānyal lokeṣu vidyate.* (6)

Deep love for Sri Rama arises only through a living relationship with him. Nothing else in all the worlds can generate that love.

> *Varṇito bhakti-sambandho Veda-tantrādi-śāstrake,*
> *Guroḥ kṛpāṃ vinā tatra yathāvat sphuṭo na bhavet.* (7)

The devotional relationship is described in Veda, Tantra, and the other sacred teachings, but without the grace of the guru its true nature does not become clearly manifest.

> *Yat sāraṃ sarva-śāstrāṇāṃ guhyaṃ atyanta-durlabham,*
> *Vakṣye 'mṛtamayaṃ vipra tvaṃ bhāva-bhājanaṃ.* (8, continues)

O brahmin, because you are a worthy vessel of sacred feeling, I shall tell you that nectar-filled essence of all scripture which is profoundly secret and exceedingly difficult to obtain.

अन्वय: सर्वशास्त्राणां यद्गुह्यं यत्सारं अत्यन्त दुर्लभं हे विप्र त्वां भात्रभाजनं ज्ञात्वा अमृतमयं वक्ष्ये ॥८॥

अर्थ:—सम्पूर्ण शास्त्रों में जो गुह्य और सार बात है, सो अत्यन्त दुर्लभ है, हे ब्राह्मण देवता आपको सद्भाव का पात्र जानकर यह अमृतमयी बात कहता हूँ, यहाँ विप्र कहने का भाव सतोगुण की प्रधानता से है ॥८॥

मू०-शृणुत्वं भक्ति सम्बन्धं तद्‌भेदांश्च घटोद्भव ।
सप्रीतिर्जायते यस्माच्छ्रा रामे सुखदा सदा ॥ ९ ॥

अन्वय:—हे घटोद्भव भक्ति सम्बन्धं च तत्भेदां त्वं शृणु यस्मात् श्रीरामे सदा सुखदा संप्रीतिर्जायते ॥९॥

अर्थ:—हे घटोद्भव श्री अगस्त जी भक्ति के सम्बन्धों को और उस सम्बन्ध के भेदों को आप सुनिये, जिससे श्रीराम जी में हमेशा सुखदाई अनुराग उत्पन्न होता है ॥९॥

मू०-यावच्छ्री रामसम्बन्धे दृढाप्रीतिर्नजायते ।
तावद्भ्रमति संसारेदुस्तरे बहुदु:खभाक् ॥ १० ॥

अन्वय:—श्रीराम सम्बन्धे यावत् दृढाप्रीतिर्न जायते तावद् दुस्तरे संसारे बहुदु:खभाक् भ्रमति ॥१०॥

अर्थ:—श्रीराम जी के सम्बन्ध में जब तक दृढ़ प्रीति नहीं हो जायेगी, तब तक कठिन दुस्तर संसार जहाँ बहुत प्रकार का दु:ख भोगना पड़ता है, भ्रमता घूमता रहेगा ॥१०॥

मू०-ज्ञानं योगस्तपोदानमिष्टापूर्त्तं ब्रतं तथा ।
बैराग्यं निष्फलं चैव भक्ति सम्बन्धवर्जितम् ॥ ११ ॥

अन्वय:—भक्ति सम्बन्ध वर्जितं ज्ञानं योगस्तपोदान मिष्टापूर्तं व्रत च तथा बैराग्यं निष्फलं एव ॥११॥

अर्थ:—श्री रामभक्ति के सम्बन्ध से रहित ज्ञान, योग, तपस्या, दान, यज्ञों की सम्पूर्णता अनेक व्रत और उसी प्रकार बैराग्य भी निष्फल है ॥११॥

Chapter Six - Relationship as the Source of Love

Because Agastya is a true vessel for sacred emotion, Hanuman promises to reveal the rare, nectar-like essence hidden within all the scriptures. (8, completed)

> *Śṛṇu tvaṃ bhakti-sambandhaṃ tad-bhedāṃś ca Ghaṭodbhava,*
> *Samprītir jāyate yasmāt Rāme sukhadā sadā.* (9)

O pot-born sage, hear of the devotional relationship and its different forms, for through it arises the love of Rama that bestows eternal happiness.

> *Yāvac chrī-Rāma-sambandhe dṛḍhā prītir na jāyate,*
> *Tāvad bhramati saṃsāre dustare bahu-duḥkha-bhāk.* (10)

Until firm love is born through one's relationship with Sri Rama, the soul continues to wander through the nearly impassable world of becoming and suffers many sorrows.

> *Jñānaṃ yogas tapo dānam iṣṭāpūrtaṃ vrataṃ tathā,*
> *Vairāgyaṃ niṣphalaṃ caiva bhakti-sambandha-varjitam.* (11)

Knowledge, yoga, austerity, charity, sacrificial and charitable works, vows, and even renunciation remain fruitless when severed from a devotional relationship with Rama.

मू०-वेद तन्त्र पुराणेषु संहितायां च वर्णितः ।
पंचधाभक्ति सम्बन्धो ज्ञातव्यश्च गुरोर्मुखात् ।। १२ ।।

अन्वयः—पञ्चधा भक्ति सम्बन्धः गुरोर्मुखात् वेद तन्त्र पुराणेषु च संहितायां वर्णितः ज्ञातव्यः ॥१२॥

अर्थः—इष्टदेव के साथ पाँच प्रकार की भक्तियों का सम्बन्ध श्री गुरु महाराज के मुखारविन्द से वेद, पुराण, और संहिताओं में भी जो वर्णन हैं वह जानने योग्य है ॥१२॥

मू०-यथालोकेषु सम्बन्धः सख्यदा स्यादि वर्त्तते ।
तथा रामे हृदाकार्यः सम्बन्धः प्रीतिवर्द्धकः ।। १३ ।।

अन्वयः—सख्यदास्यादि सम्बन्धः यथालोकेषु वर्त्तते तथा श्रीरामे प्रीतिबर्द्धकः सम्बन्धः हृदाकार्यः ॥१३॥

अर्थः- संख्य दास आदि सम्बन्ध जिस प्रकार लोक में है । इसी प्रकार श्री राम जी में अनुराग बढ़ाने वाला सम्बन्ध हृदय से करने योग्य है ॥१३॥

मू०-दृढानुरागः श्रीरामे सम्वन्धैश्च विना नहि ।
भवेत्कदाचिल्लोकानां सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।। १४ ।।

अन्वयः—विना सम्बन्धैः च श्रीरामेदृढानुरागः लोकानां कदाचित् नहीं भवेत् अहं सत्यं सत्यं वदामि ॥१४॥

अर्थः- बिना सम्बन्ध के श्रीराम जी में दृढ़ानुराग संसारिक मनुष्यों का कभी भी नहीं होगा, मैं यह बात सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ ॥१४॥

मू०-सम्बन्धाख्यं परं तत्त्वं सहजानन्ददायकम् ।
तत्प्राप्त्यैव जीवानां प्रीतिर्भवति चाचला ।। १५ ।।

अन्वयः—सहजानन्द दायकं सम्बन्धाख्यं परं तत्त्वं च जीवानां अचलाप्रीतिः तत्प्राप्त्यैव भवति ॥१५॥

अर्थः—आत्मा का परमात्मा के साथ सहज आनन्द देने वाला सम्बन्ध नाम का परम तत्त्व ही है और जीवों का अचल अनुराग उस सम्बन्ध नामक तत्त्व को प्राप्त करने पर ही हो सकता है ॥१५॥

Chapter Six - The Five Relationships of Devotion

> *Veda-tantra-purāṇeṣu saṃhitāyāṃ ca varṇitaḥ,*
> *Pañcadhā bhakti-sambandho jñātavyaś ca guror mukhāt.* (12)

Veda, Tantra, Purana, and Saṃhitā describe the devotional relationship in five forms. Their real meaning must be learned from the mouth of the guru.

> *Yathā lokeṣu sambandhaḥ sakhya-dāsyādi vartate,*
> *Tathā Rāme hṛdā kāryaḥ sambandhaḥ prīti-vardhakaḥ.* (13)

Just as worldly life contains relationships such as friendship and service, one should establish corresponding relationships with Rama in the heart, where they become means of ever-increasing love.

> *Dṛḍhānurāgaḥ Śrī-Rāme sambandhaś ca vinā nahi,*
> *Bhavet kadācin lokānāṃ satyaṃ satyaṃ vadāmy aham.* (14)

Without such a relationship, no person can ever develop unwavering love for Sri Rama. I tell you this truly-truly.

> *Sambandhākhyaṃ paraṃ tattvaṃ sahajānanda-dāyakam,*
> *Tat-prāptyaiva jīvānāṃ prītir bhavati cācalā.* (15)

The supreme principle called “relationship” bestows natural, spontaneous bliss. Only by attaining it does a living being’s love become firm and unmoving.

मू०-पञ्चधाभेदमस्तीह तच्छृणुष्व महामुने ।
शान्तो दास्यस्तथा सख्यः वात्सल्यश्च श्रृङ्गारकः ॥१६॥

अन्वयः—इह पञ्चभेदं अस्ति हे महामुनेः तत्श्रुणुष्व शान्तः दास्यः तथा सख्यः वात्सल्यश्च श्रृङ्गारकः ॥१६॥

अर्थः—इस विषय के सम्बन्ध में पाँच भेद हैं—हे महामुने वह मेरे से सुनिये, शान्त (भगवान को माता-पिता मानना) दास-अपने को सेवक मानना भगवान् को स्वामी मानना—

"सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ॥ मानस ॥"

सखा भाव-भगवान् को अपना मित्र मानना, वात्सल्य भाव-भगवान् को अपना पुत्र, शिष्य, दामाद मानना और श्रृंगार भाव-पति-पत्नी रूप से श्रृंगार भाव मानना या सखी भाव मानना (सन्तों की सुन्दर मति (बुद्धि) रूपी स्त्री ही अपना पति भगवान को मानकर अनन्यता पूर्वक सेवा करती हैं, ऐसे सन्तों के लिए ही भगवान् का नाम, रूप, लीला, धाम, 'सन्त सुमति तिय सुभग श्रृंगारू' है ॥१६॥

मू०-एषामनेकभेदास्युः संक्षेपेण ब्रवीमिते ।
मुख्यं रस स्वरूपं च कथयिष्यामि तत्त्वतः ॥ १७॥

अन्वयः—एषां अनेकभेदाः स्युः ते संक्षेपेणब्रबीमि रसस्वरूपं मुख्यं तत्त्वतः कथयिष्यामि ॥१७॥

अर्थः—इन पाँचों सम्बन्धों में अनेक भेद हैं, आप से मैं संक्षेप से कहूँगा, इन सम्बन्धों के भीतर रस का स्वरूप मुख्य है, जिसको यथार्थ मैं आप से कहूँगा ॥ १७ ॥

मू०-शान्तिस्थायोरसो शान्तो विभावाद्यैस्समन्वितः ।
साधु संगानहंकार निर्वेदाद्यैर्यथा क्रमम् ॥ १८ ॥

अन्वयः—यथा क्रमं अनहंकार निर्वेदाद्यैः साधुसंग विभावाद्यैस्समन्वितः शान्ति स्थाई शान्तरसः ॥१८॥

अर्थः—जैसा कि क्रमशः अहंकार रहित वैराग्यादिकों से साधू का संग विभावादिकों से संयुक्त जिसमें शान्तिभाव स्थाई है, वह शान्त रस है ॥१८॥

Chapter Six - The Five Rasas

> *Pañcadhā bhedam astīha tac chṛṇuṣva mahāmune,*
> *Śānto dāsyas tathā sakhyaḥ vātsalyaś ca śṛṅgārakaḥ.* (16)

O great sage, hear the five divisions of this relationship: peaceful adoration, loving service, friendship, parental affection, and conjugal love.

In the peaceful mode the devotee reveres the Lord as the supreme and serene Absolute. In service the devotee becomes the Lord's servant. In friendship the Lord is one's intimate companion; in parental love, one's cherished child; and in the conjugal mode, one's divine husband or beloved. Through these relationships the Lord's name, form, play, and abode become directly meaningful to the devotee.

> *Eṣām aneka-bhedāḥ syus te saṃkṣepeṇa bravīmi te,*
> *Mukhyaṃ rasa-svarūpaṃ ca kathayiṣyāmi tattvataḥ.* (17)

Each of these has many subdivisions. I shall describe them briefly and explain the essential nature of each principal *rasa* according to truth.

> *Śāntiḥ sthāyī raso śānto vibhāvādyaiḥ samanvitaḥ,*
> *Sādhu-saṅgānahaṅkāra-nirvedādyair yathākramam.* (18)

When enduring serenity is joined with its proper causes, expressions, and supporting emotions, it becomes the peaceful *rasa*. It develops through the company of saints, freedom from ego, detachment, humility, and related dispositions.

मू०–आदरस्थायीदास्योहि विभावाद्यैः समन्वितः ।
सुशरण्याज्ञाकरणदैन्यताद्यैर्यथाक्रमम् ।। १६ ।।

अन्वयः—दैन्यताद्यैर्यथा क्रमं सुशरण्याज्ञाकरण आदरस्थाई विभावाद्यैः समन्वितः हि दास्यः ।।१६।।

अर्थः—बड़ी नम्रता, दैन्य सुशीलता आदि गुणों से यथाक्रम सुन्दर शरण्य देवता श्री सीताराम जी का आज्ञा पालन करना आदर जिसमें स्थाई है, ऐसे विभावादिकों से युक्त को ही दास्य कहते हैं ।।१६।।

मू०–सख्यरतिस्थायी सख्योविभावाद्यैः सदायुत्तः ।
मधुरवाक् परिहास हर्षादिभिर्यथाक्रमम् ।। २० ।।

अन्वयः—मधुरवाक् परिहास हर्षादिभिः यथा क्रमम् सख्यरतिः स्थाई विभावाद्यैः सदा युतः सख्यः ।।२०।।

अर्थः—मधुर बोली, मधुर हास, परिहास, हर्ष आदिकों से क्रमशः संख्य, अनुराग जिसमें स्थाई है, उस विभाव, आलिंगन, उद्दीपनों से सदा संयुक्त संख्यः कहा जाता है ।।२०।।

मू०–वत्सलतास्थायीभावो वात्सल्यो विभवैर्यतः ।
चापल्यपुलकानिष्ट शंकादिभिर्यथाक्रमम् ।। २१ ।।

अन्वयः—विभवैर्युतः चापल्यः पुलकानिष्ट शंकादिर्भिः वत्सलता स्थाई भावः वात्सल्यः ।।२१।।

अर्थः—शृङ्गार, खाद्य, खेलौनादि, सम्पत्ति से युक्त लाड़ प्यार चपलता पुलकावली अनिष्ट (दृष्टिदोषादि) की शंकाओं से क्रमशः वात्सल्य स्थाईभाव है, जिसमें उसको वात्सलय कहते हैं ।।२१।।

मू०–रतिस्थायी शृंगारको विभावाद्यैः समन्वितः ।
माधुर्यभ्रुकुटिक्षेप हर्षादिभिर्यथा क्रमम् ।। २२ ।।

अन्वयः—हर्षादिभिर्यथाक्रमम् माधुर्यभ्रुकुटिक्षेप रति स्थाई विभावाद्यैः समन्वितः शृङ्गारकः ।।२२।।

अर्थः—हर्षादिकों से युक्त क्रमशः माधुर्य भ्रुकुटि विलास करना रति है, स्थाई जहाँ ऐसे विभावादिकों से संयुक्त को शृङ्गार कहते हैं ।।२२।।

Chapter Six - The Five Principal Rasas

> *Ādara-sthāyiko dāsyo hi vibhāvādyaiḥ samanvitaḥ,*
> *Suśaraṇyājñā-karaṇa-dainyatādyair yathākramam.* (19)

When reverential devotion is the enduring emotion and is joined with its proper causes, expressions, and accompanying states, it becomes the *dāsya* rasa of loving service. Its successive marks include taking complete refuge in Sita and Rama, obeying their command, profound humility, gentleness, and related virtues.

> *Sakhya-rati-sthāyī sakhyo vibhāvādyaiḥ sadā yutaḥ,*
> *Madhura-vāk-parihāsa-harṣādibhir yathākramam.* (20)

When affectionate friendship is the enduring emotion and is continually joined with its proper causes and expressions, it becomes *sakhya* rasa. Sweet speech, laughter, playful joking, joy, embraces, affectionate urging, and similar acts are its natural manifestations.

> *Vatsalatā-sthāyī-bhāvo vātsalyo vibhavair yutaḥ,*
> *Cāpalya-pulakāniṣṭa-śaṅkādibhir yathākramam.* (21)

When tender parental affection is the enduring emotion and is joined with its proper supports, it becomes *vātsalya* rasa. Fondly feeding and playing with the Lord, delighting in his childish restlessness, horripilation, and anxiety that some harm or evil glance might befall him are among its characteristic expressions.

> *Rati-sthāyī śṛṅgārako vibhāvādyaiḥ samanvitaḥ,*
> *Mādhurya-bhrū-kuṭi-kṣepa-harṣādibhir yathākramam.* (22)

When conjugal love is the enduring emotion and is joined with its proper causes, expressions, and accompanying states, it becomes *śṛṅgāra* rasa. Sweetness, the expressive movement of the brows, playful gestures, joy, longing, and related emotions unfold within it.

मू०-श्री मद्रघुपतिं साक्षात् ब्रह्म सर्वपरात्परम् ।
ज्ञात्वा भजतियोनित्यं सवैशान्तरसाश्रयः ॥ २३ ॥

अन्वयः—सर्वं परात्परं ब्रह्मज्ञात्वा साक्षात् श्रीमद्रघुपतिं यो नित्यं भजति स वैः शान्त रसाश्रयः ॥२३॥

अर्थः—सभी ईश्वरों से परे परब्रह्म जान करके साक्षात् जानकर श्री किशोरी जी के साथ श्री रघुनाथ जी को जो नित्य भजता है उसी को शान्त रस का आश्रयण कहा जाता है ॥२३॥

मू०-श्री रामं करुणासिन्धुं भक्त संरक्षणे परम् ।
बुद्धाभजति यो नित्यं सवैदास्य रसाश्रयः ॥ २४ ॥

अन्वयः—करुणासिंधु भक्त संरक्षणे परं श्रीरामं बुध्वा यो नित्यं भजति स वै दास्य रसाश्रयः ॥२४॥

अर्थः—करुणा के सिन्धु (समुद्र) भक्तों के संरक्षण में सावधान परायण इस प्रकार श्री सीताराम जी को जान करके जो नित्य भजन करता है । उसको दास्य रस का आश्रय कहा जाता है ॥२४॥

मू०-श्री रघुनन्दनं मित्रं प्रेम पात्रं विबुध्य च ।
स्नेहेन रमते नित्यं सहिसख्य रसाश्रयः ॥ २५ ॥

अन्वयः—मित्रं प्रेमपात्रं श्री रघुनन्दनं विबुध्य च नित्यं स्नेहेन रमते स हि सख्य रसाश्रयः ॥२५॥

अर्थः—मित्र भाव द्वारा प्रेम का पात्र श्री युगल सरकार को समझ करके और नित्य स्नेह से रमण करने वाले को ही सख्य रस का आश्रयण वाला कहा जाता है ॥ २५॥

मू०-बालं सौन्दर्य सहितम् कौमलांगं प्रमोददम् ।
सर्वदा जीवनं मत्वा सवै वात्सल्य संज्ञकः ॥ २६ ॥

अन्वयः—सौन्दर्य सहितं कोमलाङ्गं प्रमोददं बालं सर्वदा जीवनं मत्वा स वै वात्सल्य संज्ञकः ॥२६॥

अर्थः—सुन्दरता के सहित कोमल अंग वाला, आनन्ददाता बालक को हमेशा अपना संजीवन मानना उसी को वात्सल्य नाम से कहा जाता है ॥२६॥

Original source - Scan 93 of 116

Chapter Six - The Devotees Who Embody the Five Rasas

> *Śrīmad-Raghupatiṃ sākṣād brahma sarva-parātparam,*
> *Jñātvā bhajati yo nityaṃ sa vai śānta-rasāśrayaḥ.* (23)

One who knows glorious Raghupati directly as Brahman, supreme beyond every other power, and worships him eternally together with Sri Kishori takes shelter in the peaceful *rasa*.

> *Śrī-Rāmaṃ karuṇā-sindhuṃ bhakta-saṃrakṣaṇe param,*
> *Buddhvā bhajati yo nityaṃ sa vai dāsya-rasāśrayaḥ.* (24)

One who understands Sri Rama as the ocean of compassion, wholly intent upon protecting his devotees, and worships him constantly takes shelter in the *rasa* of loving service.

> *Śrī-Raghunandanaṃ mitraṃ prema-pātraṃ vibudhya ca,*
> *Snehena ramate nityaṃ sa hi sakhya-rasāśrayaḥ.* (25)

One who recognizes Sri Raghunandana as an intimate friend and recipient of love, and who always delights with him in affection, takes shelter in the *rasa* of friendship.

> *Bālaṃ saundarya-sahitaṃ komalāṅgaṃ pramodadam,*
> *Sarvadā jīvanaṃ matvā sa vai vātsalya-saṃjñakaḥ.* (26)

One who regards the beautiful, tender-limbed, joy-giving divine Child as one's very life at all times is known as a devotee of parental love.

मू०–मधुरं मनोहरं रामं पतिं सम्बन्ध पूर्वकम ।
ज्ञात्वा सदैवभजते सा शृंगार रसाश्रयः ।। २७ ।।

अन्वयः—मधुरं मनोहरं पतिसम्बन्ध पूर्वकं रामं ज्ञात्वा सदैव भजते सा शृङ्गार रसाश्रया ।।२७।।

अर्थः—मधुर मनोहर मेरे पति हैं, इस प्रकार के सम्बन्ध पूर्वक श्रीराम जी को जान करके हमेशा जो भजती हैं वह शृङ्गार रसाश्रया कही जाती हैं ।।२७।।

मू०–एवं भावनया नित्यं पराह्यव्यभिचारिणी ।
वर्द्धतेऽनुदिनं प्रीतिः सत्यं सत्यं न चान्यथा ।। २८ ।।

अन्वयः—एवं हि भावनया नित्यं अनुदिनं अव्यभिचारिणी परा प्रीतिः बर्द्धते न च अन्यथा सत्यं सत्यं वदामि ।।२८।।

अर्थः—इस प्रकार नित्य स्वरूपानुसार प्रभाव से भजन करने वालों की अव्यभिचारिणी परमा प्रीति नित्य प्रति बढ़ती जायेगी । यह बात अन्यथा (असत्य) नहीं है, मैं सत्य कहता हूँ, मैं सत्य कहता हूँ ।

"हरिनरा भजंति येऽति दुस्तरम् तरंति ते" ।।२८।। मा० तु० कृ०

मू०–लोकेऽपि दृश्यन्ते साक्षात् सम्बन्धस्य प्रगल्भता ।
किं पुनर्जानकी जानौ सर्व भावं प्रपूरके ।। २६ ।।

अन्वयः—लोकेपि सम्बन्धस्य प्रगल्भता साक्षात् दृश्यते किं पुनः सर्व-भाव प्रपूरके जानकी जानौ ।।२६।।

अर्थः—लोक में भी सम्बन्ध की प्रौढ़ता अर्थात् दृढ़ता प्रत्यक्ष दिख पड़ती है फिर क्या कहना है सभी प्रकार के भाव को भक्तों के लिए देने वाले श्री जानकी जान श्री सीताराम जी में प्रौढ़ता के लिए ।।२६।।

मू०–देहत्रय विनाशं च कृत्वादौगुरु वक्रतः ।
ततः सम्वन्ध योग्यत्वं प्राप्नोति मुनिपुंगव ।। ३० ।।

अन्वयः—मुनिपुंगव, आदौगुरु वक्रतः देयत्रय विनाशं कृत्वा च ततः सम्बन्ध योग्यत्यं प्राप्नोति ।।३०।।

अर्थः—हे मुनि श्रेष्ठ श्री अगस्त्य जी—सबसे पहले संसार से कल्याण चाहने वाले जीव को श्री गुरु महाराज के मुखारबिन्द से मन्त्र द्वारा संचित कर्म को नाश

Original source - Scan 94 of 116

Chapter Six - Love Grows Through Sacred Relationship

> *Madhuraṃ manoharaṃ Rāmaṃ pati-sambandha-pūrvakam,*
> *Jñātvā sadaiva bhajate sā śṛṅgāra-rasāśrayā.* (27)

She who knows sweet and enchanting Rama through the relationship of husband and beloved, and always worships him in that awareness, takes shelter in the conjugal *rasa*.

> *Evaṃ bhāvanayā nityaṃ parā hy avyabhicāriṇī,*
> *Vardhate 'nudinaṃ prītiḥ satyaṃ satyaṃ na cānyathā.* (28)

Through constant contemplation in this manner, supreme and unwavering love increases day after day. This is true-true indeed-and cannot be otherwise.

The commentator reinforces the teaching: those who worship Hari in this intimate manner cross what is otherwise exceedingly difficult to cross.

> *Loke 'pi dṛśyate sākṣāt sambandhasya pragalbhatā,*
> *Kiṃ punar Jānakī-jānau sarva-bhāva-prapūrake.* (29)

Even in worldly life the strength produced by relationship is directly visible. How much greater must it be in relation to Janaki's Lord, who completely fulfils every devotional feeling?

> *Deha-traya-vināśaṃ ca kṛtvādau guru-vaktrataḥ,*
> *Tataḥ sambandha-yogyatvaṃ prāpnoti muni-puṅgava.* (30, continues)

O foremost of sages, first, through the mantra received from the guru's mouth, the aspirant brings the three bodies to an end. Thereafter one becomes qualified to enter the sacred relationship.

करा करके श्री वैष्णवाग्नि लगवा करके कारण शरीर जो २ तत्त्व का है, उससे छुट्टी पावें। उसके बाद मन्त्र के अर्थ के रूप में अपना सम्बन्ध स्वरूप को समझ करके गुरू निष्ठापूर्वक श्री सीताराम जी का भजन करते हुए सूक्ष्म शरीर को छुड़ाने के लिए सहज स्वरूप से भजन करने पर सेवक–सेव्य भाव के कारण सूक्ष्म शरीर समाप्त होने पर सहज स्वरूप का प्रकाश प्राप्त कर इसके बाद क्रियामाण शरीर समाप्त हो जाता है, फिर प्रिया–प्रियतम जू के वियोगाग्नि के द्वारा तीनों शरीर के विनाश होने से और उसके बाद सम्बन्ध की योग्यता प्राप्त होती है ॥३०॥

मू०–जननीजनकौ सम्यग् ज्ञातव्यौ प्रथमोबिधिः।
आचार्यस्य स्वरूपं च तथा तत्सेवनं मुने ॥ ३१ ॥

अन्वयः—हे मुने प्रथमोविधिः सम्यग् आचार्य स्वरूपं च जननी जनकौ ज्ञातव्यौ तथा तत् सेवनम् ॥३१॥

अर्थः—हे श्री अगस्त जी (मुमुक्षू आत्माओं को) भगवत् प्राप्ति के लिए सबसे प्रथम यह विधि है कि आचार्य के स्वरूप को सम्यक् प्रकार समझ जाय और श्री सीताराम जी को माता–पिता जान ले।

चौ०–"ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी॥"

और श्री गुरु महाराज जी का सम्यक् स्वरूप श्री सीताराम जी की कृपा डोरि है। इस डोरी का जन्म श्री सीताराम जी की कृपा दृष्टि है, अतः श्री सीताराम जी के कृपा ही माता–पिता होते हैं।

आचार्य योनिमिह ये प्रविश्य, भूत्वा गर्भे ब्रह्मचर्यं चरन्ति।
इहैव ते शास्त्रकारा भवन्ति, प्रहाय देहं परमं यान्ति योगम् ॥ ६ ॥
(महाभारत उद्योग पर्व अ० ४४ श्लोक ६, ८ देखें)

शरीरमेतौ कुरुतः पिता–माता च भारत।
आचार्यशास्ता या जातिः पुण्या सा जरामरा ॥ ८ ॥

भगवान् एवं भगवान् के कृपा पात्रों का जन्म कर्म दिव्य होता है। जो तत्त्वतः इसको जानता है वह शरीर त्याग कर संसार में नहीं आता भगवान् को प्राप्त होता है। गीता०अ०४–६

जन्म कर्म च मेदिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैतिमामेति सोऽर्जुन ॥ ६ ॥

Original source - Scan 95 of 116

Chapter Six - The Three Bodies and the Grace of the Guru

The commentator explains the progressive meaning of verse 30. The mantra received from the guru destroys accumulated karma and loosens identification with the gross body. By understanding the mantra's meaning, the aspirant recognizes the eternal form of the desired relationship and worships Sita and Rama with steadfastness.

As spontaneous devotion matures in the relation of servant and served, identification with the subtle body comes to an end and the soul's natural spiritual form becomes manifest. The causal body is finally consumed in the fire of separation from the Divine Beloved. When the three coverings have thus fallen away, the soul becomes fully qualified for its eternal relationship.

> *Jananī-janakau samyag jñātavyau prathamo vidhiḥ,*
> *Ācāryasya svarūpaṃ ca tathā tat-sevanaṃ mune.* (31)

O sage, the first discipline is to know Sita and Rama truly as one's mother and father, to understand the nature of the *ācārya*, and then to serve the teacher.

The living being is an imperishable portion of the Lord: conscious, pure, and by nature a treasury of happiness. The guru is the cord of Sita and Rama's grace, and that cord itself is born from their gracious glance. Their grace is therefore the soul's true mother and father.

The births and deeds of Bhagavan and of those who have become vessels of his grace are divine. One who understands this abandons bodily bondage and does not return to worldly existence. Entering the spiritual womb of the *ācārya*, the disciple practises sacred discipline, becomes established in the teaching, and advances toward the supreme union.

Physical parents fashion the body, but the *ācārya* gives the holy birth that does not decay or die. The beautiful fruit of this divine knowledge is the opportunity to behold and serve the guru, the saints, and those filled with loving attachment to Bhagavan.

"राममन्त्रोपदेशेन मायादूर मुपागता ॥ कृपागुरु देत्रस्त्र द्वितीय जन्म कथ्यते । पितागोत्रा यथा कन्या स्वामिगोत्रेण गोत्रिता । रामभक्ति मात्रेण अच्युत गोत्रेणगोत्रिता ।"

इस दिव्य ज्ञान का सुन्दर सरसफल है, श्री गुरु जी, सन्तों भगवतानुरागियों का दर्शन एवं सेवा की प्राप्ति है । (रा० ओ० २१०)

भारद्वाज-सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥
तेहि फल कर फल दास तुम्हारा । सहित प्रयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम्ह जस जग जयऊ । कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ ॥

जिस जीव को भगवान् देख लें या जीव भगवान् को देख लें तो वह जोव परमपद के योग्य हो जाता है, परन्तु संसार रोग नाश तो भगवत् प्रेमियों के दर्शन से ही होता है ।

चौ०-जड़-चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भये परम पद जोगू । भरत दरस भेटा भव रोगू ॥
(अयो० का० ११६)

और भी—

मोते अधिक गुरुहि जिय जानी । सकल भाव सेवहिं सन मानी ॥३१॥

मू०-तथारसस्वरूपं च विभावादि समन्वितम् ।
दिब्यनाम प्रकर्णं च तथादिव्य स्वरूपकम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—तथा भावादि समन्वितं रसस्वरूपं च दिब्यनाम प्रकरणं च तथा दिब्य स्वरूपकम् ॥३२॥

अर्थः—इस पूर्वोक्तानुसार भाव अनुभाव, विभावादि सहित रस के स्वरूप को और गुरु प्रदत्त दिव्य नाम प्रकरण सम्बन्ध को, और उसी प्रकार दिव्य स्वरूप को भी जानना है ॥३२॥

मू०-अष्टयामी तथा नित्या भावना भावसंयुता ।
स्वस्वसम्बन्ध विधिना शिक्षितब्या प्रयत्नतः ॥ ३३ ॥

अन्वयः—तथा अष्टयामि भाव संयुक्ता नित्या भावना प्रयत्नतः स्वः स्वः सम्बन्ध विधिना शिक्षितब्या ॥३३॥

Chapter Six - Name, Form, and the Eightfold Daily Meditation

The commentator says that instruction in Rama's mantra gives a second birth through the guru's grace. Its excellent fruit is the sight and service of the guru, the saints, and lovers of Bhagavan.

Bharadvaja tells Bharata that all spiritual practices find their beautiful fulfilment in seeing Rama and Sita, yet even that fruit bears a further fruit: service to Rama's servant. The world rightly proclaims Bharata blessed, and the sage becomes immersed in love while speaking of him.

When Bhagavan looks upon a living being, or the living being beholds Bhagavan, that soul becomes qualified for the supreme abode. Yet the disease of worldly existence is destroyed especially through the sight of Bhagavan's lovers. Tulsidas therefore teaches that all beings upon whom the Lord looks become fit for the supreme state, while Bharata's sight and embrace cure the very disease of becoming. The true servant considers every devotee worthy of honour and serves each devotional disposition with respect.

> *Tathā rasa-svarūpaṃ ca vibhāvādi-samanvitam,*
> *Divya-nāma-prakaraṇaṃ ca tathā divya-svarūpakam.* (32)

One must also understand the nature of *rasa* together with its causes, expressions, and accompanying emotions; the teaching of the divine name bestowed by the guru; and, in the same way, the divine form.

> *Aṣṭayāmī tathā nityā bhāvanā bhāva-saṃyutā,*
> *Sva-sva-sambandha-vidhinā śikṣitavyā prayatnataḥ.* (33)

With diligent care, each aspirant must learn the eternal, emotion-filled meditation upon the eight periods of the Divine Couple's daily play, following the method proper to his or her own sacred relationship.

अर्थ—पूर्वोक्तानुसार अष्टयामिभावना संयुक्त नित्यभावना को बड़ी सावधानी के प्रयत्न से अपने-अपने सम्बन्ध के विधि अनुसार गुरु से सीखनी चाहिए ॥३३॥

मू०—ज्ञेय प्राप्यस्य रामस्य रूपं प्राप्तुस्तथैव च ।
प्राप्त्युपायं फलं चैव तथा प्राप्ति विरोधि च ॥ ३४ ॥

अन्वय:—ज्ञेयं प्रापस्य रामस्य रूपं च तथैव'प्राप्तुस्स्वरूपं च प्राप्त्युपायं च फलं तथा च प्राप्ति विरोधि ज्ञातव्यम् ॥३४॥

अर्थ:—ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, उपाय, फल यानीज्ञेय स्वरूप जानने योग्य प्राप्य परमात्मा श्रीराम जी का रूप है, और उसी प्रकार प्राप्ता जो आत्मा का स्वरूप है, यानि प्रापक जो आत्मा का स्वरूप है, वह भी जानने योग्य है, ज्ञाता (आत्मा का स्वरूप है) और उसी प्रकार प्राप्ति का उपाय ज्ञान (शरणागति धर्म) और प्राप्ति का फल भगवत् सेवा (इष्टमुस्क्यान) स्वरूप जानने योग्य है, इसी प्रकार भगवत् प्राप्ति का विरोधि शरीर सम्बन्ध अभिमान तथा भौतिक विषयशक्ति है ॥३४ ॥

मू०—अर्थ पञ्चक मेतत्तु संक्षेपेण वदामिते ।

श्री हनुमानुवाच—

दिव्यानन्तगुण: श्रीमान् दिव्य मंगल विग्रह: ।
षड्गुणैश्वर्य सम्पन्नो मनोवाचामगोचर: ॥ ३५ ॥

अन्वय:—षड्गुणैश्वर्य सम्पन्न: दिव्य मंगल बिग्रह मनोवाचामगोचर: दिव्यानन्तगुण: श्रीमान् रामचन्द्र: ॥३५॥

अर्थ:—श्री हनुमान जी महाराज श्री अगस्त जी से कहते हैं, कि मैं अर्थ पञ्चक संक्षेप में कहता हूँ—

(क) षड्ऐश्वर्य १-भरणत्व, २-पोषणत्व, ३-आधारत्व, ४-शरणत्व, ५-सर्वव्यापकत्व, ६-कारुण्य ये ही षड्ऐश्वर्य हैं । इनके षड्ऐश्वर्य के अंश के अंश से त्रिलोक में षड्ऐश्वर्य दिखता है । हनु० वा० ४४—माया, जीव, काल के, करम के, सुभाय के, करैया 'राम' वेद कहे साँची मन गुनिये ।"

(ख) दिव्य मंगल विग्रह (शरीर) हैं-तुरीयावस्था रूप है । माया (प्रकृति) के अन्दर आप नहीं हैं आपके तेज से ही सम्पूर्ण प्रकृति जगत्

Chapter Six - The Five Truths to Be Known

The eternal meditation upon the eight periods of the Divine Couple's daily play must be learned carefully from the guru, according to the particular method of one's own sacred relationship. (33, completed)

> *Jñeyaṃ prāpyasya Rāmasya rūpaṃ prāptus tathaiva ca,*
> *Prāpty-upāyaṃ phalaṃ caiva tathā prāpti-virodhi ca.* (34)

One must know the nature of Rama, the supreme object to be attained; the nature of the soul that attains him; the means of attainment; its fruit; and that which opposes attainment.

The commentator identifies these five truths more explicitly. The object of knowledge is Paramatma Sri Rama. The knower and recipient is the individual soul. The means is knowledge expressed as complete surrender. The fruit is service to Bhagavan in one's desired mode. The obstacles are bodily identification, egotism born from material relationships, and attachment to sense objects.

> *Artha-pañcakam etat tu saṃkṣepeṇa vadāmi te.*
> *Śrī-Hanumān uvāca:*
> *Divyānanta-guṇaḥ śrīmān divya-maṅgala-vigrahaḥ,*
> *Ṣaḍ-guṇaiśvarya-sampanno mano-vācām agocaraḥ.* (35, continues)

I shall now explain these five truths to you briefly. Hanuman said: Glorious Rama possesses infinitely many divine qualities and a divinely auspicious form. He is endowed with six sovereign excellences and lies beyond the reach of mind and speech.

The six sovereign excellences named here are sustaining, nourishing, supporting, granting refuge, all-pervasiveness, and compassion. Whatever traces of these powers appear throughout the three worlds arise from only a fraction of his sovereignty. As the devotional verse says: Rama is the ordainer of maya, the soul, time, karma, and innate disposition; the Veda declares this true, so ponder it well within the mind.

प्रकाशित है। आप माया के स्वामी हैं। (रा० उ०-७२ दोहा)

प्रकृति पार प्रभु सब उरवासी। ब्रह्म निरीह विरज अविनासी ॥

दोहा-राम सरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धि पर।

अविगत अकथ अपार, नेति नित निगम कह ॥ (अयो०का१२६)

चौ०-चिदानन्द मय देह तुम्हारी। विगत विकार जान अधिकारी ॥

(रा०वा०-११६)

"विषय करन सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता ॥

सबकर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई ॥

जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीश ग्यान गुन धामू ॥

जासु सत्यता ते जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया ॥

मन, वाणी, से परे हैं, इन्द्रियों के विषय नहीं हैं, केवल अपनी निर्हेतुक कृपा से ही दर्शन देने वाले हैं। आपकी कृपा ही भक्ति है, अर्थात् जो अपकी कृपा डोरी का आश्रय लेकर आपकी आराधना करता है, वे आप में तथा आप उसके अन्दर रहते हैं बिना भक्ति के आप निरीह हैं, भक्ति से इच्छामय हैं- (रा०वा०१९८ दो०)

दोहा:— व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन विगत विनोद।

सो अज प्रेम भगति वस, कौशल्या के गोद ॥

(अयो०का०२१९)

चौ०-तदपि करहिं सम विषय बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा।

(गी० अ० ९-२९)

समोऽहं सर्बभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।

ये भजन्ति तु मां भक्त्यामयि ते तेषु चाप्यहम् ॥२९॥

(ग) दिव्यामन्तगुण—आपके अनन्त दिव्य गुण हैं- सौशील्य, मार्दव, वात्सल्य, सौम्यत्व, धैर्य आदि दिव्य गुणों के आकार हैं। आप के ही गुणों के अंश के अंश से त्रैलोक में सभी गुणवान् प्रतीत होते हैं। आप अपने दिव्य गुणों से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी गुण देकर गुणवान् बनाये हैं।

बिधिहि विधिता हरिहि हरिता शिवहिं शिवता जो दई।

सोई जानकीपति मधुरमूरति मोदमय मंगलमयी ॥

(विनय पत्रिका)

Chapter Six - Rama's Transcendent Form and Infinite Qualities

Rama's divinely auspicious form stands beyond material nature, while he dwells within every heart. He is Brahman-desireless, stainless, and imperishable.

> Rama, your essential form is beyond speech and beyond the intellect: inaccessible to the senses, indescribable, and boundless. The Vedas can only say, "Not this, not this."
>
> Your body consists of consciousness and bliss. Those qualified to know it understand that it is free from every transformation.

Sense objects, sense faculties, gods, and living beings are each conscious through another. The supreme illuminator of them all is beginningless Rama, Lord of Ayodhya. The world is what is illumined and Rama is its illuminator; he is master of maya and the abode of knowledge and virtue. In dependence upon his reality, insentient maya appears real under the assistance of delusion.

Rama is beyond mind and speech and is not an object of the senses. He reveals himself solely through his own grace. That grace itself is devotion: one who worships by taking refuge in its cord abides in him, and he abides in that devotee.

> The all-pervading Brahman, stainless, attributeless, unborn, and beyond worldly play, is nevertheless held by loving devotion as a child in Kaushalya's lap.

Although impartial, the Lord responds according to what resides in the hearts of devotees and non-devotees. The *Bhagavad Gita* declares:

> I am equal toward all beings; none is hateful or especially dear to me. Yet those who worship me with devotion dwell in me, and I also dwell in them.

Rama's endless divine qualities include gracious accessibility, tenderness, parental affection, gentleness, and steadfastness. Every quality found within the three worlds appears from only a fraction of his qualities. Even Brahma, Vishnu, and Mahesha receive from him the virtues by which they are honoured:

> It is he who gives the creator his power to create, Hari his power to preserve, and Shiva his auspiciousness. That sweet, bliss-filled and all-auspicious form is Janaki's Lord. (35, completed)

षड्ऐश्वर्य से युत दिव्य शरीर वाले मन वाणी से परे दिव्य अनन्त युक्त श्रीमान् रामचन्द्र जी हैं ॥ ३५ ॥

मू० -वेदवेद्य: सर्वसाक्षी सर्वोपास्य: स्वतन्त्रक: ।
नित्यानांनिज भक्तानां भोग्यभूत: श्रिय: पति: ॥ ३६ ॥

अर्थ:—वेदों से जिनका लक्षण समझ में आता है, जो सबके ज्ञात-अज्ञात के साक्षी हैं (सबके उर अन्तर बसहुँ, जानहुँ भाव कुभाव) सभी ईश्वरों और जीवों के उपास्यदेव हैं। जो सबके स्वतन्त्र प्रेरक ईश्वर है, और अपने नित्य पार्षदों तथा प्रकृति के अन्दर अनन्यता से भजन करने वाले के भोग्यभूत हैं, अनन्त ऐश्वर्य की स्वामिनी, अनन्त ईश्वरियों की स्वामिनी श्री सीता जी के पति हैं ॥३६॥

मू०-ब्रह्मा विष्णु महेशानां कारणं सर्व व्यापक: ।
मूलं तुह्य वताराणां धर्म संस्थापक: परा: ॥ ३७ ॥

अर्थ:—ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि ईश्वरों के कारण हैं, सर्वव्यापक हैं, अवतारों के मूल कारण हैं, धर्म के संस्थापक हैं, परात्पर ब्रह्म हैं ॥३७॥

सर्व व्यापक—आपके 'राम' नाम दो अक्षर के रहित होने से किसी अवतार का नाम यथार्थ अर्थ दाता नहीं होता है। आपके भक्तों का कथन है कि आपका नाम चारो युग में विद्या अविद्या (दैवी-आसुरी सम्पत्तियों) में तथा पाँचों तत्त्वों में आठ प्रकृतियों में आप का नाम व्याप्त है, अत: आपकी प्रसन्नता केलिये 'राम' नाम दो अक्षरों में चित्त लगाना चाहिए—

"नाम के अक्षर चौगुन कै पुनि, पाँच मिलाय के दूगुन कीजै ।
आठ को भाग दिये रघुनाथ को, नाम ही शेष तहाँ चित दीजै ॥"

अवतारों के मूल कारण—वृ०ब्र०सं०पा०२, अ० ६ श्लोक ९,१० ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भूतले ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजत्य सौ ॥९॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय जातोऽहं राम संज्ञया ॥९॥

ये वाक्य श्री भगवान विष्णु जी, श्री लक्ष्मी जी से कह रहे हैं ।

Chapter Six - The Supreme Lord and Source of All Descents

> *Veda-vedyaḥ sarva-sākṣī sarvopāsyaḥ svatantrakaḥ,*
> *Nityānāṃ nija-bhaktānāṃ bhogya-bhūtaḥ Śriyaḥ patiḥ.* (36)

He is known through the Vedas, witness of everything known and unknown, worshipped by all, and completely independent. He is the beloved object of delight for his eternal devotees and the husband of Sri Sita, sovereign Lady of infinite divine splendour.

> *Brahmā-Viṣṇu-Maheśānāṃ kāraṇaṃ sarva-vyāpakaḥ,*
> *Mūlaṃ tu hy avatārāṇāṃ dharma-saṃsthāpakaḥ paraḥ.* (37)

He is the cause of Brahma, Vishnu, Mahesha, and the other divine rulers; he is all-pervading, the original source of every divine descent, the establisher of dharma, and the Supreme beyond all.

The commentator explains Rama's all-pervasiveness through his two-syllable name. No other divine name fully conveys the same meaning without these two syllables. Devotees say that Rama's name pervades the four ages; knowledge and ignorance, or the divine and demonic endowments; the five elements; and the eightfold material nature. One should therefore fix the mind upon the two syllables of "Rama." A traditional numerical riddle successively multiplies, combines, and divides the relevant numbers; after every operation, only Rama's name remains as the remainder upon which the heart should rest.

The *Bhagavad Gita* proclaims the Lord as the source of divine descents and restorer of dharma:

> Whenever dharma declines upon the earth and adharma rises, I manifest myself. I appear age after age to protect the good, destroy wrongdoing, and establish dharma anew.

मू०-द्विभुजश्चापभृच्चैव भक्ताभीष्ट प्रपूरकः ।
वैदेहि वल्लभो नित्यं कैशोरेवयसि स्थितः ।।३८।।

अर्थः—दो भुजा वाले, धनुष वाण धारण किये हुए भक्तों के सभी प्रकार के मनोरथों को पूरा करने वाले नित्य किशोर अवस्या वाले श्री वैदेही वल्लभ हैं ।।३८।। इस स्थिति से और—

मू०-एवं भूतश्च ज्ञातव्यो रामोराजिवलोचनः ।
स्थूल सूक्ष्म कारण तो भिन्नं कोशाच्चपंचकात् ।।
जाग्रत्स्वप्नाद्यवस्थानां साक्षी भूतं तु सर्वदा ।। ३९ ।।

अन्वयः—च जाग्रत स्वप्नाद्यवस्थानां साक्षीभूतं च स्थूल सूक्ष्म कारणतः च षञ्चकात् कोशात् भिन्नं राजिवलोचनः रामः एवं भूत ज्ञातव्यः।।३९।।

अर्थः—और जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि प्रकृति के आवरण भूत अवस्थाओं के नित्य साक्षी भूत हैं और स्थूल (२४ तत्त्व वाला शरीर) सूक्ष्म (१७ तत्त्व वाला शरीर) कारण (दो तत्त्व वाला शरीर) प्रारब्ध, क्रियमाण, संचित कर्मों का आधार है, ये प्रकृति के आवरण हैं, इससे परे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय इन पाँच कोसों के आत्मा हैं । आत्मा के भी आत्मा परमात्मा कमल नयन श्री राम जी को इस प्रकार जानना चाहिए । यहाँ पर परमात्म स्वरूप पूर्ण रूप से कहा गया, आगे प्रापक आत्मा का स्वरूप कहते हैं ।।३९।।

मू०-चिदानन्दमयं नित्यं दिव्य विग्रह संयुतम् ।
अखण्डैकरसं चैव कैशोरेबयसिस्थितम् ।। ४० ।।

अन्वयः—चिदानन्दमय नित्यं दिव्यविग्रह संयुतं कैशोरेवयसिस्थितं च अखण्डैक रसं ।।४०।।

अर्थ—जो चिद् आनन्द नित्य दिव्य निग्रह संयुक्त किशोर अवस्था में स्थिर और अखण्ड एक रस रहने वाले ।।४०।।

मू०-द्विभुजं सत्व सम्पन्नमीशसेवा प्रयोजनम् ।
प्रभोर्नियाम्यं शेषत्वं ज्ञातव्यं स्वस्वरूपकम् ।। ४१ ।।

अन्वयः—ईशसेवा प्रयोजनं सत्व सम्पन्नं द्विभुजं शेषत्वं प्रभोर्नियाम्यं स्वस्वरूपकं ज्ञातव्यम् ।।४१।।

Original source - Scan 100 of 116

Chapter Six - Rama and the Soul's Essential Nature

> *Dvi-bhujaś cāpa-bhṛc caiva bhaktābhīṣṭa-prapūrakaḥ,*
> *Vaidehī-vallabho nityaṃ kaiśora-vayasi sthitaḥ.* (38)

He has two arms and bears bow and arrow. He fulfils every cherished longing of his devotees. He is the beloved of Vaidehi and abides eternally in the freshness of divine adolescence.

> *Evaṃ-bhūtaś ca jñātavyo Rāmo rājīva-locanaḥ,*
> *Sthūla-sūkṣma-kāraṇato bhinnaḥ kośāc ca pañcakāt,*
> *Jāgrat-svapnādy-avasthānāṃ sākṣī-bhūtas tu sarvadā.* (39)

Lotus-eyed Rama is to be known in this manner: eternally distinct from the gross, subtle, and causal bodies and from the five sheaths, he remains the witness of waking, dream, deep sleep, and every other state.

The gross body is formed from twenty-four principles, the subtle body from seventeen, and the causal covering from the most fundamental principles that support destiny, action, and accumulated karma. These are coverings of material nature. Beyond the five sheaths of food, life force, mind, discernment, and conditioned bliss stands the Self of the self, the lotus-eyed Supreme Self Sri Rama.

> *Cid-ānandamayaṃ nityaṃ divya-vigraha-saṃyutam,*
> *Akhaṇḍaika-rasaṃ caiva kaiśora-vayasi sthitam.* (40)

He is eternally composed of consciousness and bliss, possessed of a divine form, one indivisible and unbroken *rasa*, and forever established in divine adolescence.

> *Dvi-bhujaṃ sattva-sampannam īśa-sevā-prayojanam,*
> *Prabhor niyāmya-śeṣatvaṃ jñātavyaṃ sva-svarūpakam.* (41, continues)

The soul's own essential form is to be known as two-armed and filled with pure being, having service to the Lord as its sole purpose, governed by the Lord and eternally belonging to him as his dependent servant.

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❋ श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ❋ श्री हनुमते नमः

अथ श्री हनुमत्संहिता

श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका

टीकाकार:—

रसराजैकनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस
श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द
मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण
जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,
श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३
फोन नं०—३२७५४, (०५२७८)

Original source - Scan 101 of 116

Inserted Colour Title Leaf

Homage to Sri Sita and Ramachandra. Homage to the venerable Ramananda. Homage to Sri Sarveshvari Charushila. Homage to Hanuman.

The *Śrī Hanumat Saṃhitā*

With the *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā* commentary.

The central illustration depicts Hanuman seated in meditation, holding sacred tablets in his raised hands, with Sita and Rama revealed within his heart.

Commentator

Sri Sri 108 Swami Janakisharan Ji Maharaj (Madhukar), devoted to drinking the nectar from the lotus feet of Sri Swami Siyasharan Ji Maharaj (Madhukar), ornament of the lineage of the infinitely glorious, Rasaraja-devoted Swami Sri Agradevacharya.

Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya, Uttar Pradesh, India.

This colour leaf is an inserted repetition of the book's title material and interrupts the Chapter Six pagination; the scripture resumes after the following two leaves.

✱ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✱ श्रीमते रामानन्दाय नमः ✱
✱ श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ✱ श्री हनुमते नमः ✱

अथ श्री हनुमत्संहिता

श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका

टीकाकारः—

श्रीसीताराम रहस्य समुद्रपोतायमान श्री रसराजाम्बुज दिनमणि आचार्य प्रवर अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,
श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३
फोन नं०—३२७५४, (०५२७८)

सहयोगकर्ता-

डा० श्रीपुरुषोत्तम दूबे उर्फ श्री पुरुषोत्तम शरणजी
ग्राम-विष्णुपुरा, पो०-परमेश्वरपुर, जि० गोरखपुर, उ०प्र० (भारत)

संशोधकः—

श्रीअवधधाम वासी, दासानुदास- बासुदेव दास
श्री चारुशीला मन्दिर, श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी

(सम्वत २०५५, माघ शुक्ल ५, बसन्त पञ्चमी)
प्रथम संस्करण-१०००] सन् १९९८ ई० [मूल्यः- ३१) मात्र

Inserted Title and Imprint Leaf

Homage to Sri Sita and Ramachandra. Homage to the venerable Ramananda. Homage to Sri Sarveshvari Charushila. Homage to Hanuman.

The *Śrī Hanumat Saṃhitā*

With the *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā* commentary.

Commentator

Sri Sri 108 Swami Janakisharan Ji Maharaj (Madhukar), devoted to drinking the nectar from the lotus feet of Sri Swami Siyasharan Ji Maharaj (Madhukar), ornament of the lineage of the infinitely glorious, Rasaraja-devoted Swami Sri Agradevacharya.

Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya, Uttar Pradesh, India.

Collaborator

Dr. Sri Purushottam Dubey, also known as Sri Purushottam Sharan Ji, Village Dighapura, Post Parameshwarpur, District Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.

Editor

Vasudeva Das, servant of the servants and resident of sacred Avadh Dham, Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya.

First edition: 1,000 copies. Vikrama Saṃvat 2055, bright fifth of Magha, Vasanta Panchami; 1999 CE. Printed price: 31 rupees.

✱ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✱ श्रीमत रामानन्दाय नमः ✱

✱ श्री सर्वेश्वरी चारुशीलायै नमः ✱ श्री हनुमते नमः ✱

ध्यान मूल गुरुर्मूर्ति, पूजामूल गुरुपदम ।
मन्त्र मूलं गुरुर्वाक्य, भक्तिमूल गुरुकृपा ॥

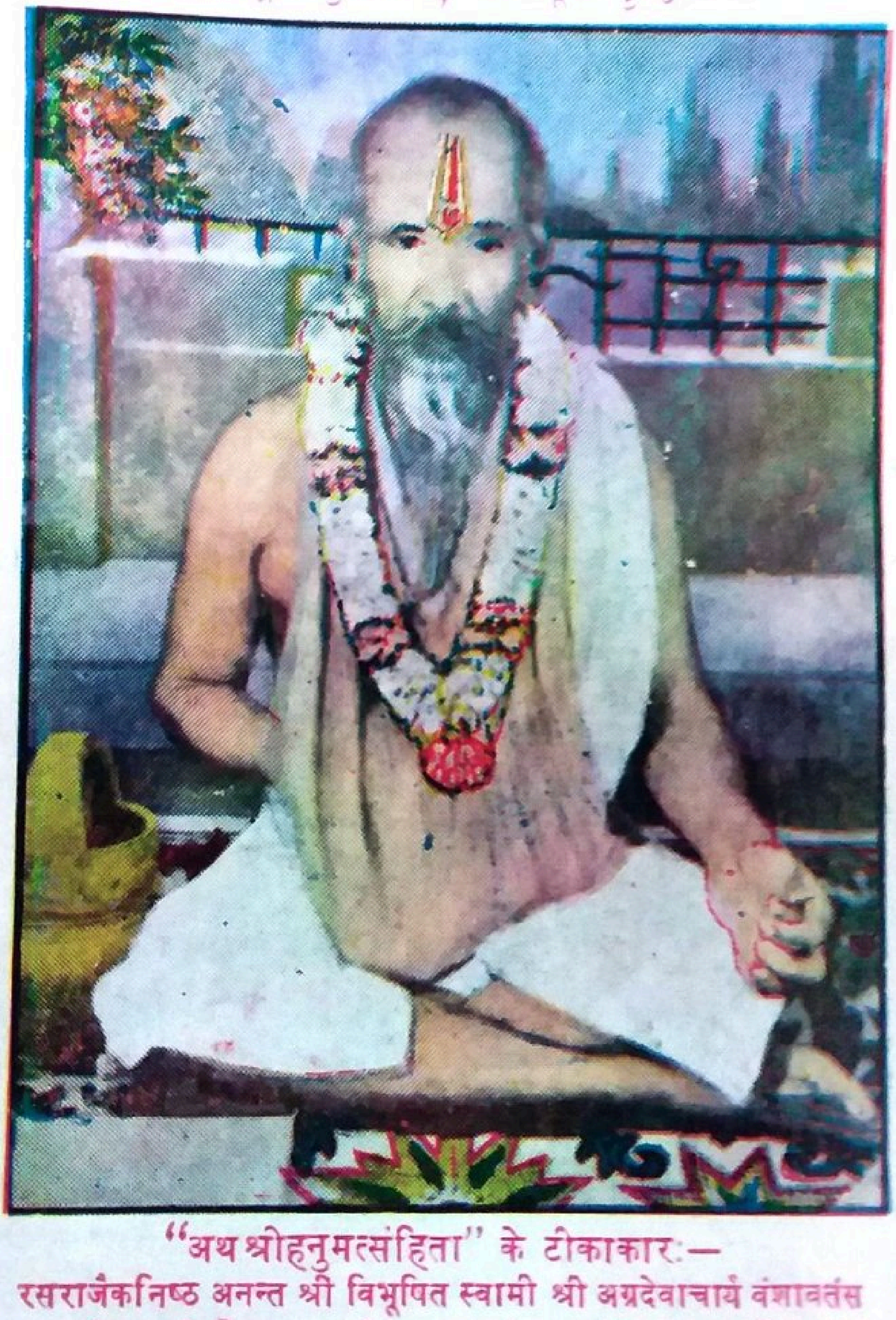

"अथ श्रीहनुमत्संहिता" के टीकाकार:—
रसराजैकनिष्ठ अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य वंशावतंस
श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द
मकरन्द रसलम्पट श्री श्री १०८ श्रीस्वामी जानकीशरण
जी महाराज (मधुकर) श्री चारुशीला मन्दिर,
श्रीजानकीघाट, श्रीअयोध्याजी-२२४१२३

Original source - Scan 103 of 116

Inserted Portrait of the Commentator

Homage to Sri Sita and Ramachandra. Homage to the venerable Ramananda. Homage to Sri Sarveshvari Charushila. Homage to Hanuman.

> *Dhyāna-mūlaṃ guror mūrtiḥ pūjā-mūlaṃ guroḥ padam,*
> *Mantra-mūlaṃ guror vākyaṃ bhakti-mūlaṃ guroḥ kṛpā.*

The root of meditation is the guru’s form. The root of worship is the guru’s feet. The root of mantra is the guru’s word, and the root of devotion is the guru’s grace.

The photograph shows the commentator of the *Śrī Hanumat Saṃhitā*: Sri Sri 108 Swami Janakisharan Ji Maharaj (Madhukar), devoted to the lotus feet of Sri Swami Siyasharan Ji Maharaj (Madhukar), of the lineage of Swami Sri Agradevacharya.

Charushila Temple, Janaki Ghat, Ayodhya, Uttar Pradesh, India.

अर्थ—इष्ट सेवा को ही अपना प्रयोजन जानने वाला, सेवा में सर्व कर्त्तव्य सामर्थ्य सम्पन्न दो भुजा वाले इष्ट का अंशत्व; इष्ट देवता से प्रेरित अपने निजी स्वरूप को जानना चाहिए ॥४१॥

मू०-सर्वभूतदयाचैव सर्वत्र समदर्शनम् ।
अन्यत्रानिन्दनं चैव स्वेशेस्नेहाधिकं तथा ॥४२॥

अन्वयः—च स्वेशेस्नेहाधिकं सर्वभूतदया तथा सर्वत्र समदर्शनं च अन्यत्रानिन्दनम् ॥४२॥

अर्थः—उपरोक्त प्रकार से आत्मा के स्वरूप को कह कर के अब आत्मा के प्राप्त स्वरूप को कहते हैं कि अपने इष्ट देवता श्री सीताराम जी में स्नेह, प्रेम ममता, आशक्ति की अधिकता पूर्वक प्राणिमात्र पर दया करना, इसी प्रकार सबसे समदृष्टि रखते हुये और अन्य किसी की निन्दा न करें और ॥४२॥

मू०-गुरावीश्वर बुद्धिश्च तदाज्ञा परिपालनम् ।
स्वेशस्य तज्जनानां च सेवनं माययाविना ॥ ४३ ॥

अन्वयः—च गुरौः ईश्वर बुद्धिः तदाज्ञा परिपालनम् माययाविना स्वेशस्य च तज्जनानां सेवनम् ॥४३॥

अर्थः—श्री सद्गुरुदेव जू में ईश्वर बुद्धि रखना (क्योंकि इष्ट की कृपा-दृष्टि ही मूर्तिमान होकर गुरु रूप में मिलती है) और गुरु की आज्ञा सम्यक् प्रकार से पालन करना और छल, कपट, स्वार्थ, सकातमता माया को छोड़कर इष्ट देवता श्री सीताराम जी का और उनके भक्त जनों का हितमय सेवा करना ॥४३॥

"करे स्वामि हित सेवक सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥"

मू०-प्रभोः कृपावलंबित्वं भोक्तव्यं तत्समर्पितम् ।
सच्छास्त्रेषु च विश्वासः प्राप्त्युपायमिहोच्यते ॥४४॥

अन्वयः—प्रभोः कृपावलंबित्वं तत्समर्पितं भोक्तव्यं च विश्वास सद्-शास्त्रेषु इह उपायं उच्यते ॥४४॥

अर्थः—भगवान की कृपा भगवान के मन्त्र रूप में गुरु परम्परा से आया हुआ । श्री सद्गुरु द्वारा प्राप्त कर गुरु मन्त्र के रूप में गुरु-निष्ठा ही भगवान के कृपा का अवलम्बनत्व है । जो मन्त्रार्थ के ज्ञान रूप में आत्मा का परमात्मा से

Chapter Six - The Attained Nature and the Means of Attainment

The soul's true purpose is service to the chosen Lord. Fully capable of every duty of service, the soul is a dependent portion of the two-armed Lord and must understand its own inner form as inspired and governed by him. (41, completed)

> *Sarva-bhūta-dayā caiva sarvatra sama-darśanam,*
> *Anyatrānindanaṃ caiva sveśe snehādhikaṃ tathā.* (42)

The soul's attained nature is marked by ever-increasing affection, love, intimacy, and attachment toward its own Lord, Sita and Rama; compassion toward every living being; equal vision everywhere; and refusal to condemn others.

> *Gurāv īśvara-buddhiś ca tad-ājñā-paripālanam,*
> *Sveśasya taj-janānāṃ ca sevanaṃ māyayā vinā.* (43)

One must behold the Lord within the guru, obey the guru's command completely, abandon deceit, self-interest, possessiveness, and maya, and lovingly serve both one's Lord Sita-Rama and their devotees.

The commentator adds: "The true servant acts for the Master's welfare, even if millions should find fault with him."

> *Prabhoḥ kṛpāvalambitvaṃ bhoktavyaṃ tat-samarpitam,*
> *Sac-chāstreṣu ca viśvāsaḥ prāpty-upāyam ihocyate.* (44, continues)

The means of attainment is to depend upon the Lord's grace, partake only of what has first been offered to him, and place one's faith in true scriptures.

सम्बन्ध पैदा करता है । यही शरणागति है, जिसमें आत्मा को चढ़ने के लिये छः सीढ़ी हैं :—

१—अनुकूल का संकल्प करे ।

२—प्रतिकूल का त्याग करना ।

३—रक्षा करेंगे विश्वास करना ।

४—रक्षक रूप में स्वीकार करना ।

५—अपनी सम्पूर्ण जिम्मेदारी भगवान को दे देना ।

६—भगवान की जिम्मेदारी के लिये रोवें ।

अर्थात् भगवान् की सेवा के लिये उत्कंठा बनावे । ये छः सीढ़ियाँ भगवान् के घर जाने का रास्ता है । इससे भगवान् आत्मा को स्वीकार करते हैं, जो भगवत् धर्म के रूप में आत्मा से आचरण करने योग्य है । इस स्थिति में वैष्णव अपने प्रारब्ध के सम्पति भगवान को अर्पण कर के तब प्रसाद रूप में भक्तों को भोजन कराकर तब भोजन करे । भगवत् गुण परक सद्शास्त्रों में बिश्वास करें । यह प्रारब्ध के अन्दर भक्त का भगवान् के प्राप्ति का उपाय कहा गया है ॥४४॥

मू०—प्रारब्ध परिभुज्याथभित्त्वा सूर्य्यादि मण्डलम् ।
प्रकृतेर्मण्डलं त्यक्त्वा स्नात्वा तु विरजांभसा ॥४५॥

अन्वयः—अथ प्रारब्धं परिभुज्य सूर्य्यादि मण्डलं भित्त्वा (तथा) प्रकृतेर्मण्डलं त्यक्त्वा तु विरजां भसा स्नात्वा ॥४५॥

अर्थः—अर्थ पञ्चक के अन्दर उपाय स्वरूप कहने के बाद अब लोक धर्म का मोक्ष तथा भगवत्धर्म का मोक्ष भेद लिखते हैं । यहाँ पर लोक धर्मानुसार अर्चिरादि मार्गों का वर्णन है । (गी० अ० ८ के २४ से २६ तक देखें । और २७ में वर्णन है कि शुक्ल कृष्ण गति को जानता हुआ भी भगवत् शरणागत (सेवक-सेव्य भाव युक्त) शरणागत योगी मोह में नहीं पड़ कर शरणागति का भरोसा करता है तो गी० अ०—१२ श्लोक ६ के अनुसार शरणागति करने वाले को भगवान् शीघ्र स्वयं उद्धार करने वाले होते हैं (गी०अ० १२ के ७ श्लोकानुसार) जैसा कि मुमुक्षु आत्मा को प्रारब्ध भोगने के बाद (प्रारब्ध शरीर छूटने पर) प्रकृति के अन्दर देव मण्डल स्वरूप (दैवी प्रकृति) सूर्य्यादि मण्डलों को भेदन करके तब प्रकृति के सात

Original source - Scan 105 of 116

Chapter Six - The Six Limbs of Surrender

The preceding verse teaches surrender. Six ascending steps form the path by which the soul approaches the Lord:

1. Resolve to do what is favourable to him.
2. Abandon what is contrary to him.
3. Trust that he will protect you.
4. Accept him as your sole protector.
5. Entrust your entire responsibility to him.
6. Cry out to him in helpless longing-especially with longing for his service.

Through these six steps Bhagavan accepts the soul, which then becomes fit to live according to Bhagavat-dharma. A Vaishnava offers to Bhagavan whatever has come through the unfolding of prior karma, feeds the devotees from it as grace, and only then eats. Faith is placed in true scriptures that reveal Bhagavan's qualities. This is called the devotee's means of attaining Bhagavan while embodied. (44, completed)

> *Prārabdhaṃ paribhujyātha bhittvā sūryādi-maṇḍalam,*
> *Prakṛter maṇḍalaṃ tyaktvā snātvā tu Virajāmbhasā.* (45, continues)

After the soul has exhausted the karma that produced the present body, it pierces the regions of the sun and the other celestial spheres, leaves behind the domain of material nature, and bathes in the waters of the Viraja.

Having described the means within the five truths, the commentator distinguishes ordinary religious liberation from the liberation of Bhagavat-dharma. The luminous path is described in *Bhagavad Gita* 8.24-26. Even while knowing both the bright and dark paths, the surrendered yogi does not become confused; established in the relation of servant and served, such a soul relies upon surrender. The Lord himself quickly raises those who surrender to him, as taught in *Bhagavad Gita* 12.6-7.

When the destined body falls away, the soul passes beyond the five elemental coverings, the coverings of ego and the cosmic intellect, and then the innumerable transformations of the three qualities of nature before bathing in the Viraja. (45, continues)

आवरणों का मण्डल त्याग करके उसके बाद विरजा नदी के जल में स्नान करके, पञ्च तत्त्वों के पाँच आवरण, अहंकार और महातत्त्व के दो आवरण ये ही ५+२ = ७ प्रकृति के आवरण हैं । इसके बाद असंख्य तीन गुणों के आवरण को पार करके तब विरजानदी में स्नान होता है ॥४५॥ इसके बाद वह मुमुक्षु—

मू०—सवासनं देहद्वयं विसृज्य विरजोभवत् ।
अतिवेगेनतांतीर्त्वा प्राप्य साकेतकं तथा ॥ ४६ ॥

अन्वयः—सवासनं देहद्वयं विसृज्यविरजोभवत् अतिवेगेन तां तीर्त्वा तथा साकेतकं प्राप्य ॥४६॥

अर्थः—संसारिक वासनाओं से सहित सूक्ष्म शरीर जो स्वप्नावस्था जो १७ तत्त्व का है, उसके सहित फिर, कारण शरीर सुषुप्ति अवस्था दो तत्त्व (आवरण और विक्षेप) को त्यागकर विरजा नदी में आत्मा कूद जाता है, तब अतिबेग से पार जाने पर फिर भगवत् पार्षदों द्वारा बड़े सन्मान के साथ ले जाया जाता है, तथा साकेत को प्राप्त कर लेता है ॥४६॥ सनमान के आगे कहते हैं ।

मू०—प्रविश्य राजमार्गेण सप्तावरण संयुतम् ।
नानारत्नमयं दिव्यं श्री रामभवनं शुभम् ॥ ४७ ॥

अन्वयः—नानारत्नमयं सप्तावरण संयुतं दिव्य शुभं श्री रामभवनं राजमार्गेण प्रविश्य ॥४७॥

अर्थ—उस श्री साकेत नगर के मध्य अनेक प्रकार के रत्नमय सात आवरण वाला दिव्य शुभ श्रीराम महल में राजमार्ग के द्वारा प्रवेश करके ॥४७॥

मू०—तत्र श्री भरतादिभिस्सेव्यमानं सदा प्रभुम् ।
विराजमानं बैदेह्या रत्नसिंहासने शुभे ॥ ४८ ॥

अन्वयः—तत्र शुभे रत्नसिंहासने सदा भरतादिभिः सेव्यमानं बैदेह्या प्रभुं ॥ ४८ ॥

अर्थः—श्री रामभवन के मध्य कल्याणमय रत्नमय सिंहासन में भरत जी से लेकर अनन्त पार्षदों से सदा सेवित बैदेही जी के प्रीतम को ॥४८॥

मू०—स्वभावनया श्रीरामं प्राप्य सर्व सुखप्रदम् ।
परानन्द मयोभूत्वाऽवस्थानं फल मुच्यते ॥ ४९ ॥

Original source - Scan 106 of 116

Chapter Six - Entry into Eternal Saketa

The five elemental coverings together with ego and the cosmic intellect make seven coverings of nature. Having crossed also the innumerable formations of its three qualities, the seeker bathes in the Viraja. (45, completed)

> *Sa-vāsanaṃ deha-dvayaṃ visṛjya virajo bhavet,*
> *Ativegena tāṃ tīrtvā prāpya Sāketakaṃ tathā.* (46)

Casting off the subtle and causal bodies together with all their latent impressions, the soul becomes stainless. Swiftly crossing the Viraja, it reaches Saketa.

The subtle body belongs to the dream state and is described through seventeen principles; the causal body belongs to deep sleep and bears the two powers of concealment and projection. When both are abandoned, the soul plunges into the Viraja, crosses with extraordinary speed, and is received with great honour by Bhagavan's eternal companions, who escort it to Saketa.

> *Praviśya rāja-mārgeṇa saptāvaraṇa-saṃyutam,*
> *Nānā-ratnamayaṃ divyaṃ Śrī-Rāma-bhavanaṃ śubham.* (47)

Proceeding along the royal road, the soul enters the auspicious and divine palace of Sri Rama, fashioned from many kinds of jewels and encircled by seven enclosures.

> *Tatra Śrī-Bharatādibhiḥ sevyamānaṃ sadā prabhum,*
> *Virājamānaṃ Vaidehyā ratna-siṃhāsane śubhe.* (48)

There, upon an auspicious jewelled throne, the soul beholds Vaidehi's beloved Lord, forever shining beside her and eternally served by Bharata and the other companions.

> *Sva-bhāvanayā Śrī-Rāmaṃ prāpya sarva-sukha-pradam,*
> *Parānandamayo bhūtvāvasthānaṃ phalam ucyate.* (49, continues)

Attaining Sri Rama, giver of every happiness, in accordance with one's own devotional contemplation, the soul becomes filled with supreme bliss and abides there. This is called the fruit of attainment.

अन्वयः—सर्वसुखप्रदं स्वाभावनया श्रीरामं प्राप्य परानन्दमयः भूत्वा अवस्थानम् फल मुच्यते ॥४९॥

अर्थः—जो सभी प्रकार के सुख देने वाले हैं, उन श्रीराम जी को अपनी भावना के अनुसार प्राप्त करके महाआनन्दमय होकर ठहरना, यह प्राप्ति का फल कहा जाता है ॥४९॥

मू०—अनात्मन्यात्म बुद्धिस्तुस्वात्म शेषत्वभावना ।
भगवत्दासवैमुख्यं तदाज्ञोल्लंघनं तथा ॥ ५० ॥

अर्थः —अब विरोधि स्वरूप बताते हैं, नाशवान शरीर में आत्मबुद्धि और उस शरीर से पैदा हुए पुत्रादिकों में शेषत्व बुद्धि (अर्थात् सम्बन्ध बुद्धि) भगवत् भक्तों को पराया जानना, तथा देखना, विपरीत आचरण करना, सन्तों की आज्ञा का उलंघन करना ॥ ५० ॥ और

पञ्च तत्त्वों का शरीर आत्मा नहीं है, क्योंकि पञ्चतत्त्व भोजन नहीं करता है, पञ्चतत्त्वों के द्वारा आत्मा को भूख, पियासा, सुख-दुख, होता है । इसलिए पञ्च तत्त्वों का शरीर आत्मा नहीं है । अपने कर्मों का फल देवताओं द्वारा दिया हुआ भोगने वाला ईश्वर अंश चैतन्य शक्ति है । परन्तु पञ्च तत्त्वों को सब जानते हैं, उस आत्मा को सब नहीं जानते हैं, भगवान् की कृपा मूर्ति श्री गुरु महाराज के द्वारा आत्मा अपने सहज स्वरूप को जान सकता है, उस अवस्था में शरीर को अपना स्वरूप न मानकर परमात्मा के लिए सुख-दुःख आदि का सहन करता है । जिस तरह से अविवेकि (संसारी भक्त) अपने शरीर की सेवा करते हैं, उसी प्रकार भगवत् शरणागत गुरु द्वारा प्राप्त विवेक युक्त विवेकि भगवान् की सेवा करता है ।

"सेवहिं लखन सीय रघुबीरहिं । जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं ॥"

तो रघुनाथ जी भी आँख के गोलक की जैसे पलक सेवा करती हैं ।

"जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसे । पलक विलोचन गोलक जैसे ॥
तुम पर अस सनेह रघुबर के । सुख जीवन जग जस जड़ नर के ॥"

मू०—ब्रह्मेशेन्द्रादि देवानामर्चनं वन्दनादिकम् ।
असच्छास्त्राभिलाषश्च सच्छास्त्रस्यावमाननम् ॥ ५१ ॥

Chapter Six - Obstacles to the Soul's True Nature

To attain Sri Rama according to one's own sacred contemplation and remain established in overwhelming supreme bliss is the fruit of attainment. (49, completed)

> *Anātmany ātma-buddhis tu svātma-śeṣatva-bhāvanā,*
> *Bhagavad-dāsa-vaimukhyaṃ tad-ājñollaṅghanaṃ tathā.* (50)

Obstacles begin with mistaking the non-self, the perishable body, for the self; treating bodily offspring and relations as those to whom one ultimately belongs; turning away from Bhagavan's servants; and transgressing their command.

The body made of five elements is not the self, for the elements themselves do not eat. Through the body, however, the conscious soul experiences hunger, thirst, pleasure, and pain. The conscious power that receives through the gods the fruits of its own action is a portion of the Lord. Everyone knows the five elements, but not everyone knows the soul.

Through the stream of sacred knowledge received from the guru-the embodied grace of Bhagavan-the soul can recognize its natural form. It then ceases to regard the body as its identity and endures bodily pleasure and pain for the sake of the Supreme Self. As the undiscerning worldly person serves the body, the discerning surrendered soul serves Bhagavan:

> Lakshmana served Sita and Raghubira just as an undiscerning person serves the body.

Raghunatha, in turn, protects Sita and Lakshmana as the eyelids serve the eyeball:

> The Lord guarded them as eyelids guard the pupils of the eyes. Such is Raghubara's love for you-as pleasure, life, honour, and home are dear to the worldly person.
>
> *Brahma-Śakrādi-devānām arcanaṃ vandanādikam,*
> *Asac-chāstrābhilāṣaś ca sac-chāstrasyāvamānanam.* (51, continues)

Other obstacles are materially motivated worship and salutation of Brahma, Indra, and other gods; desire for false teachings; and contempt for true scripture.

अर्थः—ब्रह्मा, शंकर, इन्द्र आदि देवताओं में भौतिक सकामताओं से पूजा वन्दनादि कर्त्तव्य तथा असच्छास्त्रों की पढ़ने की चाहना और सच्छास्त्रों का अपमान करना ॥ ५१ ॥

मू०—मर्त्यसामान्य भावेन गुर्वादौनाति गौरवम् ।
स्वातंत्र्यं चाप्यहंकारो ममकारस्तथैव च ॥ ५२ ॥

अन्वयः—मर्त्यसामान्य भावेन गुर्वादौ अतिगौरवं न तथा अहंकारः च ममकारः च स्वातन्त्र्यं ॥५२॥

अर्थः—जनमने-मरने वाला साधारण मनुष्य की तरह से गुरू जी आदि भगवत् शरणागतों में उपकार दृष्टि से भगवान् से बढ़कर अतिगौरव न होना और अहंकार तथा ममकार अपना करके अपने को स्वतन्त्र मान लेना ॥५२॥

मू०—द्वादशी विमुखत्वं च ह्यकृत्यकरणं तथा ।
ज्ञेयं विरोधिरूपं तु स्वस्वरूपस्य सर्वदा ॥ ५३ ॥

अन्वयः—तथा द्वादशी विमुखत्वं च ह्यकृत्यकरणं सर्वदा स्वस्वरूपः तु विरोधिरूपं ज्ञेयं ॥५३॥

अर्थः—द्वादशी के व्रत से विमुख होना और बुद्धि के निश्चय पूर्वक न करने योग्य कार्यों को करना, इसे हमेशा स्वस्वरूप (सहज स्वरूप) का विरोधि रूप को समझना चाहिए ॥५३॥

मू०—एवं तत्व परिज्ञानादाचार्यानुग्रहेणहि ।
तत्क्षणे जानकीनाथे प्रीतिर्नित्याभिजायते ॥ ५४ ॥

अन्वयः—एवं आचार्यानुग्रहेणहि तत्त्व परिज्ञानात् तत्क्षणे जानकीनाथ नित्या प्रीतिः अभिजायते ॥५४॥

अर्थः—इस प्रकार सद्गुरु के कृपा अनुग्रह से ही तत्त्व का सम्यक् प्रकार ज्ञान प्राप्त कर लेने से उसी क्षण में श्री जानकी नाथ जी में नित्य जो अनुराग है वह पैदा हो जाती है ॥५४॥

मू०—उपादिशेच्च सम्बन्धं परीक्ष्य विधिवज्जनम् ।
बैपरीतांचनो कार्यं कदाचिद्भाव ज्ञातृभिः ॥ ५५ ॥

अन्वयः—विधिवज्जनं परीक्षा च सम्बन्धं उपादिशेत् च भावज्ञातृभिः कदाचिद् वैपरीत्यं न कार्यं ॥५५॥

Chapter Six - Further Obstacles and the Birth of Eternal Love

The obstacles in verse 51 are worship of Brahma, Shankara, Indra, and other deities for material power; desire to study false scriptures; and disrespect toward true scriptures. (51, completed)

> *Martya-sāmānya-bhāvena gurv-ādau nāti-gauravam,*
> *Svātantryaṃ cāpy ahaṅkāro mamakāras tathaiva ca.* (52)

Further obstacles are regarding the guru and other surrendered devotees as ordinary mortals; failing to honour them with the highest reverence; considering oneself independent; and falling into egoism and possessiveness.

> *Dvādaśī-vimukhatvaṃ ca hy akṛtya-karaṇaṃ tathā,*
> *Jñeyaṃ virodhi-rūpaṃ tu sva-svarūpasya sarvadā.* (53)

Turning away from the observance of Dvadashi and deliberately performing actions that should not be done must always be recognized as opposed to one's true and spontaneous nature.

> *Evaṃ tattva-parijñānād ācāryānugraheṇa hi,*
> *Tat-kṣaṇe Jānakīnāthe prītir nityābhijāyate.* (54)

When, through the grace of the *ācārya*, one obtains complete knowledge of these truths, eternal love for Janaki's Lord arises at that very moment.

> *Upādiśec ca sambandhaṃ parīkṣya vidhi-vaj janam,*
> *Vaiparītyaṃ ca no kāryaṃ kadācid bhāva-jñātṛbhiḥ.* (55, continues)

The sacred relationship should be taught only after the aspirant has been examined properly and according to the prescribed method. Those who understand devotional feeling must never act contrary to this rule.

The running header on this source leaf says "Chapter Five," although the text and verse sequence unmistakably continue Chapter Six.

अर्थ:—इस प्रकार विधिपूर्वक आश्रित जनों को अच्छी तरह से परीक्षा करके तब सम्बन्ध का उपदेश करें, भाव का मर्मज्ञ विद्वान के साथ कभी भी इसके विपरीत कार्य न करें ॥५५॥

मू०-अस्याधिकरिणोलोके केपि केपि महामुने ।
अतः सर्व प्रयत्नेन गोपनीयं सदैवहि ॥ ५६ ॥

अन्वयः—हे महामुनेः लोके अस्य अधिकारिणः केपिकेपि (सन्ति) अतः सर्वं प्रयत्नेन स सदैवहि गोपनीयं ॥५६॥

अर्थ:—श्री हनुमान जी कहते हैं कि हे महामुनि श्री अगस्त जी इस संसार में इस रहस्य के अधिकारी कोई-कोई होते हैं। इसलिए सभी प्रकार के प्रयत्नों से नित्य ही इस बात को छिपाकर रखना चाहिए ॥५६॥

मू०-यइदं धारयेद्भावं संबंधाख्यमनुत्तमम् ।
धन्य धन्यतमो लोके स एवैको विनिर्मितः ॥ ५७ ॥

अन्वयः—यः इदं अनुत्तमं सम्बन्धाख्यं भावं धारयेत् स लोके एको एक धन्य धन्यतमो विनिर्मितः ॥५७॥

अर्थ:—जो भगवत्भक्त महाकृपात्र इस सर्वोत्तम सम्बन्ध नामक भाव को धारण करता या करेगा, वह लोक में एक ही धन्य-धन्यतम भगवान द्वारा निर्मित हुआ है ॥५७॥

मू०-श्रुत्वा हनुमतोवाक्यं परमानन्द दायकम् ।
प्रशस्य बहुधातं वै प्रणभ्य च पुनः पुनः ॥ ५८ ॥

अन्वयः—परमानन्द दायकं हनुमतो वाक्यं श्रुत्वा तं वै बहुधा प्रशस्य च पुनः पुनः प्रणभ्यं ॥५८॥

अर्थ:—अब श्री अगस्त जी महाराज श्री हनुमान जी की स्तुति करते हैं। परम आनन्द को देने वाले श्री हनुमान जी के बचन को सुनकर के श्री हनुमानजी को बहुत प्रकार से प्रसंशा किये, और बार-बार प्रणाम किये ॥५८॥

मू०-तदाज्ञामधिगम्याथ कृतार्थश्छिन्न संशयः ।
जगाम स्वाश्रमं विप्रो मुनिवर्य गणावृतम् ॥५९॥

Original source - Scan 109 of 116

Chapter Six - The Rare Recipient of the Secret Relationship

Only after properly testing those who have taken refuge should the teacher instruct them in the sacred relationship. The inner secret of devotional feeling must never be taught in a way contrary to discernment. (55, completed)

> *Asyādhikāriṇo loke ke 'pi ke 'pi mahāmune,*
> *Ataḥ sarva-prayatnena gopanīyaṃ sadaiva hi.* (56)

O great sage, only a very few people in this world are qualified for this mystery. It must therefore be guarded always and with every possible care.

> *Ya idaṃ dhārayed bhāvaṃ sambandhākhyam anuttamam,*
> *Dhanya-dhanyatamo loke sa evaiko vinirmitaḥ.* (57)

The great recipient of Bhagavan's grace who bears this unsurpassed devotional feeling called sacred relationship is uniquely blessed-most blessed in all the world-and has been specially fashioned by Bhagavan himself.

> *Śrutvā Hanumato vākyaṃ paramānanda-dāyakam,*
> *Praśasya bahudhā taṃ vai praṇamya ca punaḥ punaḥ.* (58)

Hearing Hanuman's words, which bestow supreme bliss, Agastya praised him in many ways and bowed to him again and again.

> *Tad-ājñām adhigamyātha kṛtārthaś chinna-saṃśayaḥ,*
> *Jagāma svāśramaṃ vipro muni-varya-gaṇāvṛtam.* (59, continues)

Then, receiving Hanuman's permission, the brahmarshi Agastya became fulfilled and free from doubt. Surrounded by a company of eminent sages, he departed for his own hermitage.

The running header on this source leaf again incorrectly says "Chapter Five"; the verse sequence remains Chapter Six.

अन्वयः—अथ विप्रः तदाछिन्न संशयः कृतार्थः आज्ञां अधिगम्य मुनीवर्यगणावृतं स्वाश्रमं जगाम ॥५६॥

अर्थः—इसके बाद वे ब्राह्मण देवता श्री अगस्त जी निःसंशय होकर कृतार्थ हो गये, तथा श्री हनुमान जी की आज्ञा पाकर मुनि श्रेष्ठ अगस्त जी मुनियों के समाज से घिरे हुये अपने निजी आश्रम को चले गये ॥५६॥

इति श्री हनुमत्संहितायां परम रहस्ये हनुमदगस्त्य सम्वादे
सर्वं सारांशसारे श्रीसीताराम सम्बन्धोनाम षष्टोध्यायः
श्रीमज्जनकनन्दिनी रघुनन्दनार्पणमस्तु ॥६॥

श्रीं सीताराम रहस्य समुद्रपोतायमान् श्री रसराजाम्वुज दिन मणि आचार्य प्रवर अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य वंशावतंस श्री स्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर) तच्चरणारविन्द मकरन्द रस-लम्पट श्रीजानकी शरण जी महाराज (मधुकर) द्वारा श्री-'हनुमत्संहिता' श्री सीताराम रहस्य प्रकाशिका टीका
षष्टमोऽध्याय सम्पूर्णः ॥ ६ ॥

ऋग्वेद १०-६४-७

प्रवो वायु रथ युजं पुरंधि स्तोमैः,
कृणुध्वं सख्याय पूषणम् ।
ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि,
क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः ॥

रहस्य मार्तण्ड भाष्यम्—अथ रामः स्ववक्तव्यमाह-प्रेति । वो युष्माकं बानराणां पुरंधिपुरोअग्रेधीयते इति तमग्रेसरं सर्वममपार्षद समूहमध्ये प्रधानम्। रथयुजं शरीरधारिणं वायु वायुदेवं वानररूपं वायुदेवांशम् ममप्राण प्रियकरं हनुमन्तं इत्यर्थः। (अथवा मम प्राण प्रिया सीता तस्याः प्रधान अंशभूता प्रधान-सुखी श्रीचारुशीला सा एव अयं बानररूपः तं) सख्याय मैत्री प्रयुक्त कार्याय।

Original source - Scan 110 of 116

Chapter Six - Conclusion and the Beginning of a Vedic Note

Having become free of doubt and wholly fulfilled, Agastya received Hanuman's command and returned to his hermitage surrounded by the assembly of sages. (59, completed)

Thus ends the Sixth Chapter, "The Relationship with Sita and Rama," the essence of every essence, in the supremely secret *Śrī Hanumat Saṃhitā*, in the dialogue between Hanuman and Agastya.

May it be offered to glorious Janakanandini and Raghunandana.

Thus Sri Janakisharan Ji Maharaj (Madhukar), devoted to drinking the nectar of the lotus feet of Sri Swami Siyasharan Ji Maharaj (Madhukar), ornament of the lineage of the infinitely glorious Swami Sri Agradevacharya, completes the Sixth Chapter of the *Śrī Hanumat Saṃhitā* with the *Śrī Sītārāma-rahasya-prakāśikā* commentary.

A Vedic Note on Hanuman - *Ṛgveda* 10.64.7

> *Pra vo vāyuṃ ratha-yujaṃ purandhiṃ stomebhiḥ,*
> *Kṛṇudhvaṃ sakhyāya pūṣaṇam;*
> *Te hi devasya Savituḥ savīmani,*
> *Kratuṃ sacante sacitaḥ sacetasaḥ.*

Bring forward Vayu, yoked to the chariot and rich in wisdom; honour the nourisher with hymns for the sake of friendship. In the divine impulsion of Savitar, the conscious companions unite themselves with sacred resolve.

The *Rahasya-mārtaṇḍa* commentary begins: Rama now explains his intended meaning. Among the monkeys, the foremost is Hanuman-the chariot-bearing embodiment and portion of Vayu, dear to Rama as his own life and brought forward for the work of sacred friendship. In another esoteric reading, he is Charushila herself, the principal intimate portion of Sita, appearing here in a monkey form for this divine purpose. The explanation continues on the following leaf.

सुग्रीवेण मैत्री स्वीकृत्य यत्सीतान्वेषणादिकं कार्यमङ्गीकृतं तदर्थं मित्यर्थः। प्रस्तोमैः प्रकृष्टैः स्तवै बल गुण रूपादि वर्णन रूपैः पूषणं पुष्टिकार्यं साधनोत्साहं कृणुध्वं सम्पादयत्। मदीय कार्यार्थं। इमं स्तुतिभि रूत्साहयतेत्यर्थः। तत्समर्थनायाह–हि यस्मात् ते प्रस्तावा देवस्य परमेश्वरस्य सवितुः सर्व जगत् कारणस्य सवीमनि सन्तान भूतेऽस्मिल्लोके सचेतसः सहृदयस्य महामनसः सचेतनस्य पुरुषस्य क्रतुं क्रियां संकल्पं च सचन्ते पुरुषार्थसिद्धि प्रति गमयन्ति। स्तुतिर्भिहि महतां शक्तिस्तथा जागर्ति यथा ते पुरुषार्थमवश्यं साधयन्तीत्यर्थः। अतएव मत्कार्य सिद्धयथमयं महामना हनुमान वश्यं स्तोतव्य इतिभावः।

-: दीपिका टीका :-

उक्त रीति से वानरों को सम्बोधित कर श्रीरामजी कहते हैं कि आप लोगों के अग्रेसर मेरे भक्तजनों में प्रधान भूत ये श्रीहनुमान्जी वायु देवांश मेरे प्राणप्रिय कार्यकर्ता हैं। सुग्रीव द्वारा स्वीकृत मेरे सीतान्वेषणादि कार्य केलिये आप लोग उत्कृष्ट स्तुतियों से उत्साहित करें। क्योंकि स्तुति वाक्य सर्व जगत् कारण परमात्मा के सन्तान रूप इस लोक में महामना पुरुषों को पुरुषार्थ सिद्धि में प्रेरक होते हैं। पुरुषार्थ की सिद्धि तक पहुँचने की प्रेरणा देते हैं। इस मन्त्र से श्रीरामजी द्वारा श्रीहनुमान्जी को सर्व पार्षद शिरोमणि पद प्रदाता दिखाया है। यह वेद द्वारा श्री हनुमान जी का सर्व पार्षद शिरोमणित्व प्रत्यक्ष है।

ऐसे ही श्री नीलकण्ठ जो लिखते हैं—

भो देवाः वः युष्माकं मध्ये वायुं वायुपुत्रं रथयुजं देहधरं पुरः धीयत इति पुरःसरं स्तोमैः स्तुत्या कृणुध्वं सख्याय सखि बत कर्याय पूषणं पोषणं मत्कार्याथं इमं स्तुवध्वमित्यर्थः॥ हि यतः ते स्तोमा सः सक्तुं देवस्य सवीमनि प्रसवे लोके क्रतुं संकल्पं सचन्ते संपादयन्ति। सचितः चेतनस्य पुंसः सचेतसः सहृदयस्य स्तुत्यः सहृदयं कार्ये प्रवर्तयन्तीत्यर्थः॥

इस ब्याख्या में भी श्री हनुभान जी का पार्षद प्रमुखत्व ही अर्थ श्रीनीलकण्ठजी ने व्याख्या की है स्वयं श्रीरामजी ने अपने पार्षदों द्वारा श्रीहनुमान्जी की प्रमुखता दिलाया है, अतः अन्य सर्वेश्वरी नहीं हो सकती हैं।

Supplement - The Vedic Praise of Hanuman

The *Rahasya-mārtaṇḍa* explains the Vedic mantra in this way. Addressing the monkeys, Rama says: “Accept Sugriva’s command and, for the work of finding Sita and the other tasks before us, encourage Hanuman-foremost among my devotees, a portion of Vayu and my life-beloved servant-with the finest praises describing his strength, virtues, form, and other excellences.”

Such praise awakens the power of great souls. In this world, which is born from the Supreme Lord Savitar, words of praise inspire conscious, noble-minded persons toward sacred resolve and carry their action to the fulfilment of its purpose. Therefore mighty Hanuman must be praised so that Rama’s work may certainly be accomplished.

Dīpikā commentary

Rama tells the monkeys: “This Hanuman, foremost among you and foremost among my devotees, is a portion of Vayu and a worker dear to me as my own life. Encourage him with excellent praises for the tasks of finding Sita and the other works entrusted through Sugriva. Words of praise inspire great-hearted persons, born as children of the Supreme Self who is cause of the entire universe, toward the fulfilment of sacred purpose.”

The mantra thus shows Rama himself bestowing upon Hanuman the position of crown-jewel among all his eternal companions. The Veda directly establishes Hanuman’s supremacy among them.

Nilakantha offers the same interpretation: “O gods, bring forward from among you Vayu’s son, embodied and yoked to the chariot. Praise and nourish him as a friend for the accomplishment of my work. Hymns offered in the divine impulse awaken resolve; praise moves the conscious and noble-hearted person to action.”

Nilakantha’s explanation likewise establishes Hanuman as chief among Rama’s companions. Rama himself gives Hanuman this primacy through the assembled attendants; another Sarveshvari cannot take his place.

✻ श्री हनुमते नमः ✻

卐 श्री हनुमान--चालीसा 卐

दोहा— जय जय जय सियराम रसिक, महावीर हनुमान।
अंजनि नन्दन पवनसुत, दया करुणा कि खान ॥ १ ॥

जय जय जय हनुमान कृपाला । सिय पिय कृपादृष्टि प्रतिपाला ॥
कृपादृष्टि मूरति तनु धारी । प्रणत जनन्ह के भव भय हारी ॥
ऐश्वर्य देश मह परम विरागी । युगल माधुर्य महा अनुरागी ॥
विनु तव कृपा न अवध प्रवेशा । यत्न कोटि कोउ करे हमेसा ॥
सनकादि ब्रह्मादि मुनीसा । ब्रह्म तत्त्व मग्न अहरनीसा ॥
सो सब गुरु हनुमन्तहिं मानी । सिय राम तत्त्वहिं कुछ जानी ॥
लहि तव कृपा स्वरूप सम्हारा । सिय पिय सेवा चित्तहि धारा ॥
छन छन लखि सियपिय हियझाकी । जग से सदा रहे मन माखी ॥
जीवन मुक्त अव्याहतगति पाई । तीन लोक सिय पिय गुन गाई ॥
ऐसे हनुमत को चित्त ध्यावै । सो नर जीवन मुक्त हो जावै ॥
जेहि जन पर हो कृपा तुम्हारी । कृपा डोरि में सो बन्धारी ॥
जेहि छण राम सम्बन्ध दृढाई । अनेक जन्म कै बिगरी बनाई ॥
शरीराभिमान लंकहि जराई । सिय अंशहि स्वरूप जनाई ॥
तेहि को वैभव से भय लागे । तव सिय चरण प्रेमहिं जागे ॥
जागत सोवत सिय गुन गावै । मन, बुद्धि, चित्त रामहि चढ़ावै ॥
दोउके कृपा समुझि मनमाहीं । युगल चरण पद सदा सोहाहीं ॥
परम लक्ष्य मानव जीवन को । सहजहि भक्ति होय सिय पिय को॥
मोहि अधम अलायक जानी । करहु कृपा सेवक जन जानी ॥
सिय पिय केलि हृदय विहारा । मन नयनन्ह ते निरखौ उदारा ॥
तीन रूप सेवा हितु धारी । चारुशीला प्रसाद सुखकारी ॥
चन्द्रकान्ति अरु शत्रुजित नन्दिनी । उभय पक्ष सदा अनिन्दिनी ॥
सकल वैभवादि परे सियरामा । शुद्ध सच्चिदानन्द सुख धामा ॥

Original source - Scan 112 of 116

Supplement - *Śrī Hanumān Cālīsā*

Homage to Hanuman.

Opening couplet

Victory, victory, victory to mighty Hanuman, rasika of Sita and Rama-son of Anjani and the Wind, treasury of mercy and compassion.

Forty verses

Victory to gracious Hanuman, sustained by the compassionate glance of Sita's Beloved.
Embodied form of that gracious glance, remove the fear of becoming from those who bow to you.

Supremely detached amid the realm of sovereignty, you are deeply enamoured of the sweetness of the Divine Couple.
Without your grace no one enters Avadh, even after making millions of efforts.

Sanaka, Brahma, and the sovereign sages remain immersed day and night in the truth of Brahman.
Taking Hanuman as their guru, they came to know something of the mystery of Sita and Rama.

Receiving your grace, they recovered their true form and fixed the heart upon service to Sita and her Beloved.
Moment after moment they looked into the hearts of the Divine Couple, and the mind ceased wandering in the world.

Liberated while living, they attained unobstructed movement and sang the Couple's virtues throughout the three worlds.
Whoever meditates upon such a Hanuman becomes liberated even in this life.

The person upon whom your grace descends is bound within the cord of grace.
The moment you make one's relationship with Rama firm, the ruin accumulated over many births is repaired.

You burn the Lanka of bodily pride and reveal the soul's true nature as a portion belonging to Sita.
Worldly splendour then inspires fear, while love for Sita's feet awakens.

Waking and sleeping, such a soul sings Sita's virtues and offers mind, intellect, and consciousness to Rama.
Recognizing the grace of both within the heart, one delights forever in the paired lotus feet.

The supreme goal of human life is the spontaneous arising of devotion to Sita and her Beloved.
Knowing me fallen and unworthy, show compassion and accept me as your servant.

Sita and her Beloved sport within the heart; may the generous soul behold them with the inward eyes of the mind.
Assuming three forms for their service, Charushila bestows joy through her grace.

The changes of birth and death are cut away, and both sides remain beyond all blame.
Beyond every worldly splendour stands Sita-Rama, the pure abode of being, consciousness, bliss, and happiness.

सच्चिदानन्द लीला अनुरागी । सकल वैभव से परम विरागी ।।
आत्मस्वरूप सिय चरणहि लागी । अंश अंशहि जीव रूप सो मानी।।
राम कार्य वानर तन धारी । दास भाव परम सुखकारी ।।
सिय पिय रूप हृदय में धारी । सकल कार्य सदैव सम्हारी ।।
अमित बुद्धि वल तेज अपारे । केशरी अंजनि नयन सितारे ।।
लाँघि समुद्र लंकहि जराई । जनक सुता के सुधि लाई ।।
बल पौरूष के नही अभिमाना । राम कृपा के है अभिमाना ।।
यह अभिमान भूल न जावै । ताते सिय पिय नित्यहि ध्यावै ।।
निगमागम प्राण सम राखे । नित्य सगुन सिय रामहि भाखे ।।
चार अवस्था तीन कालहि भाई । हनुमत कृपा विनु जान न पाई।।
हनुमत कृपा पूरण हो जाई । सिय पिय केलि हृदय अनुभाई ।।
जन्म कर्म सब दिब्यहि पाई । दिब्य स्वरूप लखहि सुखदाई ।।
ताके दर्शन जो जन करहीं । जीवन मुक्त सदा सुख लहहीं ।।
ऐसे परम उदार हनुमाना । सकल मान रहित सुख धामा ।।
परम दयालु कृपाल हनुमन्ता । कारण केहि बिसारो सुखवन्ता ।।
शरण शरण अव शरण पुकारों । गुन अवगुन सब देहु विसारों ।।
" बासुदेव " करें कर जोरी । हनुमत सुनहु यह बिनती मोरी ।।
भौतिक वासना विष सम लागे । होय कृपा सिय षद अनुरागे ।।
बमन सम त्यागौं संसारा । सिय पिय रूप सदा हिय धारा ।।
केवल कृपा अवलम्ब तुम्हारा । साधन जप तप योग बिसारा ।।

दोहा— हृदयाकाश भक्ति भू, सिय पिय केलि विहार ।
आदि गुरु हनुमत कृपा, सरस सुखद हिय हार ।। १ ।।

हनुमत कृपा हिय धारिके, चालीसा करे पाठ ।
ताके हृदय में सुझे, सेवा ललित सुठाम ।। २ ।।

"बासुदेव" के चाह यहि, और चाह जरि जाय ।
गुरु कृपा सिया रामचरण, दृढ़ निष्ठा हो जाय ।। ३ ।।

Original source - Scan 113 of 116

Supplement - *Śrī Hanumān Cālīsā*, Continued

> Loving the play of being, consciousness, and bliss, you are supremely detached from every worldly splendour.
> Your essential self clings to Sita's feet and regards every living soul as a portion of her portion.
>
> You assumed a monkey body for Rama's work, finding supreme joy in the servant's disposition.
> Holding the forms of Sita and her Beloved within your heart, you accomplish every undertaking.
>
> Your intelligence, strength, and radiance are immeasurable; you are the star of Kesari and Anjani's eyes.
> You crossed the ocean, burned Lanka, and brought back news of Janaka's daughter.
>
> You take no pride in strength or heroism; your only pride is Rama's grace.
> Lest even that sacred pride be forgotten, you meditate eternally upon Sita and her Beloved.
>
> You honour the Vedas and Agamas as dearly as your own breath and always proclaim Sita-Rama in manifest divine form.
> The four states and the three divisions of time cannot be understood without Hanuman's grace.
>
> When Hanuman's grace becomes complete, the heart directly experiences the loving play of Sita and her Beloved.
> Birth and action are then known as divine, and the soul beholds its bliss-giving divine form.
>
> Whoever beholds such a soul is liberated while living and forever receives happiness.
> Such is supremely generous Hanuman, abode of happiness and free from every demand for honour.
>
> Supremely merciful and gracious Hanuman, for what reason have you forgotten me, O joyful one?
> Refuge, refuge-I now cry only for refuge. Forget every virtue and fault of mine.
>
> Vasudeva joins his hands and says: Hanuman, hear this prayer of mine.
> Let material desire taste like poison; by your grace may love for Sita's feet arise.
>
> Let me cast away the world as one rejects vomit, holding always within my heart the form of Sita and her Beloved.
> Your grace alone is my support; I have left aside every confidence in ritual means, repetition, austerity, and yoga.

Closing couplets

1. In the sky of the heart, upon the ground of devotion, Sita and her Beloved perform their loving play. The grace of the primal guru Hanuman is a beautiful, joy-giving garland for the heart.

2. Whoever holds Hanuman's grace in the heart and recites this *Cālīsā* finds the lovely and excellent form of service sleeping peacefully within the heart.

3. Vasudeva desires this alone; let every other desire burn away. By the grace of the guru, may unwavering devotion to the feet of Sita and Rama become firm.

॥ श्री सद्गुरवे नमः ॥

श्री सद्गुरू चालीसा

दो०-तत् पद वाच्य रामसिय, प्रेरणा ओमहि जान ।
सत् पद वाच्य आत्मा, गुरु निष्ठा से मान ॥ १ ॥
कृपा दृष्टि सियराम के, गुरु बनि आयो लोक ।
ताके चरण शरण बिनु, आत्मा न हो विशोक ॥ २ ॥

चौपाई—

बन्दौं गुरु पद कमल सुखदाई । जे ही ब्रह्मा विष्णु भी ध्याई ॥
गुरु पद महिमा अकथ अतीवा । कहि न सकइ सारद अरु शीवा ॥
ते सज्जन अतिहि बड़ भागी । जाके मन गुरु पद अनुरागी ॥
अतिहि अँधियार हिय आकाशा । गुरु बाणी सूर्यहि प्रकाशा ॥
प्राकृत सूर्य दोष से युक्ता । दिब्य सकल दोषों से रहिता ॥
कदापि जाके हिय बस जाई । गुप्त प्रगट सब देखहि भाई ॥
गुरु पद सेवक देखहिं कैसे । निज सम्पत्ति संसारि जैसे ॥
आत्मा धन धनी भगवाना । गुरु कृपा ते सहजहि जाना ॥
संधिनि होय सम्बन्ध कराई । होय संदीपनि प्रकाश जनाई ॥
गुरु शरण बिनु नाम जो जपहि । सो भी महिमा वेद न कथहि ॥
सहज भाव गुरु शरणहि जाई । प्रेम सनेह के बीजहि पाई ॥
निःस्रोत सनेह हृदयमय होई । सियराम रीझहिं सुख होई ॥
ताके भेद वेद नहि जानहिं । जैसे क्षेत्र क्षेत्रज्ञ न जानहि ॥
जय गुरुदेव दयाल कृपाला । सत्य संध दीनन्ह प्रतिपाला ॥
होय दीन शरणहि जो आवे । सियराम पद प्रेम बढ़ावे ॥
सियराम के कृपा स्वरूपा । मानव देह धरे अनूपा ॥
नाद सृष्टि के परम प्रकाशी । बिन्दू सृष्टि से सदा उदासी ॥
सियराम पद सरस अनुरागी । जागत सोवत सीयगुन भाखी ॥
शरीर आशक्ति लंकहि बताई । षड्बिकार राक्षस समुदाई ॥
युगल मन्त्र संजीवन मूरी । करि सुकृपा हृदय भरि पूरी ॥

Supplement - *Śrī Sadguru Cālīsā*

Homage to the true Guru.

Opening couplets

1. Know Rama and Sita as the meaning of *tat*, and their inspiration within *Om*. Through devotion to the guru, know the individual soul as the meaning of *sat*.

2. The gracious glance of Sita and Rama entered the world in the form of the guru. Without refuge at the guru's feet, the soul does not become free from grief.

Forty verses

I bow to the bliss-giving lotus feet of the guru, upon which even Brahma and Vishnu meditate.
The glory of the guru's feet is immeasurable; neither Sarasvati nor Shiva can fully describe it.

Those noble persons are exceedingly fortunate whose minds love the guru's feet.
The sky of the heart lies in deepest darkness; the guru's word illumines it like the sun.

The material sun is touched by defects, but this divine sun is free from every defect.
When it enters the heart even once, one sees what is hidden and what is manifest.

How does the servant of the guru's feet regard the world? As one regards one's own passing possessions.
The soul is the treasure and Bhagavan its owner; through the guru's grace this is known spontaneously.

The *saṃdhinī* power establishes relationship, and *sandīpinī* reveals its illumination.
One who repeats the name without taking refuge in the guru does not obtain the glory proclaimed by the Veda.

Entering the guru's refuge with natural simplicity, one sows the seed of love and affection.
Unalloyed love fills the heart, and Sita-Rama become pleased, bestowing happiness.

Even the Vedas do not know the distinction within that love, just as the field does not know the knower of the field.
Victory to the gracious, compassionate Gurudeva, true to his promise and protector of the humble.

When a humble soul comes for refuge, you increase its love for the feet of Sita and Rama.
You are the form of Sita-Rama's grace, uniquely assuming a human body.

Supreme illuminator of the creation born from sacred sound, you remain ever detached from the creation born of the bindu.
Without devotion to Sita and Rama there is no true crossing and no end to coming and going.

अथ पञ्चक के दिव्य स्वरूपा । बिनु तव कृपा न पाव अनूपा ।।
सियराम भक्ति सुदृढ़हि होई । ताते आवा गमन न होई ।।
पाय कृपा स्वरूप सम्भारी । भाव भावना होय उजारी ।।
जन्म कर्म सब दिव्यहि जानी । सकल भाव सेवहिं सुख मानी ।।
भाव प्रदेश हृदय के माहीं । अष्टयाम सेवा सुख पाहीं ।।
जय गुरुदेव सरस सुखवन्ता । सिय पिय केलि सदा मनवन्ता ।।
स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरा । मायामय दुःख के जन्जीरा ।।
तव कृपा ते सहज नशाई । विरुज शरीर पावे सुखदाई ।।
सहज स्वरूप तुरीयहिं जानी । अहरनिशी सेवे सुखमानी ।।
दम्पति मधुर मनोहर जोरी । लखी रति-पति सब भये विभोरी
ऐसहि छबि बसे मन माही । 'रूपशीला' सुख और न चाही ।।
कारण रहित गुरुदेव कृपाला । सियराम रूप के परम रसाला ।।
हर्षि हर्षि सियवर गुन गावत । अनन्यता के भाव दरसावत ।।
सिय पिय नाम रटत रटावत । श्रावण भादों मेघ बरसावत ।।
सिय गुन गावत अति सुखमानहिं । भौतिक सुख तृण सम जानहिं ।।
धाम निष्ट परम सुखकारी । करत करावत अति दुख हारी ।।
मोहिं केवल गुरु की आसा । और सभी से रहो निरासा ।।
अनाथ जानि कृपा सुकीजै । नाम रूप लीला मन भीजै ।।
षट् विकार अतिसय बलवाना । ताते चित्त सुथिर न जाना ।।
"वासुदेव" कहत कर जोरी । विनती सुनिय गुरुदेव मोरी ।।

दो०- सौन्दर्य गुण सियराम के, सौन्दर्य शीला जू नाम ।
ताके कृपा प्रसाद लहि, जीव लहत विश्राम ।। १ ।।

ऐसी कृपा सुकीजिये, सीयराम रहस्य प्रवीन ।
युगल रस समुद्र में, मन मिन रहे लयलीन ।। २ ।।

युगल मन्त्र गुरु से लिये, किये नहीं सत्संग ।
राम रूप चीन्हें नहीं, कैसे लागे रंग ।। ३ ।।

Original source - Scan 115 of 116

Supplement - *Śrī Sadguru Cālīsā*, Continued

> Receiving grace, the soul remembers its essential form and sacred contemplation shines forth.
> Birth and action are known as divine, and every devotional feeling becomes a joy of service.
>
> Within the realm of feeling in the heart, one finds the happiness of eightfold daily service.
> Victory to the joy-filled Gurudeva, whose mind forever dwells upon the play of Sita and her Beloved.
>
> The gross, subtle, and causal bodies are chains of suffering fashioned from maya.
> Through your grace they dissolve naturally, and the soul attains a stainless, bliss-giving body.
>
> Knowing the natural spiritual form as the fourth state, the soul serves day and night in happiness.
> Beholding the sweet and enchanting Divine Couple, even Rati and her lord become overwhelmed.
>
> May such beauty dwell within my mind; Rupashila desires no happiness apart from it.
> Causelessly gracious Gurudeva, supreme relisher of the form of Sita and Rama!
>
> Rejoicing, you sing the virtues of Sita's Lord and reveal the disposition of exclusive devotion.
> You repeat and cause others to repeat the names of Sita and her Beloved, pouring rain like the clouds of Shravana and Bhadrapada.
>
> Singing Sita's qualities, you experience extraordinary happiness and regard material pleasure as straw.
> Firm devotion to the divine abode bestows supreme happiness and removes crushing sorrow.
>
> My hope rests only in the guru; from every other support I remain without expectation.
> Knowing me orphaned, please be gracious and soak my mind in the loving play of divine name and form.
>
> The six transformations are exceedingly powerful, and because of them my mind cannot become steady.
> Vasudeva joins his hands and says: Gurudeva, hear this prayer of mine.

Closing couplets

1. The beauty and virtues of Sita and Rama are the very name of the one whose nature is beauty. Receiving the grace of that one, the soul finds rest.

2. Grant such grace, O knower of the mystery of Sita and Rama, that the fish of my mind remain absorbed in the ocean of the Divine Couple's *rasa*.

3. I received the mantra of the Divine Couple from the guru but did not keep the company of saints; how, then, could I recognize Rama's form or become coloured in his love?

सदाशिव संहितायां

श्रीराम मन्त्रस्यांशानि मन्त्राण्यन्यानि विद्धिच ।
हनुमता चार्येणाहो रामधाम सतां पदम् ॥१॥
श्रीजानक्याः पति सर्वे भजध्वं मङ्गलायनम् ।
राम मन्त्रेणायुधाभ्यां युक्ताः शुशुभिरे भुवि ॥२॥
सुर गुर्वादि गुरवो राम मन्त्रस्य सेवकाः ।
श्रीगुरो र्मारुतेः शिष्यो सुग्रीवश्च कपीश्वरः ॥३॥
श्रीरामस्या युधौ तप्तौ राम मन्त्रं व्यधारयत् ।
पञ्चाष्टादश संख्याता स्व सेन्याश्च हनुमतः ॥४॥
दीक्षिता स्तेन मन्त्रेण धनुर्वाणेन चांकिताः ।
हनुमच्छिष्यतां प्राप्तो महाराजो विभीषणः ॥५॥
रामायुधाभ्यां तप्ताभ्यां मंकितश्च स मुद्रया ।
तथा तस्य प्रजाः सर्वा चिन्हिता राम लाञ्छनैः ॥६॥
राजमार्ग मिमं विद्धि रामोक्तं जानकी कृतम् ।
यदृते चान्य मार्गास्तु चौराणां वीथिका यथा ॥७॥
आद्याचार्य हनुमन्तं त्यक्त्वा ह्यन्य मुपासते ।
क्लिश्यन्ति चैव ते मुग्धः मूलहा पल्लवाश्रिताः ॥८॥
श्री मैथिल्याश्च मन्त्रं हि श्री गुरु मारुतं महत् ।
सखो भावं दम्पतीष्ठं भुक्ति मुक्ति प्रदं सदा ॥९॥
श्रीजानकी सम्प्रदायं राम रास मनन्यताम् ।
ऋते केपि न यास्यन्ति वाञ्छित फल मेव च ॥१०॥
श्रीरामस्या युधौ तप्तौ जानकी मुद्रिकां विना ।
पारमेष्ठ्यं न प्राप्नोति ज्ञानादि साधनैरपि ॥११॥

मुद्रकः—सन्त तुलसीदास प्रिंटिंग प्रेस, अयोध्या ।

Supplement - Eleven Verses from the *Sadāśiva Saṃhitā*

> *Śrī-Rāma-mantrasyāṃśāni mantrāṇy anyāni viddhi ca,*
> *Hanumantam ācāryam āho Rāma-dhāma satāṃ padam.* (1)

Know all other mantras as portions of Sri Rama's mantra. Hanuman is proclaimed the primal teacher, and Rama's abode is the destination of the saints.

> *Śrī-Jānakyāḥ patiṃ sarve bhajadhvaṃ maṅgalāyanam,*
> *Rāma-mantreṇāyudhābhyāṃ yuktāḥ śuśubhire bhuvi.* (2)

All should worship the husband of Sri Janaki, the dwelling place of every auspiciousness. Those joined to Rama's mantra and marked with his two weapons shine upon the earth.

> *Sura-gurv-ādi-guravo Rāma-mantrasya sevakāḥ,*
> *Śrī-guror Māruteḥ śiṣyaḥ Sugrīvaś ca Kapīśvaraḥ.* (3)

The divine preceptors beginning with the guru of the gods are servants of Rama's mantra. Sugriva, lord of the monkeys, became a disciple of the revered guru Maruti.

> *Śrī-Rāmasyāyudhau taptau Rāma-mantraṃ vyadhārayat,*
> *Pañcāṣṭādaśa-saṃkhyātaṃ sva-sainyāc ca Hanumataḥ.* (4)

Bearing Rama's mantra and the heated impressions of Sri Rama's two weapons, Hanuman also established that sacred discipline throughout his own army.

> *Dīkṣitās tena mantreṇa dhanur-bāṇena cāṅkitāḥ,*
> *Hanumac-chiṣyatāṃ prāpto Mahārājo Vibhīṣaṇaḥ.* (5)

Initiated with that mantra and marked with bow and arrow, the great king Vibhishana entered discipleship under Hanuman.

> *Rāmāyudhābhyāṃ taptābhyām aṅkitaś ca sa mudrayā,*
> *Tathā tasya prajāḥ sarvā cihnitā Rāma-lāñchanaiḥ.* (6)

He was marked with the heated impressions of Rama's two weapons and with the sacred seal; all his subjects were likewise marked with Rama's emblems.

> *Rāja-mārgam imaṃ viddhi Rāmoktaṃ Jānakī-kṛtam,*
> *Yad ṛte cānya-mārgās tu corāṇāṃ vīthikā yathā.* (7)

Know this as the royal road, spoken by Rama and established by Janaki. Apart from it, other paths resemble the hidden lanes used by thieves.

> *Ādyācāryaṃ Hanumantaṃ tyaktvā hy anyam upāsate,*
> *Kliśyanti caiva te mugdhā mūla-hāḥ pallavāśritāḥ.* (8)

Those who abandon Hanuman, the primal teacher, and worship another suffer in delusion: they have discarded the root and taken shelter only in the leaves.

> *Śrī-Maithilyāś ca mantraṃ hi Śrī-guruṃ Mārutaṃ mahat,*
> *Sakhī-bhāvaṃ dampatīṣṭaṃ bhukti-mukti-pradaṃ sadā.* (9)

The mantra of Sri Maithili, the great guru Maruti, the companion's loving disposition, and the Divine Couple as one's chosen deity forever bestow both sacred enjoyment and liberation.

> *Śrī-Jānakī-sampradāyaṃ Rāma-rāsam ananyatām,*
> *Ṛte ke 'pi na yāsyanti vāñchitaṃ phalam eva ca.* (10)

Without the lineage of Sri Janaki, the *rāsa* of Rama, and exclusive devotion, no one reaches the truly desired fruit.

> *Śrī-Rāmasyāyudhau taptau Jānakī-mudrikāṃ vinā,*
> *Pārameṣṭhyaṃ na prāpnoti jñānādi-sādhanair api.* (11)

Without the heated marks of Sri Rama's two weapons and Janaki's signet, the supreme state is not attained even through disciplines beginning with knowledge.

Printed by Sant Tulsidas Printing Press, Ayodhya.